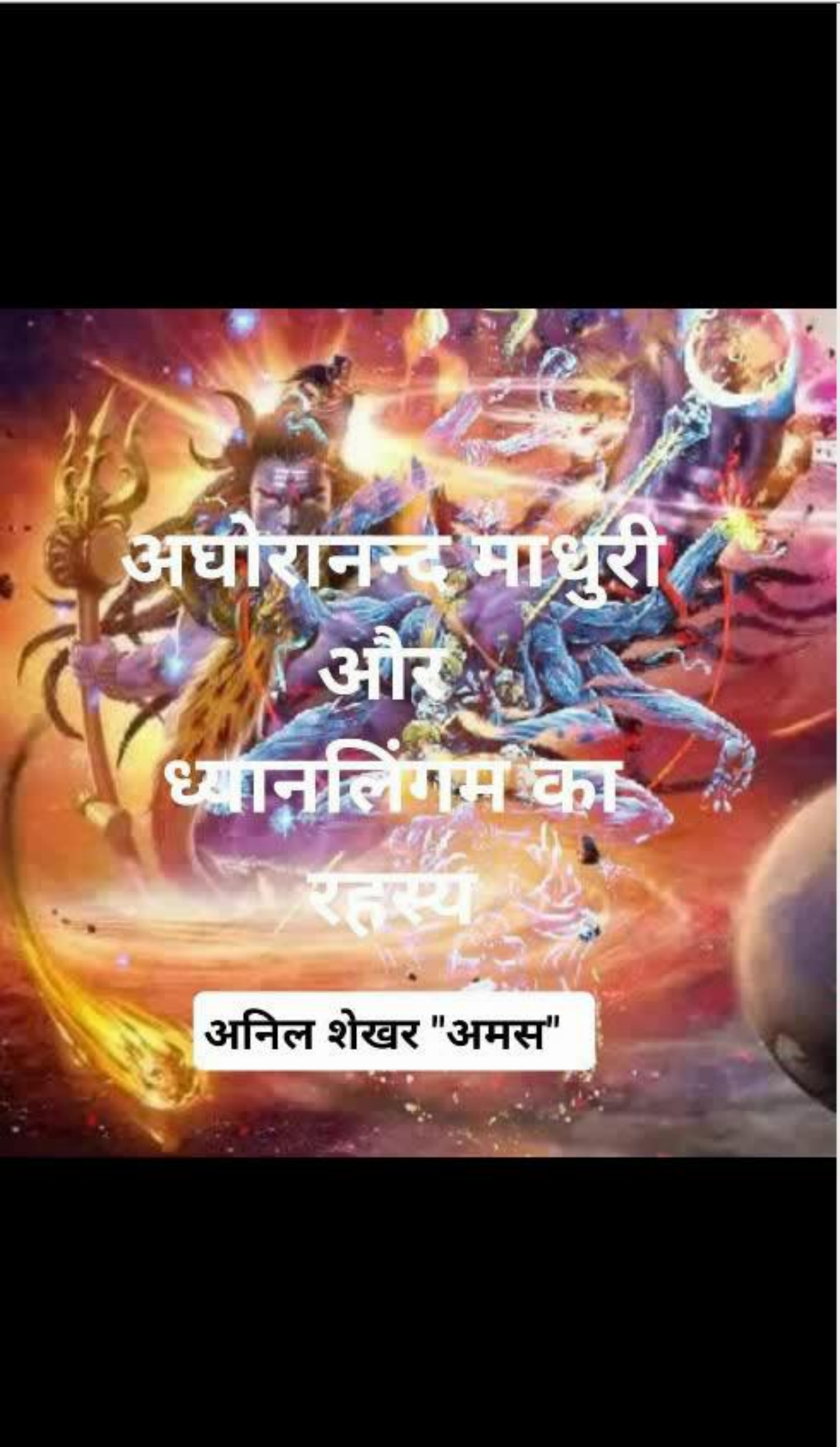




अघोरानन्द माधुरी और ध्यानलिंगम का रहस्य

अनिल शेखर "अमस"

पूर्वपीठिका

श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा
आकर्षित करता रहा है,उसी संसार की एक काल्पनिक
यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ
यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी

इस कथा का नायक मैं यानि अघोरा नंद 26 वर्षीय
एक गृहस्थ युवा था । जो शासकीय सेवा में था और
छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग में रहता था । मेरी पत्नी का
युवावस्था में ही देहांत हो गया । उसके देहांत के बाद
मैं बेहद अकेला पड़ गया । कुछ समय बाद मेरे जीवन

में अजीब अजीब सी घटनाएं घटी । मेरे गुरु ने मुझे
अघोर दीक्षा प्रदान की और मुझे अघोरांनंद नाम दिया ।
जिसके बाद मेरा साधनात्मक जीवन प्रारंभ हुआ ।

साधनात्मक जीवन में मुझे अलग-अलग प्रकार के
अनुभव मिले । जिसमें कई बातें ऐसी हैं जो नहीं लिखी
जा सकती और कई बातें ऐसी हैं जो अविश्वसनीय है ।
बहुत सारी बातें ऐसी हैं जो बेहद रोमांचक हैं और जिसे
पढ़ने में आपको आनंद भी आएगा ।

ऐसी ही कुछ घटनाओं को गुरु के आशीर्वाद से और
भगवती महानील सरस्वती की कृपा से शब्द श्रृंखला में
बांधने का प्रयास किया है जो आपको पसंद आएगा ।

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , इसलिए इसके
किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें
क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता
है

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुकसान हो सकता है ।

अंत में

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है
उसका आनंद लें ...

सस्नेह

अनिल शेखर “अमस”

anilshekhar.amas@gmail.com

साथ अनेक अनुभवों से गुजरते हुए हमारी साधना चल रही थी

अब आगे

चंदा जमीन से आसमान पर पहुँच चुकी थी

हमारे देखते-देखते एक गरीब युवती राजरानी बन चुकी थी !!!!!

वास्तव में अद्भुत है इस राजराजेश्वरी श्री विद्या का चमत्कार

और धन्य है वह साधक और योगी जो इस विद्या की साधना संपन्न कर पाते हैं ।

बाबा चमत्कारी पुरुष थे !

इसमें कोई संदेह नहीं था , लेकिन उनके चमत्कार दिखाने का तरीका भी सबसे अलग था ।

उनके पास एक फरसा था ।

आमतौर पर बाबाओं के पास चिमटा, लाठी या सांप के आकार की लाठी कमंडल आदि होते हैं ।

लेकिन

साथ अनेक अनुभवों से गुजरते हुए हमारी साधना चल रही थी

अब आगे

चंदा जमीन से आसमान पर पहुँच चुकी थी

हमारे देखते-देखते एक गरीब युवती राजरानी बन चुकी थी !!!!!

वास्तव में अद्भुत है इस राजराजेश्वरी श्री विद्या का चमत्कार

और धन्य है वह साधक और योगी जो इस विद्या की साधना संपन्न कर पाते हैं ।

बाबा चमत्कारी पुरुष थे !

इसमें कोई संदेह नहीं था , लेकिन उनके चमत्कार दिखाने का तरीका भी सबसे अलग था ।

उनके पास एक फरसा था ।

आमतौर पर बाबाओं के पास चिमटा, लाठी या सांप के आकार की लाठी कमंडल आदि होते हैं ।

लेकिन

बाबा के पास एक फरसा था जो हमेशा उनके साथ रहता था । फरसा एक कुल्हाड़ी जैसा हथियार होता है जिसमे चौड़ा फाल होता है , जैसा भगवान परशुराम के पास होता है

अधिकांश समय वह उसे हाथ मे जमीन से उठाकर ही रखते थे अगर उन्होंने उस फरसे को नीचे रख दिया तो उसका मतलब यह होता था कि कुछ ना कुछ घटित होने वाला है ।

अजीब बात यह थी कि जब वे फरसा नीचे रख देते थे तो ऐसा लगता था जैसे उन्होंने समय को बांध दिया हो । उस क्षण में कुछ विशेष क्रियाएं करके फिर वापस फरसा उठा लेते थे और परिस्थितियां सामान्य हो जाती थी । उनकी विचित्र लीलाओं को देखने का अनुभव भी अपने आप में अद्भुत था ।

कई घटनाएं हैं

लेकिन कुछ घटनाओं का जिक्र करना जरूरी है ताकि श्री विद्या की महिमा और बाबा के व्यक्तित्व को थोड़ी और विराटता के साथ समझा जा सके ।

बाबा के पास वस्त्र के रूप में केवल एक काला कपड़ा होता था जिसे अपनी कमर पर बांधते ।

उनके गले में चित्र विचित्र प्रकार की मालाएं पड़ी रहती थी , जिसमें रुद्राक्ष से लेकर ना जाने क्या-क्या बंधा हुआ था । कलाइयों पर भी रुद्राक्ष बन्धे हुए थे। कान में भी रुद्राक्ष के कुंडल । ऐसा प्रतीत होता था जैसे रुद्राक्षों से उनको विशेष प्रेम हो ।

रुद्राक्ष के विषय में इससे पहले भी एक लेख में लिखा था । यह दो शब्दों से मिलकर बना है रुद्र का अर्थ होता है - भगवान शिव और अक्ष का तात्पर्य होता है आंख अर्थात् एक ऐसी वस्तु जो भगवान शिव की आंखों से उत्पन्न हुई है । या यूं कह लीजिए कि भगवान शिव का ही अंश है वह है रुद्राक्ष.....

ऐसा माना जाता है कि भगवान शिव के आंखों से गिरे हुए आंसुओं से रुद्राक्ष का जन्म हुआ है । इसलिए रुद्राक्ष अति विशिष्ट है ।

एक मुखी रुद्राक्ष की विशेषता और दुर्लभता के बारे में आपने अवश्य सुना होगा ! लेकिन जितने भी रुद्राक्ष है वह अपने आप में अद्वितीय अद्भुत है । पांच मुखी

रुद्राक्ष सबसे आसानी से मिलने वाला रुद्राक्ष है और वह रुद्राक्ष भी अद्भुत चमत्कारी रुद्राक्ष है ।

एक दिन बाबा ने रुद्राक्ष के विषय में चर्चा करते हुए बताया - रुद्राक्ष धारण करना भगवान शिव की कृपा प्राप्त करने का सबसे सरल उपाय है । लेकिन रुद्राक्ष हर किसी के धारण करने के लिए नहीं होता । इसे धारण करने के कुछ दिनों के अंदर अधिकांश लोग इसे निकाल लेते हैं । इसकी वजह यह होती है कि रुद्राक्ष उनको स्वीकार नहीं करता । जिनको रुद्राक्ष स्वीकार नहीं करता वह रुद्राक्ष नहीं पहन सकते हैं और उनको जबरदस्ती रुद्राक्ष पहनना भी नहीं चाहिए ।

जिनको रुद्राक्ष पसंद करता है अर्थात जिसे रुद्राक्ष स्वीकार कर लेता है वह रुद्राक्ष को धीरे-धीरे अपने शरीर का अंग ही स्वीकार करने लगता है ।

यह सुनने में थोड़ा अजीब लग सकता है लेकिन ऐसा ही है ।

अब मुझे ही देख लो मेरे शरीर पर कई रुद्राक्ष देख रहे हो

यह मुझे अपने शरीर का अंग ही लगते हैं !

इनके बिना मुझे ऐसा लगता है जैसे..... मेरा अस्तित्व नहीं है !

इतना यह मेरे साथ और मैं इनके साथ मिला हुआ हूँ !

मेरे गले में पड़ी हुई माला में एक मुखी से लेकर 21 मुखी तक रुद्राक्ष मौजूद है ।

ऐसी माला को इंद्राक्षी माला कहा जाता है !!

और इसे विश्व की सबसे दुर्लभ वस्तुओं में से एक माना जाता है !!!

इतना कहकर वह मौन हो गए

बाबा की कमर पर एक थैला रहता था । वह भी काले रंग का था । उसका आकार करीब 1 फुट बाई 2 फुट का रहा होगा ।

आमतौर पर लोग इतना लंबा थैला कमर में नहीं रखते हैं लेकिन बाबा तो आम आदमी थे ही नहीं ! इसलिए उनकी हर चीज अपने आप में अद्भुत थी ।

यह थैला हमेशा उनकी कमर पर लटका रहता । उस झोले से वह कई प्रकार की चीजें निकालते ! उनमें से सबसे सामान्य था पांच मुखी रुद्राक्ष !

विभिन्न प्रकार की तंत्र बाधा और समस्याओं के साथ आने वाले लोगों को वह 5 मुखी रुद्राक्ष को उसी थैले में से निकाल कर देते थे ।

रुद्राक्ष कहां से आते थे ?

कैसे आते थे ?

यह हम लोगों ने कभी नहीं देखा

लेकिन उस 2 घंटे के समय में कम से कम आठ दस लोगों को वह रुद्राक्ष जरूर देते थे और यह नित्य का क्रम था ।

हमारी श्री विद्या की साधना का क्रम भी जारी था वह लगभग 3 महीने की साधना थी । जिसमें वे अलग-अलग प्रकार के क्रम बताया करते थे ।

साधना को रूखे सूखे सभी प्रकार के वैराग्य से युक्त जीवन समझा जाता है लेकिन श्री विद्या की साधना का तरीका भी अलग है और उसकी प्रक्रिया भी ।

सात्विकता विचार और जीवन में होनी चाहिए उसके साथ साथ सौंदर्य संगीत और प्रकृति के साथ जुड़ाव भी इस साधना के लिए अनिवार्य है ।

एक प्रकार से यह प्रकृति की ही साधना है ।

एक दिन उन्होंने श्री आदि शंकराचार्य जी द्वारा रचित
कल्याणवृष्टिस्तवः नामक स्तोत्र के विषय में बताया
जिसके हमें 1008 पाठ करने थे ।

आदि शंकराचार्य के द्वारा लिखी हुई स्तुतियाँ अपने
आप में अद्भुत है ।

उन्हें भगवान शंकर का अवतार माना जाता है ।

त्रिपुर सुंदरी का मंत्र है :-

॥ क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ॥

इस स्तोत्र में आदि शंकराचार्य ने देवी त्रिपुर सुंदरी के
मंत्र के 15 अक्षरों में से प्रत्येक अक्षर से प्रारंभ करके 15
श्लोक बनाए हैं । सभी अपने आप में बेहद सुंदर और
गेय श्लोक हैं :-

॥ कल्याणवृष्टिस्तवः ।

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभि-

र्लक्ष्मीस्वयंवरणमङ्गलदीपिकाभिः ।

सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले

नाकारि किं मनसि भाग्यवतां जनानाम् ॥ १॥

एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थगिते च नेत्रे ।
सान्निध्यमुद्यदरुणायुतसोदरस्य
त्वद्विग्रहस्य परया सुधयाप्लुतस्य ॥ २॥

ईशात्वनामकलुषाः कति वा न सन्ति
ब्रह्मादयः प्रतिभवं प्रलयाभिभूताः ।
एकः स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते
यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिं करोति ॥ ३॥

लब्ध्वा सकृत्त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं
कारुण्यकन्दलितकान्तिभरं कटाक्षम् ।
कन्दर्पकोटिसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः
संमोहयन्ति तरुणीर्भुवनत्रयेऽपि ॥ ४॥

ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति वेदा
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे ।
त्वत्संस्मृतौ यमभटाभिभवं विहाय
दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः ॥ ५॥

हन्तुः पुरामधिगलं परिपीयमानः
क्रूरः कथं न भविता गरलस्यवेगः ।

नाश्वासनाय यदि मातरिदं तवार्धं
देवस्य शश्वदमृताप्लुतशीतलस्य ॥ ६॥

सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते
देवि त्वदङ्घ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः ।
किं च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमातपत्रं
द्वे चामरे च महतीं वसुधां ददाति ॥ ७॥

कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु
कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः ।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं
त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि बद्धतृष्णाम् ॥ ८॥

हन्तेतरेष्वपि मनांसि निधाय चान्ये
भक्तिं वहन्ति किल पामरदैवतेषु ।
त्वामेव देवि मनसा समनुस्मरामि
त्वामेव नौमि शरणं जननि त्वमेव ॥ ९॥

लक्ष्येषु सत्स्वपि कटाक्षनिरीक्षणाना-
मालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कदाचित् ।
नूनं मया तु सदृशः करुणैकपात्रं
जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा ॥ १०॥

ह्रींहीमिति प्रतिदिनं जपतां तवाख्यां
किं नाम दुर्लभमिहत्रिपुराधिवासे ।
मालाकिरीटमदवारणमाननीया
तान्सेवते वसुमती स्वयमेव लक्ष्मीः ॥ ११॥

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदाननिरतानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥ १२॥

कल्पोपसंहतिषु कल्पितताण्डवस्य
देवस्य खण्डपरशोः परभैरवस्य ।
पाशाङ्कुशैक्षवशरासनपुष्पबाणा
सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका ॥ १३॥

लग्नं सदा भवतु मातरिदं तवार्धं
तेजः परं बहुलकुङ्कुमपङ्कशोणम् ।
भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतंसं
मध्ये त्रिकोणनिलयं परमामृतार्द्रम् ॥ १४॥

ह्रींकारमेव तव नाम तदेव रूपं
त्वन्नाम दुर्लभमिह त्रिपुरे गृणन्ति ।

त्वत्तेजसा परिणतं वियदादिभूतं
सौख्यं तनोति सरसीरुहसम्भवादेः ॥ १५॥

इसका अर्थ पढ़ने में और भी सुंदर है !

आप गूगल में सर्च करके उसे पढ़ सकते हैं और उनकी रचना और उनके द्वारा देवी के लिए प्रयुक्त किए गए शब्दों का सौंदर्य देख सकते हैं

शिव मंदिर से लगा हुआ बाबा का आश्रम था । आश्रम में फूलों के ढेर सारे पौधे थे और साथ ही थी कई रंग की तितलियां

उसी आश्रम का एक कक्ष हमको दिया हुआ था । जहां पर हम दोनों बैठकर स्तुति पाठ कर रहे थे । ग्यारह दिनों में हमको यह पाठ संपूर्ण करना था । ग्यारहवीं रात्री जब अंतिम पाठ चल रहा था उस शाम से कमरे के अंदर तितलियाँ आने लगी ।

वह भी एक-दो की संख्या में नहीं

बल्कि सैकड़ों की संख्या में तितलियां

अलग-अलग रंगों की सुंदर-सुंदर तितलियाँ

वे आराम से कमरे की दीवारों पर बैठी हुई थी !

ऐसा लग रहा था जैसे दीवाल पर कई रंगों के फूल उगे हुए हो ।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा था कि श्री विद्या की साधना वास्तव में प्रकृति साधना है । साधना की सिद्धि को हमने ऐसा मान लिया है कि वह देवी शक्ति हमारे सामने आकर प्रकट हो जाएगी ।

सामान्य परिस्थिति में ऐसा संभव नहीं है, क्योंकि उस तेजस्विता को साधक संभाल नहीं सकता ।

इसलिए केवल उतना ही आभास साधक को कराया जाता है जितना उसकी मानव देह में संभव हो

जितना शक्ति प्रवाह उसका शरीर सम्हाल ले

बस उतनी ही ऊर्जा भगवती अपने साधक को स्पष्ट करती है.....

उसका स्वरूप अलग अलग हो सकता है ।

इसमें एक स्वरूप यह भी है कि आपके घर में लगे हुए पौधों में अचानक फूलों की संख्या बढ़ जाएगी !

ऐसे ऐसे पौधे आपको दिखाई देने लगेंगे जो आपने अपने बगीचे में कभी नहीं देखे होंगे !

आपके घर में चिड़ियों की चहचहाहट बढ़ जाएगी !

तितलियां दिखाई देने लगेगी !

और बहुत कुछ होगा जो सामान्य नहीं होगा.....

उससे आप आभास कर सकते हैं कि आपकी साधना सही ढंग से आगे बढ़ रही है

उस समय रात के लगभग 9:30 बजे होंगे जब बाबा ने कमरे में प्रवेश किया ।

15-20 पाठ बचे हुए थे ।

बाबा भी हमारे साथ आकर बैठ गए और उन्होंने भी कल्याण स्तव का पाठ करना प्रारंभ कर दिया ।

सामने की दीवाल पर एक बड़ा सा श्रीयंत्र बना हुआ था जो संभवतः किसी मोटे कपड़े पर बना था । हम उसी की ओर देखते हुए स्तुति का पाठ कर रहे थे ।

बाबा के आकर बैठने के बाद लगभग 3-4 पाठ हुए होंगे और फिर बाबा ने अपना फरसा जमीन पर रख दिया

पाठ जारी था !

अचानक !!

उस कपड़े में बनी हुई श्री यंत्र की लाइनों का रंग सुनहरा होने लगा ।

उसमें से प्रकाश सा निकलने लगा ।

पाठ पूरा होते होते स्वर्णिम श्री यंत्र के मध्य भाग में एक अत्यंत सुंदर कन्या का स्वरूप दिखाई देने लगा ।

कमल नेत्र से युक्त उस अद्भुत सौंदर्य शालिनी कन्या का हाथ वरदहस्त में उठा हुआ था ।

ऐसा सौंदर्य जो उस स्वर्णिम चमक को भी फीका कर दे रहा था

वह था भगवती त्रिपुर सुंदरी षोडशी के दिव्य दर्शन का क्षण

भगवती के उस दिव्य सौंदर्य की झलक कुछ एक-दो क्षण के लिए रही होगी !

उसके बाद वह विलुप्त हो गई और कमरा विचित्र प्रकार की मादक खुशबू से भर गया ।

ऐसा लग रहा था.....

जैसे पूरे कमरे में खुशबूदार फूल बिखरे हुए हो !

ऐसी खुशबू जो बेहद मनमोहक थी और हृदय में आनंद की वर्षा कर रही थी ।

वह क्षण जीवन का एक अनमोल क्षण था

वह रात चित्र विचित्र प्रकार के स्वप्नों और अनुभवों के साथ गुजरी और पाठ पूर्ण हो गए ।

जैसा कि मैंने बताया बाबा विचित्र थे.....

और उनकी लीलाएं भी विचित्र थी

उनके पास एक बड़ा सा पात्र था, जिसे वह अक्षय पात्र कहते थे । अक्षय अर्थात जिसमे क्षय या कमी नहीं होती हो ।

वह सफेद मटमैला रंग का शंख जैसा एक पात्र था ।

आपने सीपीयों के ऊपर लगा हुआ सफेद रंग का कवर देखा होगा ।

सीपी वह समुद्री जीव है जिसके अंदर मोती बनता है ।

मोती बनने की प्रक्रिया भी बहुत अद्भुत होती है । इस समुद्री जीव के खोल के अंदर रेत का कण जब चला जाता है तो वह उसके इर्द-गिर्द कैल्शियम जैसे किसी पदार्थ की परत बनाना चालू कर देता है.....

धीरे-धीरे वह गोल मोती का आकार ले लेता है यही प्राकृतिक मोती है ।

अभी कृत्रिम मोतियों का उत्पादन भी चालू हो गया है ।
इसके लिए सीप पाले जाते हैं और उनके अंदर रेत का
कण डाल दिया जाता है । जिसके इर्द-गिर्द स्वाभाविक
रूप से सीप मोतियों का निर्माण करते हैं लेकिन
प्राकृतिक मोतियों और कृत्रिम मोतियों में थोड़ा सा फर्क
रह जाता है जिसे केवल पारखी लोग ही पहचान सकते
हैं ।

ज्योतिष मे इसे चंद्रमा का रत्न माना जाता है । मोती का
उपयोग मानसिक स्थिरता और चंद्रमा की अनुकूलता के
लिए किया जाता है । इसके अलावा आयुर्वेद में मोती
भस्म का उपयोग औषधि के रूप में भी किया जाता है ।
सामान्यतः सीपी का जो कवर होता है वह सफेद रंग का
या मटमैला सफेद रंग का दो हिस्सों से बना होता है ।
उसका आकार लगभग 1 सेंटीमीटर से 2 सेंटीमीटर चौड़ा
और 3 से 4 सेंटीमीटर तक लंबा होता है । उसके ऊपर
धारियां बनी रहती है । बीच वाले हिस्से मे दोनों भाग
जुड़ा रहता है । सीपी इसी खोल के अंदर निवास करती
है ।

इस प्रकार के खोल बड़े छोटे आपको समुद्र के तट पर
बड़ी आसानी से मिल जाएंगे

इसी प्रकार का एक खोल उनका अक्षय पात्र था ।

यह पात्र लगभग डेढ़ फुट लंबा और एक फुट के करीब चौड़ा था । जिसे वे काले कपड़े से ढक कर रखते थे ।

जिसे भी भेंट चढ़ानी होती थी वह उस काले कपड़े के अंदर रखे हुए अक्षय पात्र में अपनी भेंट चढ़ा देता था ।

उस अक्षय पात्र के अंदर रखा गया फल फूल या कोई भी चीज वहां से अपने आप लुप्त हो जाती थी ।

कहां जाती थी ?

यह तो बाबा ही जाने

उस अक्षय पात्र में डालने के बाद सब चीजें वहां से गायब हो जाती थी ।

बाबा जब आसन पर बैठते थे तो अपने कंधे पर पड़ा हुआ काला कपड़ा उसके ऊपर ढक देते थे.....

जब उनकी सभा समाप्त हो जाती थी , तो उस काले कपड़े को वापस उठा लेते थे । जैसे ही वह कपड़ा उठाते थे अंदर अक्षय पात्र उसी प्रकार खाली रहता था जैसे कपड़ा डालने के पहले होता था ।

एक प्रकरण जो अत्यंत रोचक है वह भी प्रस्तुत कर रहा हूँ बाकी फिर कभी

बाबा के आश्रम में एक सेठ आता था । उम्र यही कोई 40 - 45 के आसपास रही होगी ।

गोरा चिट्ठा मझोले आकार का वह सेठ इंपोर्ट एक्सपोर्ट का काम करता था ।

उसका नाम था नागेश भाई झावेरी ।

वह एक करोड़पति आदमी था..... संभवतः अरबपति ।

वह वहां हर रविवार को आता था ।

जब वह आता तो अपने साथ एक पुराना थैला लेकर आता था ।

वह थैला काफी पुराना था और उसमें कई जगह कपड़े के टुकड़े लगाकर सिया गया था ।

जैसे आमतौर पर कपड़े में छेद हो जाने के बाद सिया जाता है ।

थैले की दशा देखकर ऐसा लगता था जैसे किसी भिखारी का थैला हो

जिसके पास थैला खरीदने के लिए भी पैसे ना हो ।

लेकिन उस थैले में से जो चीज निकलती थी वह उसकी दशा से बिल्कुल उल्टी हुआ करती थी

उस थैले में नोटों के बंडल होते थे । जिसे वह उस
अक्षय पात्र में छोड़ता था ।

यह उसका नियम था ।

थैले के अंदर में नोटों की संख्या कम ज्यादा होती रहती
थी ।

उनसे एक दिन मैंने पूछ लिया - आप इस प्रकार से हर
हफ्ते लाकर धनराशि क्यों छोड़ते हो ।

उन्होंने कहा - मेरे पास आज जो भी है वह बाबा की
कृपा से है । मैं अपनी आय का दसवां हिस्सा बाबा की
भेंट चढ़ाता हूं ।

उनकी बात सुनकर मेरी उत्सुकता और बढ़ गई ।

इस संसार की सबसे कठिनाई से प्राप्त होने वाली वस्तु
पैसा है !

और उसके विषय में जानने की उत्सुकता हर किसी को
होती है !

खासतौर से तब !

जब कोई व्यक्ति इस प्रकार से बड़ी मात्रा में धन लाकर
चढ़ा रहा हो

तो

उसके विषय में जानने की उत्सुकता और भी बढ़ जाती है !

मेरे साथ भी यही हो रहा था ।

मैंने अपनी जिज्ञासा उनके सामने प्रकट की ।

वह बोले - यह अत्यंत गोपनीय विषय है । इसके विषय में मैं आपको तभी बता सकता हूं जब बाबा की अनुमति हो ! उनकी आज्ञा हो ।

हम दोनों की नजरें बाबा की तरफ उठी ।

बाबा उस समय मिलने आने वाले लोगों के साथ बैठे हुए थे । ऐसे में उनको डिस्टर्ब करना ठीक नहीं था । मैंने सोचा कि बाद में बाबा से अनुमति प्राप्त करके फिर पूछ लूंगा

लेकिन जब मैंने उनकी तरफ देखा तो मुझे ऐसा लगा जैसे वे सब कुछ सुन रहे थे ।

वहीं से वे जोर से बोले - बता दे लड़के को ! जो वह जानना चाहता है ।

झवेरी सेठ ने हाथ जोड़कर बाबा की तरफ प्रणाम किया और सहमति में सिर हिलाया ।

उसके बाद उन्होंने अपनी कहानी बतानी प्रारंभ की

बोले - मेरे माता पिता अहमदाबाद की सड़कों पर भीख मांग कर गुजारा करते थे । मैं भी उनके साथ घूमता था । दोनों को कुछ रोग हो गया था । उनके अंग गल गल कर ऐसे हो गए थे कि वे कुछ भी करने की स्थिति में नहीं थे । उनको भोजन खिलाने से लेकर साफ-सफाई तक सभी कार्य मैं ही करता था ।

उसके बाद धकेलने वाली गाड़ी में बिठा कर उनको भीख मांगने के लिए लेकर जाता था ।

बचपन से ही मैं वही काम करता था, इसलिए कभी उसके आगे कुछ करने की बात दिमाग में भी नहीं आई । मुझे लगता था कि यही मेरा काम है ।

कोढ़ी होने की वजह से लोगों की करुणा ज्यादा रहती थी और वह दूर से फेंक कर काफी पैसे दे दिया करते थे । उससे हम तीनों का पेट भर जाता था और गुजारा चल रहा था ।

समय गुजरता रहा

उस समय मेरी उम्र लगभग बीस बाईस साल की रही होगी जब एक तेज रफ्तार ट्रक ने हमें ठोकर मार दी ।

उस दुर्घटना में मेरे माता-पिता की मृत्यु हो गई और मैं गंभीर रूप से घायल होकर अस्पताल में भर्ती हो गया ।

उस दुर्घटना के बाद मेरी याददाश्त चली गई । मैं कुछ भी बताने की स्थिति में नहीं था । लगभग 3 महीने तक मेरी वही स्थिति रही ।

एक दिन रात के लगभग ढाई तीन बजे मुझे जबरदस्त दौरे आने लगे ।

जबरदस्त दौरे.....

दो वार्ड बॉय और एक नर्स मुझे पकड़ रहे थे लेकिन उसके बावजूद मेरा शरीर थरथरा रहा था ।

ऐसा मेरे साथ अक्सर होता था

इसलिए वार्ड के कर्मचारी भी ऐसी परिस्थितियों के लिए तैयार रहते थे ।

लगभग एक डेढ़ घंटे तक मेरी यही स्थिति रही उसके बाद मैं शिथिल हो गया । सारे लोग वापस चले गए ! उस समय अचानक मेरे मानस पटल पर एक शिव मंदिर दिखाई दिया !

एकदम स्पष्ट !

जैसे मैं उसी मंदिर के सामने खड़ा हूँ !

वह यही शिव मंदिर था ।

उसके बाद सब कुछ लुप्त हो गया !

या संभवतः मैं सारी बातों को भूल गया होऊँगा ।

मुझे सिर्फ उस शिव मंदिर का देखना याद था ।

अगले दिन से मेरी तबीयत में सुधार होने लगा । उसके

बाद धीरे-धीरे मेरी याददाश्त लौटने लगी । अगले

6 महीने में मैं शरीर से भी स्वस्थ हो गया और मेरी

याददाश्त भी वापस आ गई

लेकिन !

अब मैं इस बड़ी दुनिया में अनाथ था ।

अब मुझे अपने कमाई की फिक्र भी करनी थी ।

कोई ऐसा काम करना था जिससे खाने लायक चीजों

की व्यवस्था हो जाए । मैं अपना जीवन यापन कर सकूँ

।

मुझे सिर्फ एक ही काम आता था.....

और वह था भीख मांगना

मैं बचपन से अपने माता-पिता को वही करते हुए देख रहा था ।

इसलिए मेरे लिए सबसे आसान तरीका था भीख मांगना ।

मैंने भीख मांगना चालू कर दिया ।

जवान और स्वस्थ होने की वजह से मुझे अधिकांश लोग दुत्कार दिया करते थे और बड़ी मुश्किल से मेरा गुजारा चल रहा था । बचपन से ही मैं लोगों के इस प्रकार के दुर्व्यवहार को देखता और सहन करता रहा था । इसलिए मुझे इसकी आदत हो गई थी और कुछ भी विशेष नहीं लगता था ।

मैं अपनी भिखारीगिरी में मस्त था ।

मुझे ऐसा लगता था कि यही मेरा रोजगार है ।

कुछ मेरे जवान होने की वजह से और कुछ भिखारियों की संख्या बढ़ने की वजह से मेरा भिखारी गिरी का धंधा मंदा होने लगा ।

जब आय कम होने लगती है तो आदमी उसे बढ़ाने के उपाय सोचता है ।

मैं भी सोचने लगा

तभी किसी ने मुझे राय दी कि सोमनाथ मंदिर में बहुत सारे लोगों का आना जाना लगा रहता है !

अगर तुम वहां जाकर भीख मांगो तो ज्यादा आमदनी होगी ।

मैं अकेला आदमी था ।

कोई आगे पीछे नहीं था ... तो मैं सोमनाथ की ओर निकल पड़ा ।

भिखारियों से रेल वाले भी टिकट के बारे में नहीं पूछते !

हां पुलिस वालों की लात खानी पड़ जाती है जो मेरे लिए नई बात नहीं थी

बड़ी आसानी से मैं सोमनाथ पहुंच गया ।

वहां पहुंचने के बाद मैंने भीख मांगना चालू कर दिया ।

मंदिर के दरवाजे पर भिखारियों की लंबी लाइन लगा करती थी.....

उसमें से एक मैं भी हुआ करता था ।

सनातन धर्मावलंबियों में दान का बड़ा महत्व माना

जाता है । इसलिए मंदिर दर्शन करने के बाद वह

भिखारियों को दान भी करते हैं । सोमनाथ मंदिर में आने

वालों की संख्या बहुत थी । इसलिए हर भिखारी को खाने पीने लायक भीख तो मिल ही जाता था । कई बार लंगर में भोजन करने का अवसर भी मिल जाता था ।

इस प्रकार से मेरी जिंदगी बड़ी शांति से गुजर रही थी ।

मेरी उम्र उस समय 30 के आसपास हो चुकी थी । सोमनाथ में मैं अपने हिसाब से काफी संतुष्ट जीवन व्यतीत कर रहा था

भगवान शिव को मैं बचपन से अपना आराध्य मानता रहा हूँ ।

ओम नमः शिवाय मंत्र का जाप मेरे मन में हमेशा चलता रहता था ।

भीख मांगने के लिए बैठता था तब भी

और जब माता-पिता के साथ घूमता था तब भी ...

मेरे मन में इस मंत्र का जाप निरंतर चलता रहता था ।

एक तरह से वह मेरे जीवन का एक हिस्सा बन गया था ।

दिगंबर भगवान शिव !

जिनके शरीर पर वस्त्र का एक टुकड़ा भी नहीं है !
जो दुनिया में सबसे बेकार समझे जाने वाले चिता भस्म
से अपना श्रंगार करते हैं ।

ऐसे भगवान शिव का मैं भक्त था ।

इसलिए

मुझे ऐसा लगता था कि मैं उन्हीं के जैसा तो हूँ !

मेरे पास भी कुछ नहीं है !

मैं भी उन्ही की तरह बिना किसी चिंता के अपना जीवन
काट रहा हूँ ।

सोमनाथ मंदिर भगवान शिव का प्रथम ज्योतिर्लिंग
माना जाता है और इसे बेहद सिद्ध पीठ माना जाता है ।
संभवतः इस सिद्ध पीठ में भगवान शिव के पंचाक्षरी
मंत्र का जाप करते रहने का असर रहा होगा कि कुछ
महीनों के बाद मुझे स्वप्न में भगवान शिव के दर्शन होने
लगे

मैंने सोचा कि संभवतः यह इतने वर्षों के मंत्र जाप का
फल रहा होगा ।

स्वप्न में मुझे वही दिगंबर त्रिशूलधारी भगवान शिव दिखाई देते थे और मैं उनको प्रणाम करके अपने आप को धन्य मानता था ।

मेरे मन में कोई इच्छा नहीं थी और उनके दर्शन प्राप्त होते ही मैं अपने आप को अत्यंत प्रफुल्लित, आनंदित और दुनिया का सबसे खुशनसीब आदमी समझने लगता था ।

ऐसा काफी दिनों तक चलता रहा

हफ्ते में एक आध दिन उनके दर्शन इस प्रकार से स्वप्न में हो जाते थे ।

फिर एक दिन अचानक.....

मैंने स्वप्न में भगवान शिव को दूसरे ही स्वरूप में देखा । वह अत्यंत तेजस्वी तो पहले भी दिखते थे लेकिन इस स्वरूप में बेहद सुंदर युवा और सुंदर वस्त्र और आभूषण से सुसज्जित दिखाई दे रहे थे ।

मेरे सपनों में भगवान शिव का जो रूप दिखाई देता था

उससे यह स्वरूप बिल्कुल अलग ही था ।

इस स्वरूप मे भगवान शिव सुंदर आकर्षक और अत्यंत
ही तेजस्वी दिखाई देते थे

सबसे बड़ी बात यह कि वे पूर्ण वस्त्र और आभूषणों से
सजे हुए दिखते थे ।

रेशमी वस्त्र.....

सोने के आभूषण

सोने जड़े रुद्राक्ष के कुंडल

सोने का चमचमाता त्रिशूल.....

गले मे सुनहरे रंग के सर्प

बाद मे जाना कि

वे थे कामेश्वर.....

राजराजेश्वर शिव

उनके दर्शन का सौभाग्य स्वप्न मे प्राप्त होता ।

जो मुझे बहुत अच्छा लगता

मुझे लगता कि यह भगवान शिव के समान दिखने वाले
कोई और भगवान है !

मुझे तो दिगंबर भगवान शिव के दर्शनों की आदत थी ।

इसलिए भगवान शिव के इस स्वरूप का दर्शन कर लेने
पर भी मुझे संतुष्टि नहीं हो पाती ।

यह ऐसी बात थी जो मैं किसी से बता भी नहीं सकता था.....

लेकिन.....

मेरी बेचैनी बढ़ती जा रही थी !

मैं यह सोच कर दुखी हो जाता था कि मेरे भगवान शिव कहां चले गए

ऐसे ही एक दिन मैं रात के लगभग आठ बजे सड़क के किनारे बैठा हुआ था , जब बाबा चंड भैरव उधर से गुजरे

बाबा को देखते ही मेरे मन में श्रद्धा का भाव आया

मैंने उनको हाथ जोड़कर प्रणाम किया

उन्होंने मेरी तरफ बेहद गहरी नजरों से देखा और आगे बढ़ गए ।

यह थी बाबा से मेरी पहली मुलाकात

लेकिन जो भी होना था

वह उस मुलाकात में हो चुका था ।

बाबा की नजरों में न जाने क्या था मुझे उनसे दोबारा मिलने की इच्छा होने लगी ।

मैं बाबा को नहीं जानता था इसलिए मैंने अपने साथी भिखारियों से उनके विषय में जानकारी इकट्ठा करने की कोशिश की ।

वह भी उनके बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानते थे तो मैं इंतजार करने लगा कि फिर उनसे मुलाकात होगी

पहले हफ्ते में एक दिन भगवान शिव के दर्शन हुआ करते थे, लेकिन बाबा के मिलने के बाद रोज भगवान शिव के उसी तेजस्वी आकर्षक स्वरूप के दर्शन प्रारंभ हो गए

इससे मेरा बाबा के प्रति विश्वास और बढ़ गया । मुझे लगा कि मैं अपनी समस्या उनको बता सकता हूँ ।

लगभग 10 दिन के बाद उनसे फिर भेंट हो पाई ।

मैंने उनके चरण पकड़ लिए और उन से निवेदन किया - प्रभु ! आपसे मिलने के बाद मुझे रोज भगवान शिव जैसे चेहरे वाले किसी भगवान के दर्शन हो रहे हैं

लेकिन मेरे भगवान शिव नहीं मिल रहे

मेरी सरल बात सुनकर बाबा ठठा कर हंस पड़े बोले - तेरे शिव कौन से है ?

मैं बोला - प्रभु मेरे शिव तो नंग धड़ंग है ।

भस्म लगाने वाले हैं ।

शमशान मे पत्थर पर बैठे हैं ।

मुझे जो शिव दिख रहे हैं वह तो एकदम सज-धज कर
सिंहासन पर बैठे हैं

वे बोले - वह देवाधिदेव हैं !

गुरुओं के गुरु हैं !

राजाओं के राजा हैं !

राजराजेश्वर हैं !

इसलिए वैसे दिख रहे हैं !!

तुझे क्या दिक्कत है ?

वह भी तो भगवान शिव है ।

मैं झिझकते हुए बोला - प्रभु , मैं बचपन से तो दिगंबर
शिव को ही देखता रहा हूं ! उनको ही अपना प्रभु मानता
रहा हूं ! उनके इस स्वरूप को देखकर मुझे अपनापन
नहीं लग रहा है । मुझे लगता है कि यह कोई और है ,
मेरे भगवान शिव नहीं है । मैं अपने भगवान शिव को
देखना चाहता हूं ।

मेरी बात और संभवतः मेरा भोलापन सुनकर बाबा
आनंदित हुए और बोले - ठीक है ! जैसी तेरी इच्छा ।
उसके बाद बाबा चले गए ।

उसी रात से शिव के दर्शन होना बंद हो गए । यह मेरे
लिए दुख की बात थी ।

मैं फिर बेचैन होने लगा

लगभग 1 हफ्ते तक कुछ नहीं हुआ !

इसी बेचैनी में 15 दिन बीत गए और 15 दिन के बाद वह
एक पूर्णिमा की रात थी.....

जब स्वप्न में पुनः मुझे मेरे दिगंबर भगवान शिव के
दर्शन होना प्रारंभ हो गए ।

उन्हें देखकर मन अत्यंत प्रसन्न हुआ !

अब मैं पूरी तरह संतुष्ट था !

अब बाबा जब भी मिलेंगे.....

तो उनको धन्यवाद कहने की इच्छा मन में प्रबल होने
लगी थी ।

साथ ही कहीं न कहीं यह भाव भी था कि बाबा अवश्य
सिद्ध है तभी तो उन्होंने मेरी इच्छा पूर्ण कर दी ।

एक दिन खोजते खोजते मैं बाबा के आश्रम अर्थात् इस शिव मंदिर तक आ गया ।

जैसे ही मैंने इस शिव मंदिर को देखा तो मुझे लगा कि अरे ! यह तो वही शिव मंदिर है जो मुझे अस्पताल में दिखाई दिया था ! जिसके बाद मेरा स्वास्थ्य ठीक होने लगा था।

तभी !

मुझे एक झटका सा लगा और मैं बेहोश होकर गिर गया ।

जब मुझे होश आया तो मैं मंदिर के पीछे एक चबूतरे पर लेटा हुआ था और बाबा के शिष्य मेरे ऊपर पानी छिड़क रहे थे ।

उस दिन से मेरा बाबा के आश्रम में हफ्ते में एक बार आना चालू हो गया ।

उस समय से ही मेरा यह नियम था कि हफ्ते भर में जो कमाई होती थी उसका दसवां हिस्सा मैं लाकर बाबा जी को चढ़ा देता था ।

बाबा के पास जिस प्रकार की भेंट आती थी उसके सामने वह छोटी सी राशि हुआ करती थी । कभी एक

रुपए कभी दस पैसे लेकिन अपनी श्रद्धा से उसे लगातार चढ़ाता रहता था । अगर किसी हफ्ते नहीं आ पाता तो अगले हफ्ते दोनों हफ्ते की कमाई का दसवां हिस्सा छोड़कर जाता ।

एक दिन बाबा ने मुझसे पूछा - तू यहां पैसे क्यों छोड़ता है ?

इसका कोई कारण मुझे भी समझ में नहीं आता था । मैं उसका जवाब नहीं दे पाया !

कहा - मुझे नहीं मालूम ! लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि भगवान शिव की कृपा से जो भी आमदनी मुझे होती है उस का दसवां हिस्सा भगवान की सेवा में जाना चाहिए । इस मंदिर में आने से मुझे ऐसा लगता है कि यह मेरे भगवान शिव का मंदिर है और आप उनके बड़े पुजारी ! इसलिए यहां जब भेंट चढ़ाता हूं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है ! और कुछ बात नहीं है ।

उन्होंने मुझसे पूछा - कोई इच्छा ?

मैंने कहा - मेरी सबसे बड़ी इच्छा तो भगवान शिव के स्वरूप के दर्शन थे जो आपकी कृपा से अब मुझे हो जाते हैं । अब कोई इच्छा नहीं है ।

मेरा शिव मंदिर जाना जारी रहा ।

लगभग 2 साल हो गए थे ।

बाबा मुझे से चार छह महीने में एक बार इच्छा जरूर पूछ लेते थे । हर बार मेरा जवाब वही रहता था ।

दो साल बीत जाने के बाद शिवरात्रि की पूर्व संध्या को मैं शिव मंदिर पहुंच गया । शिवरात्रि के दिन सोमनाथ मंदिर में बहुत सारे भक्त आते हैं । उस दिन भरपूर दक्षिणा मिलती है । अगले दिन वहां रहना था । बाबा के पास जा नहीं सकता था । इसलिए 1 दिन पहले पहुंच गया था । जब मैं वहां पहुंचा तो बाबाजी पूजन की तैयारी करवा रहे थे ।

मुझे देखकर वह प्रसन्न हुए और मुझे भी कुछ कुछ काम सौंप दिया । मैं उनको करने लगा । इसी प्रकार रात के ग्यारह बज गए । मुझे घर जाने की जल्दी नहीं थी । सोमनाथ मंदिर मुझे सुबह ही पहुंचना था । अगर रात वहां सो जाता तब भी कोई दिक्कत नहीं थी ।

ग्यारह बजे के आसपास सारी तैयारियां पूरी हो चुकी थी । सजावट से लेकर पूजा सामग्री की व्यवस्था तक सबकुछ रेडी था ।

मैंने बाबा जी से जाने की अनुमति मांगी

उन्होंने कहा - आज रात यही रुक जा ।

मैंने कहा - जैसा आपका आदेश बाबा ! और कोई सेवा हो तो बताइए ।

बाबा बोले - मुझे एक जगह तक जाना है तू साथ चलेगा ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया

हम दोनों एक साथ मंदिर से निकल पड़े ।

बाबा आगे आगे चल रहे थे और उनसे एक कदम पीछे में चल रहा था ।

बाबा की ज्ञान की बातें अधिकांशतः मेरे सर के ऊपर से निकल जाती थी तो मैं मौन ही रहता था । इस बात को वह भी समझते थे । वह मुझसे बहुत ज्यादा जटिल विषयों पर बात नहीं करते थे ।

जाते जाते शिवरात्रि में सोमनाथ मंदिर कैसा रहेगा और वहां कितना ज्यादा भिक्षा मिलेगा इन सब विषयों पर

बात हो रही थी । मैं भी उत्साह के साथ बता रहा था कि सामान्य दिनों की अपेक्षा कम से कम बीस गुना आमदनी हो जाती है । इसी प्रकार की बातें करते हुए हम समुद्र तट तक आ पहुंचे । उनके हाथ में तब भी फरसा मौजूद था ।

समुद्र तट पर पहुंचकर हम रुक गए । तभी एक बोट हमारे पास आकर रुकी । हम लोग उसमें चढ़ गए । बोट हमें लेकर आगे बढ़ी और लगभग आधा घंटा बाद हमें एक तट पर छोड़कर बोट वापस हो गई ।

समुद्र का तट था और घना जंगल था !

मुझे याद नहीं था कि मैंने कभी ऐसा दृश्य देखा हो.....

समुद्र को दूर से जरूर देखा था ।

लेकिन कभी उस में यात्रा करने का साहस भी नहीं हुआ और उसके लायक पैसे भी कभी नहीं हुआ करते थे !

बोट में भी जिंदगी में पहली बार बैठा था । जब बोट पानी पर तैर रही थी तो मुझे बहुत मजा आ रहा था !

ऐसा लग रहा था कि वह सफर कभी खत्म ना हो !

लेकिन सफर खत्म हो चुका था और हम एक ऐसे तट पर थे जहां घना जंगल था

जैसा कि आप लोग जानते होंगे कि शिवरात्रि फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को पड़ती है । कृष्ण पक्ष में चंद्रमा की उज्ज्वलता धीरे-धीरे कम होती जाती है और अमावस्या को वह पूरी तरह से गायब हो जाता है । वह त्रयोदशी की रात्रि थी जब हम लोग समुद्र के किनारे पहुंचे थे ।

जब बोट नजरों से ओझल हो गई तो बाबा ने मेरा हाथ पकड़ा और समुद्र की ओर बढ़ गए । जब समुद्र के पास पहुंचे तो उन्होंने अपना फरसा नीचे झुकाया और जल से स्पर्श कर दिया

जैसे ही फरसे का स्पर्श समुद्र के जल से हुआ वह बर्फ की तरह कठोर हो गया । ऐसा लग रहा था जैसे कांच बिछा हुआ हो

वह उस पर चलने लगे....

उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा हुआ था और मुझे भी अपने साथ साथ लेकर चलने लगे ।

मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मैं कांच के ऊपर चल रहा हूं !

शुरु में मुझे डर लगा !

लेकिन जब 10-12 कदम चल लिया तो मुझे लगा कि यह तो सामान्य जमीन जैसा ही है डरने की जरूरत नहीं है ।

अंधेरा था

तो बहुत कुछ स्पष्ट नहीं दिखाई दे रहा था ।

लगभग 10-12 फुट आगे समुद्र की लहरें और उनका शोर सुनाई दे रहा था !

साथ ही पानी की छिटकती हुई बूंदें भी आ रही थी ।

हम जिस जगह पर चल रहे थे वहां का पानी बिल्कुल

पत्थर की तरह हो चुका था । उसी पर चलते हुए हम

लोग लगभग 1 किलोमीटर समुद्र के अंदर आ गए होंगे ।

वहां पर पहुंचकर बाबा ने मुझे बैठने के लिए कहा ।

मैं वहीं पर बैठ गया ।

बाबा भी सामने बैठ गए ।

अंधेरा था !

सिर्फ आकृति दिखाई दे रही थी !

कुछ भी स्पष्ट नहीं हो रहा था !!

बाबा ने कुछ मंत्रों का उच्चारण प्रारंभ कर दिया

और जैसे-जैसे मंत्रों का उच्चारण बढ़ता जा रहा था

वातावरण में एक अजीब सी दिव्यता आती जा रही थी

तभी मैंने देखा कि

समुद्र का जो जल काले रंग जैसा हो गया था वह हल्का प्रकाशित होने लगा !

ऐसा लग रहा था जैसे समुद्र की तली से कोई प्रकाश आ रहा हो

ऊपर की तरफ

जिसके मध्यम प्रकाश में समुद्र तल प्रकाशित हो रहा हो !

अब मुझे वह स्पष्ट दिखाई दे रहा था !

हल्के नीले रंग के कांच जैसे सतह पर हम लोग बैठे हुए थे !

मैं एक तरफ बैठा था और मुझ से लगभग 4 फुट आगे बाबा बैठे हुए थे !

हम दोनों एक दूसरे की ओर देखते हुए बैठे थे । हम दोनों के बीच वाले स्थान में प्रकाश आ रहा था !

प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ने लगा !

तभी.....

मैंने देखा कि उस सतह को चीरता हुआ एक शिवलिंग

जो हल्के नील अकाश से प्रकाशित था !

ऊपर की तरफ आने लगा

और आकर सतह के ऊपर स्थिर हो गया शिवलिंग के एक तरफ में था और दूसरी तरफ बाबाजी थे !

बीच में वह अद्भुत प्रकाशमान नीला चमकता हुआ शिवलिंग स्थापित था ।

बाबा जी ने हाथ बढ़ाया विभिन्न प्रकार की पूजा सामग्री से भरा हुआ एक थाल उनके हाथ में आ गया ।

उसे उन्होंने मेरी तरफ बढ़ा दिया । लगभग 1 घंटे तक उन्होंने शिवलिंग का पूजन कराया ।

इससे पहले मैंने कभी इस प्रकार पूजन नहीं किया था ।

भिखारियों को पूजन में बैठने की अनुमति ऐसे भी नहीं मिलती है और वे उसकी कोशिश भी नहीं करते ।

पूजन वाली जगह पर बाहर खड़ा होकर हाथ जोड़कर देखा जरूर था लेकिन अपने हाथ से भगवान शिव को विभिन्न पूजन सामग्री अर्पण करने का यह मेरा पहला अनुभव था

इसलिए जैसे जैसे मैं सामग्री अर्पण करता जाता
था

मेरे आंखों से आंसू की धारा बहती चली जाती थी ।

पूरे पूजन काल के दौरान मेरी आंखें बहती रही ।

आंसुओं की धारा निरंतर चलती रही !

पूजा समाप्त हो जाने के बाद भगवान शिव के शिवलिंग
को बाबा ने प्रणाम किया !

उनको देखकर मैंने भी किया ।

वह शिवलिंग जिस प्रकार से समुद्र की तली से बाहर
निकला था उसी प्रकार समुद्र में गायब हो गया ।

पुनः अंधकार छा गया !

बाबा ने मुझे एक मंत्र दिया और उससे संबंधित कुछ
बातें भी बताईं ।

उन्होंने बताया कि यह राज राजेश्वरी षोडशी महाविद्या
का मंत्र है ।

वे ही भगवान शिव की मूल शक्ति है

जो इस संसार को संचालित करती है ।

यह सब बातें मेरे लिए बिल्कुल नई थी ।

मुझे इन सब के विषय में कोई जानकारी नहीं थी ।

मैं तो केवल भगवान शिव को जानता था ।

वही मेरा संपूर्ण ब्रह्मांड थे ।

उनका पूजन अभी अभी मैंने संपन्न किया था ।

बाबा ने मुझे कहा कि मुझे इस मंत्र का जाप वहीं बैठ कर करना है !!!

तब तक मेरे दिमाग से शिवरात्रि सोमनाथ का मंदिर सब गायब हो चुका था ।

बाबा ने मुझे उसी स्थान पर बिठाया और वहां से गायब हो गए

मैं वहीं बैठकर मंत्र जाप करता रहा ।

मंत्र छोटा सा था इसलिए मुझे जल्दी याद हो गया और मैं उसका जाप करने लगा । उसी प्रकार समुद्र के सतह पर मैं बैठा हुआ था और मंत्र जाप कर रहा था

धीरे धीरे मुझे ऐसा महसूस होने लगा कि मैं शून्य की अवस्था में जा रहा हूं ।

धीरे-धीरे मेरा ध्यान लगने लगा !

ध्यान लगते ही मुझे भगवान शिव के दर्शन होने लगे !

ठीक वैसे ही भगवान शिव जैसे मैं देखा करता था !

काफी देर तक मुझे उनके दर्शन हुए !

उसके बाद वह शिवलिंग दिखाई देने लगा जिसका पूजन हम लोगों ने किया था ।

काफी समय तक वही शिवलिंग मेरे दोनों भौंह के मध्य स्थान पर दिखाई देता रहा और मैं अत्यंत भावविभोर होकर उसे देखता रहा

उसे देखकर मेरी आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी !

ऐसा लग रहा था जैसे कोई पाइप फट गया हो और उसमें से पानी आता चला जा रहा हो !

मेरे आंसू रुक ही नहीं रहे थे !

लगातार बह रहे थे !

मैं आह्लादित होता हुआ !

आनंदित होता हुआ !

अत्यंत खुशी के भाव के साथ मंत्र जाप में लगा हुआ था.....

यह स्थिति कब तक रही होगी मुझे पता नहीं !

मैं उसी अवस्था में बैठा रहा जब तक कि सूर्य भगवान की तेज किरणों मेरे सर पर नहीं पड़ने लगी । तब मैंने आंखें खोल कर देखा तो मैं उसी प्रकार समुद्र में बैठा हुआ था ।

दूर दूर तक कुछ भी नजर नहीं आ रहा था !

मेरे आस पास लगभग 10 फुट का इलाका स्थिर था !

किसी कांच की तरह !

नीले कठोर कांच की तरह !!

उसके बाद समुद्र का पानी

अनंत समुद्र का पानी चारों तरफ फैला हुआ था !

जिसके बीच मैं नीले रंग के पारदर्शी बोट में बैठे हुए

यात्री की तरह लग रहा था ।

अंधेरे मे कुछ पता नहीं चल रहा था लेकिन सूर्यप्रकाश

मे उस दृश्य को देखकर मेरी हालत खराब होने

लगी

रात को कुछ दिख नहीं रहा था इसलिए बहुत ज्यादा डर

महसूस नहीं हुआ !

अब जब चारों तरफ रोशनी हुई तो डर की मात्रा बढ़

गई

दूर दूर तक तक कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था !

पानी ही पानी फैला हुआ था !

उस पानी के बीच में लगभग 8 फुट व्यास के एक

गोलाकार प्लेटफार्म जैसे चीज पर मैं बैठा हुआ था !

सबसे गजब की बात यह थी कि वह भी पानी की बनी हुई थी !

मैं सोच रहा था कि यह अगर वापस पानी बन जाए तो मैं समुद्र की लहरों में ऐसा गायब होऊँगा कि फिर कभी दिखाई नहीं दूँगा !

यह विचार मन में आते ही डर भी लगने लगा !

मैंने उठकर उसपर चलकर देखा !

वह उसी प्रकार ठोस बना हुआ था

जिससे मेरे मन में धीरे-धीरे भय की मात्रा कम होने लगी ।

बाबा ने मंत्र जाप करने के लिए कहा था

इस प्रकार का विचार आते ही मैं फिर से आंखें बंद करके मंत्र जाप करने लगा ।

शुरु शुरु में अपनी स्थिति और समुद्र के बीच में होने का एहसास दिमाग पर हावी था और मन मे यह सब चलता रहा !

लगभग पांच सात मिनट के बाद यह सारी चीजें मन के आंगन से जैसे किसी ने झाड़ू लगाकर निकाल दिया हो और सब कुछ साफ और स्पष्ट हो गया था ।

मंत्र जाप निरंतर जारी था....

फिर से मेरे भूमध्य पर उस नीले शिवलिंग का स्वरूप
धीरे-धीरे प्रकट होने लगा !
वह स्थिति काफी समय तक बनी रही !
फिर शिवलिंग के दो भाग हो गए !
एक भाग में धीरे-धीरे भगवान शिव का कामेश्वर स्वरूप
सामने आने लगा !
मंद मंद मुसकुराता हुआ !
मोर की पंखुड़ियों जैसे सुंदर रेशमी वस्त्रों वाले !
सोने के आभूषणों से सुसज्जित !
चमचमाते हुए स्वर्ण त्रिशूल को धारण किए हुए
आशीर्वाद की मुद्रा में
नेत्रों से करुणा की वर्षा करते हुए !

दूसरे भाग में अत्यंत सुंदर !
तेजस्वी !
महामाया का स्वरूप !
गुलाबी वस्त्रों से सुसज्जित !
विभिन्न रत्नों से जड़े दिव्य स्वर्णभूषणों से अलंकृत !
जगदंबा का स्वरूप !
सामने आने लगा !

दोनों अगल-बगल खड़े हुए थे ।

उनको देखकर मैं भाव विह्वल होने लगा !

मेरा मंत्र जाप रुक गया

फिर से मेरी आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली ।

कुछ पांच 10 सेकंड तक वह स्थिति रही होगी । उसके

बाद वह दृश्य लुप्त हो गया और सब कुछ गायब हो

गया ।

मैंने आंखें खोल कर देखा तो मैं उसी प्रकार समुद्र के

बीच में बैठा हुआ था और दिन ढल चुका था । यानी

उस ध्यान की अवस्था में कम से कम 4-5 घंटे का समय

तो जरूर निकल गया होगा ।

अंधेरा छाने लगा था और मैं उस अनंत समुद्र के बीच

में उस प्लेटफार्म जैसे नीले स्थल पर बैठा हुआ था । मैं

रात भर से उसी अवस्था में बैठा रहा और मेरा मंत्र जाप

चलता रहा ।

उसके बाद मुझे नींद आ गई या बेहोश हो गया मुझे

कुछ पता नहीं चला

जब अगले दिन सुबह नींद खुली या बेहोशी टूटी तो मैं

उसी टापू पर था जहां पर हम लोग आकर रुके थे ।

थोड़ी देर में वह बोट जिसमें हम लोग आए थे वह आती हुई दिखने लगी । उस बोट में बाबा जी भी सवार थे । जैसे ही वह मेरे पास आए मैंने उनके चरण पकड़ लिए.....

उन्होंने मुझे उठाया !

मेरे सर पर हाथ फेरा और कहा - बेटा तूने राजराजेश्वरी साधना संपन्न की है । इस साधना के लिए जिस प्रकार की सत्त्विकता और धन के प्रति वैराग्य का भाग्य भाव होना चाहिए , वह तेरे अंदर विद्यमान है । दो वर्षों से मैं तेरा परीक्षण कर रहा था । तूने जो साधना संपन्न की है वह तुझे राजा बनाएगी । तेरा समय जल्द ही प्रारंभ होगा । रोज इस मंत्र का जाप कम से कम आधा घंटे करते रहना ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया फिर हम दोनों बोट में बैठ कर वापस लौट आए ।

वह अनुभव इतना अदभुत था कि उसके आनंद में मैं दिन भर अपनी झोपड़ी में ही पड़ा रहा ।

आजू बाजू में रहने वाले साथी भिखारी आकर मुझे उठाने की कोशिश करते रहे , लेकिन मैं नहीं उठा तो वह भी निराश होकर चले गए ।

दो दिन तक मैं अपनी झोपड़ी में ही पड़ा रहा ।

ऐसा लग रहा था जैसे मुझे सब कुछ मिल गया है और मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है ।

लगभग एक हफ्ते के बाद धीरे-धीरे मेरी स्थिति सामान्य होने लगी तो मैं वापस भीख मांगने के लिए जाने लगा ।

बाबा जी ने जिस प्रकार बताया था उसी प्रकार से रोज आधे घंटे मैं भगवती षोडशी का मंत्र जाप अवश्य करता था । बाकी समय मेरा ओम नमः शिवाय का जाप तो चलता ही रहता था

वह अनुभव मुझे अक्सर याद आता

और मैं फिर से आनंद में खो जाता !

एक प्रकार से मेरा जीवन बदल चुका था !

मेरे चेहरे पर हमेशा एक मंद मुस्कान बिखरी रहती !

भिखारी जितना दीन हीन और परेशान दुखी दिखाई देता है उसे उतना ही लाभ होता है । इसलिए भिखारी अपना

चेहरा दुखी बनाने की कोशिश करते थे ताकि लोग प्रभावित होकर उन्हें ज्यादा भीख दे सकें । पहले मैं भी इसका प्रयास करता था लेकिन अब मेरे लिए वह संभव ही नहीं हो पाता

क्योंकि मेरे चेहरे पर हमेशा एक मंद मुस्कान बिखरी रहती थी !

मुझे अंदर से अत्यंत खुशी का अनुभव होता रहता था !
ऐसा लगता जैसे शरीर के अंदर कोई आनंद का सोता बह रहा हो !

जिसमें से आनंद की रश्मिया, आनंद की लहरें मेरे पूरे शरीर में फैलती जा रही हो !

मुझे खुशी से आपूरित कर रही हो !

वह इतना अद्भुत अनुभव था कि उसके बाद चेहरे पर किसी भी प्रकार का विषाद या दुख या विकार भी दिखाना संभव नहीं था !

भीख देने के लिए आने वाले लोगों को भी अब मेरे सामने भीख डालने में अजीब लगने लगा था क्योंकि सारे लोग दुखी बनकर बैठे रहते थे और मैं मुस्कुराता हुआ बैठा रहता था ।

इस वजह से मुझे मिलने वाली भीख की मात्रा भी कम हो चुकी थी !

जिसे मैं भी महसूस कर रहा था !

मुझे लगता था कि मुझे दुखी चेहरा बनाकर बैठना चाहिए लेकिन कितना भी प्रयास करने से मैं वैसा नहीं कर पा रहा था !

ऐसे ही समय आगे चलता चला गया ।

उसके बाद बाबा के दरबार में जाने का सिलसिला भी उसी प्रकार से चलता रहा ।

मुझे पैसे कम मिलने लगे थे , इसलिए बाबा के हिस्से में भी कम दान जाता था ।

लेकिन दसवां हिस्सा अब भी नियम से भेंट चढ़ाता था

उस दिन के बाद बाबा से मेरी कोई बात नहीं हुई !

मैं जब भी जाता प्रणाम करता वे आशीर्वाद देते और वह अपने रास्ते मैं अपने रास्ते !!

इसी प्रकार चार पाँच महीने बीत गए ।

सावन का महीना आ गया था ।

भगवान शिव का महीना ।

सावन में भी सोमनाथ मंदिर में काफी रौनक रहती है ।

भक्तों का आना जाना लगा रहता है । इसलिए कमाई भी बढ़ गई थी ।

एक दिन जब मैं घर की ओर वापस आ रहा था तो एक सुनसान सड़क से गुजरते समय मैंने देखा की चमचमाती हुई कार सड़क पर तिरछी खड़ी हुई है ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसे अचानक रोक दिया गया हो.....

मुझे किसी अनहोनी की आशंका हुई ।

रात के समय इस प्रकार से कार सड़क पर नहीं खड़ी होती है इसलिए मेरा ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ ।

कार की ड्राइविंग सीट पर बैठा हुआ आदमी अपने सीने को पकड़कर दर्द से कराह रहा था !

उसने काफी कीमती वस्त्र पहने हुए थे और गले में सोने की मालाएँ पड़ी हुई थी ।

उसकी वेशभूषा से ऐसा लग रहा था कि वह काफी धनवान आदमी रहा होगा ।

उसकी अवस्था देख कर मुझे समझ में आ गया कि उस को किसी प्रकार की तकलीफ अवश्य है ।

मैंने उससे पूछने की कोशिश की लेकिन तब तक वह दर्द के मारे बेहोश होने लगा था !

हमारे मोहल्ले में एक डॉक्टर रहते थे ।

सरकारी अस्पताल से सीएमओ के पद से रिटायर डॉक्टर पटेल जो काफी बुजुर्ग थे 80 साल के , और सेवा भाव से वहां काम करते थे ।

हम गरीबों का इलाज बिल्कुल न्यूनतम मूल्य पर कर देते । वे आर्थिक रूप से सक्षम थे इसलिए उनको फीस का बहुत ज्यादा लोभ नहीं रहता था । कई बार मरीजों को फ्री में भी दवाइयां दे दिया करते थे । उनका क्लीनिक रात के दस बजे तक खुला रहता था । उस समय 9:30 का समय हुआ होगा । मुझे लगा कि उन्हें वहां पर लेकर जाना ठीक होगा । मैंने उन्हें कार से बाहर निकाला । तब तक वह लगभग बेहोश हो चुके थे ।

आसपास रिक्शा या सवारी जैसी कोई चीज मिलने का सवाल नहीं था क्योंकि 9:30 बजे तक सब कुछ शांत हो चुका था ।

उनकी दशा देखकर ऐसा लग रहा था कि समय ज्यादा नहीं है । मैं मध्यम कद काठी का था और लगभग मेरे आकार के सेठ जी भी थे । तभी एक ठेले वाला उधर से जाता हुआ दिखाई दिया । मैंने किसी तरह उनको ठेले पर लादा और क्लीनिक की तरफ चल पड़ा

चल पड़ा कहने की बजाय दौड़ पड़ा कहना ज्यादा अच्छा होगा ।

किसी तरह मैं उन्हें क्लीनिक तक पहुंचा पाया ।

सौभाग्य से डॉक्टर वहीं पर बैठे हुए थे ।

इन्हें देखते हैं उनको समझ में आ गया कि यह हार्टअटैक है । उन्होंने तत्काल जरूरी कदम उठाए और दवाइयां वगैरह दी और कुछ इंजेक्शन भी दिए ।

मैं वहीं पर बैठा रहा !

लगभग 2 घंटे के बाद उनको होश आया ।

डॉक्टर से उन्होंने बातें करनी प्रारंभ कर दी तब पता चला कि वे शहर के विख्यात व्यापारी मनसुख भाई झवेरी थे । वे डॉक्टर साहब को जानते थे ।

डॉक्टर पटेल ने उन्हे सारी बात बताई और यह भी बताया कि मैं उन्हें कैसे ठेले में लादकर यहां लेकर आया था ।

यह सुनकर उन्होंने मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की । डॉक्टर साहब ने मुझे बुलाया । उनको ठीक देखकर मैंने ऊपर देख हाथ जोड़ दिए और भगवान को नमस्कार किया ।

इधर सेठ जी ने मुझे हाथ जोड़कर नमस्कार किया और कहा - आज अगर तुम नहीं होते तो शायद मैं जिंदा भी नहीं होता ।

उन्होंने गले से सोने का हार निकाल कर मुझे देना चाहा तो मैंने मना कर दिया । फिर उन्होंने जेब में हाथ डाला और नोटों का एक बंडल मुझे दिया उसे भी मैंने मना कर दिया । उन्होंने ज्यादा आग्रह किया तो मैंने उसे ले लिया और डॉक्टर साहब को दे दिया ।

डॉक्टर साहब सकपका गए ।

मैंने कहा - डॉक्टर साहब आप हम लोगों के लिए भगवान है । इन पैसों से आप किसी गरीब के लिए दवाई की व्यवस्था कर देना ताकि वह भी स्वस्थ हो सके ।

डॉक्टर साहब ने मेरी बात सुनकर मेरी पीठ थपथपाई और पैसों को रख लिया ।

सेठ जी भी मेरी बात सुनकर बेहद प्रसन्न हुए ।
डॉक्टर साहब ने उनके घर पर फोन कर दिया था और
दूसरी गाड़ी और ड्राइवर आ चुके थे ।
सेठजी ने अपना कार्ड मुझे साइन करके दिया और
अगले दिन दस बजे आकर मिलने के लिए कहा ।

मैं अगले दिन उनके बताए पते पर पहुंच गया ।
वह एक आलीशान बंगला था । जिसके सामने दो गार्ड
खड़े हुए थे । एक कुत्ता अंदर बंधा हुआ था ।
मेरी वेशभूषा भिखारियों जैसी थी इसलिए मुझे देखते
ही गार्ड सतर्क हो गए !
जैसे मैं अभी घर में घुसकर कोई चोरी कर डालूंगा ।
यह एक सामान्य मानसिकता है कि गरीब आदमी कुछ
गलत करने के लिए आ रहा है लेकिन आमतौर पर ऐसा
नहीं होता

खैर....

गार्ड सतर्क हो गए कि मैं अगर किसी प्रकार की गड़बड़
करूं

तो मेरी धुलाई कर सकें ।

मैं उनकी ओर बढ़ रहा था

मेरी वेशभूषा देखकर सभी के चेहरे के भाव बदल गए थे !

सेठ जी ने बताया कि यही वह आदमी है जिसने कल मेरी जान बचाई थी !

यह बात सुनते ही उनकी पत्नी उठकर मेरी तरफ आ गई !
उसने मुझे नमस्कार किया और आभार व्यक्त करने लगी ।

मैंने देखा है कि जो खानदानी रईस होते हैं या जिनके पास अकूत धन संपत्ति होती है उनकी भाषा और व्यवहार दोनों बेहद मर्यादित होते हैं ।

इसके ठीक विपरीत जिन को अचानक से धन प्राप्त हो गया होता है ! या एक दो पीढ़ी पहले वे गरीबी से उठकर धनवान की स्थिति पर पहुंचे होते हैं , उनके तेवर हमेशा आसमान में रहते हैं । उनका व्यवहार ऐसा होता है जैसे वे आसमान से उतर कर आये हों ! और बाकी सारे मनुष्य कीड़े मकोड़े हो ।

सेठ जी और उनके पत्नी के व्यवहार से मुझे ऐसा लगा कि वह अवश्य खानदानी धनवान होंगे । सेठानी ने मुझे कुर्सी पर बैठने का इशारा किया ।

मैं जमीन पर बैठने लगा क्योंकि कुर्सी पर बैठने की आदत नहीं थी । लेकिन उन्होंने मुझे पकड़कर कुर्सी पर बैठा दिया ।

सारे लोग मुझे एहसान भरी निगाहों से देख रहे थे और मैं शर्म से पानी पानी हुआ जा रहा था और यह सोच रहा था कि अब मैं यह कहां आ फंसा ! इससे अच्छा होता कि मैं यहां आता ही नहीं ।

सेठ जी ने मुझसे पूछा - तुम मेरे साथ काम करोगे ?
मैंने कहा - सेठ जी ! मैं कोई काम नहीं जानता ! मैंने बचपन से सिर्फ भीख मांगी है इसलिए वही एक काम है जो मैं जानता हूं ।

सेठ जी बोले - तुम उसकी चिंता मत करो । काम मैं सिखा दूंगा । तुम करना चाहते हो तो बताओ.....
भव्य और आलीशान माहौल में मैं निरीह सा खड़ा हुआ था !

वहां पर मेरे जैसा आदमी ना तो बोल ही नहीं सकता था । इसलिए मैंने सहमति में सिर हिला दिया ।
उसके बाद उन्होंने मुझे मैनेजर के हवाले कर दिया और कुछ निर्देश दे दिए ।

उसके बाद मेरा कायाकल्प प्रारंभ हो गया । मैनेजर मुझे सबसे पहले कपड़े की दुकान पर ले गया और उसने मुझे कुछ ठीक-ठाक कपड़े खरीद कर दिए उन्हें पहनकर जब मैंने आईने में अपने आप को देखा तो मैं खुद को नहीं पहचान पा रहा था ।

जिंदगी में पहली बार मैंने इतने अच्छे कपड़े पहने थे । मैं मैनेजर के साथ में काम सीखने लगा ।

आश्चर्य की बात यह थी कि वह जो भी बातें मुझे समझाते , वह बड़ी आसानी से मुझे समझ में आने लगी थी । यह देखकर वह भी बड़ा प्रसन्न होता था ।

मैनेजर लगभग 65 वर्ष की आयु का व्यक्ति था । जो 40 वर्षों से उसी परिवार में काम कर रहा था । वह सेठ जी के पिताजी के समय से वहां मैनेजर था ।

मैनेजर ने मुझे सेठ जी के परिवार के बारे में भी सब कुछ बताया । उनके दादा के समय से ही वे कपड़ों का व्यापार कर रहे थे । सेठ जी की एक ही बेटी थी जो भरी जवानी में विधवा हो गई थी । विवाह के दूसरे दिन दोनों पति - पत्नी लॉन्ग ड्राइव पर निकले थे , तभी उनकी गाड़ी खाई में जा गिरी , इस दुर्घटना में सेठ जी के दामाद की मृत्यु हो गई । पति के निधन के बाद उसका

उसके बाद मेरा कायाकल्प प्रारंभ हो गया । मैनेजर मुझे सबसे पहले कपड़े की दुकान पर ले गया और उसने मुझे कुछ ठीक-ठाक कपड़े खरीद कर दिए उन्हें पहनकर जब मैंने आईने में अपने आप को देखा तो मैं खुद को नहीं पहचान पा रहा था ।

जिंदगी में पहली बार मैंने इतने अच्छे कपड़े पहने थे । मैं मैनेजर के साथ में काम सीखने लगा ।

आश्चर्य की बात यह थी कि वह जो भी बातें मुझे समझाते , वह बड़ी आसानी से मुझे समझ में आने लगी थी । यह देखकर वह भी बड़ा प्रसन्न होता था ।

मैनेजर लगभग 65 वर्ष की आयु का व्यक्ति था । जो 40 वर्षों से उसी परिवार में काम कर रहा था । वह सेठ जी के पिताजी के समय से वहां मैनेजर था ।

मैनेजर ने मुझे सेठ जी के परिवार के बारे में भी सब कुछ बताया । उनके दादा के समय से ही वे कपड़ों का व्यापार कर रहे थे । सेठ जी की एक ही बेटी थी जो भरी जवानी में विधवा हो गई थी । विवाह के दूसरे दिन दोनों पति - पत्नी लॉन्ग ड्राइव पर निकले थे , तभी उनकी गाड़ी खाई में जा गिरी , इस दुर्घटना में सेठ जी के दामाद की मृत्यु हो गई । पति के निधन के बाद उसका

मानसिक संतुलन बिगड़ गया था । उसकी हालत ऐसी हो गई थी कि उसका सारा कार्य उसकी अटेंडेंट को ही करना होता था । उस समय उसकी उम्र पच्चीस छब्बीस साल थी । उसके अलावा सेठ जी को कोई और संतान नहीं थी ।

मैनेजर बेहद अनुभवी और बुद्धिमान व्यक्ति थे । सेठ जी के हर कारोबार पर उसकी भरपूर पकड़ और जानकारी थी । उसने धीरे-धीरे मुझे वह सारी जानकारी देना प्रारंभ कर दिया । मैं बड़ी आसानी से उनको पकड़ता जा रहा था । छह महीने के अंदर मुझे सेठ जी के कारोबार की एक एक चीज पता हो गई । उन्होंने मुझे इतनी अच्छी तरह से समझाया था कि मैं अब उन्ही के समान होशियार बनता जा रहा था ।

किसी भी क्षेत्र में अगर आपको अच्छा गुरु मिले तो आपके अंदर की क्षमताओं का भरपूर विकास होता है ।

मेरी बुद्धिमानी और समझ बूझ की सेठजी की फैक्ट्री और अन्य व्यवसाय वाले भी दाद देते थे । उनको लगता था कि मैं बहुत बुद्धिमान और किसी बड़ी जगह से पढ़ाई करके आया हुआ व्यक्ति हूं । जबकि मुझे सिर्फ लिखने

पढ़ने का ज्ञान था, वह भी इसलिए क्योंकि भिखारियों की बस्ती में एक महिला बच्चों को और बुजुर्गों को अक्षर ज्ञान कराने के लिए आती थी । वहीं पर मुझे इसकी जानकारी हुई थी ।

मैनेजर ने मुझे अंग्रेजी और हिंदी के दो ट्यूशन लगा दिए थे । जिनके पास मुझे एक-एक घंटे रोज पढ़ाई करनी पड़ती थी । उस कड़ी ट्रेनिंग के चलते 6 महीने में मेरी हिंदी और अंग्रेजी दोनों काफी अच्छी हो चुकी थी । काम की समझ के साथ जब मैं बातें सामने रखता था तो सामने वाला व्यक्ति मंत्र मुग्ध होकर सुनता रह जाता था ।

यह वास्तव में मेरी अंदर की प्रतिभा नहीं थी बल्कि बाबा जी के द्वारा दिए गए श्री विद्या के मंत्र का चमत्कार था । उन्होंने जो साधना मुझे संपन्न करवाई थी, उसके चलते मुझे सारी बातें बड़ी आसानी से और काफी सूक्ष्मता से समझ में आने लगी थी । कई बार मुझे सामने खड़े हुए व्यक्ति के मन में क्या चल रहा है ? यह भी पता चल जाता था । उसके हिसाब से जब मैं उसके सामने अपनी बात रखता था तो वह पूरी तरह

प्रभावित होकर मुझे बहुत होशियार आदमी समझ कर मेरे सामने सरेंडर हो जाता था ।

कई बार कंपनी और फैक्ट्री में विवाद की स्थिति में भी मैनेजर के साथ मैं जाता था । शुरु शुरु में उनके काम करने के तौर-तरीकों को देखकर बाद में मैंने अकेले भी ऐसी समस्याओं को हैंडल करना चालू कर दिया । धीरे धीरे ऐसी समस्याओं को मैं मैनेजर से भी ज्यादा बेहतर ढंग से हैंडल कर लेता था । इन सारी बातों की रिपोर्ट सेठ जी के पास अलग-अलग माध्यमों से पहुँचती रहती थी और वह मन ही मन अत्यंत प्रसन्न हुआ करते थे । बाबा जी के यहां हर हफ्ते की हाजिरी मेरी तब भी लगातार जारी थी । मुझे उनके पास बैठने से ही बेहद आनंद की अनुभूति होती थी । वह भी मुझे देखकर काफी प्रसन्न होते थे । मेरी तरक्की को देखकर मुझे पीठ थपथपा कर प्रोत्साहित भी करते थे ।

तीन-चार साल तक मैं उनके यहां मैनेजर का काम करता रहा और सेठजी मुझसे काफी संतुष्ट हो गए । मुझे भी वहां काम करके बेहद खुशी होती थी क्योंकि सेठ और उनका परिवार मुझे काफी सम्मान देता था । मैं भी उनके

घर के कार्य को अपनी जिम्मेदारी समझ कर पूरा करता था ।

पुराने मैनेजर ने अब स्वेच्छा से रिटायरमेंट ले लिया था क्योंकि उनका बेटा मरीन इंजीनियर था । जिसकी पढ़ाई का पूरा खर्चा सेठ जी ने हीं उठाया था । वह ऑस्ट्रेलिया में सेटल हो गया था । मैनेजर साहब की पत्नी का देहांत हो चुका था । अपने आखिरी समय में वे बेटे के साथ रहना चाहते थे ।

सेठ जी से वे अपनी इच्छा व्यक्त कर चुके थे लेकिन सेठ जी ने उनसे सिर्फ यही कहा था कि अपने जैसा एक मैनेजर मुझे दे दो फिर तुम जाने के लिए फ्री हो । संभवतः इसीलिए उन्होंने मुझे भरपूर ट्रेनिंग लेकर अपने जैसा बना दिया था ।

जिस प्रकार से मैं काम पकड़ चुका था उसको देखकर वह स्वयं भी निश्चिंत हो गए थे ।

उनकी बात सेठ जी ने भी मान ली थी.....

जिसके बाद वे भी अपने बेटे के पास ऑस्ट्रेलिया चले गए ।

अब सारी जिम्मेदारी मुझ पर थी जिसे मैं बखूबी निभा रहा था ।

जैसा कि मैंने बताया था सेठ जी हार्ट पेशेंट थे । उन्हे एक बार और अटैक आ चुका था । उस अटैक के बाद उन्होंने मुझे अपने बंगले पर ही रहने के लिए बुला लिया । अब बंगले पर ही रहने लगा । उनको तीसरा और आखिरी अटैक आया । इस बार उनकी स्थिति बहुत ज्यादा खराब थी । अंतिम समय में उन्होंने मुझे बुलाया ।

जब मैं वहां पर पहुंचा तो उनकी पत्नी और बेटी दोनों वहां मौजूद थे । संभवतः डॉक्टर ने भी उनकी संभावित मृत्यु की घोषणा कर दी थी ।

मुझे देखते ही उनकी आंखों में प्रसन्नता छलकने लगी ।

मैं आगे बढ़ कर उनके पास कुर्सी पर बैठ गया । उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और अपने माथे से लगा लिया ।

जैसे वे कहना चाहते हो कि अब तुम्हें ही सब कुछ देखना है ।

मैं उनका आशय समझ गया था मैंने सहमति में सिर हिलाया

उसके बाद उन्होंने अपनी अंतिम सांस ले ली ।

उनकी मृत्यु के बाद सारे कर्मकांड मैंने ही पूरे किए ।

उनकी अंतिम इच्छा यही थी

मैं सारा बिज़नस पहले से ही संभाल रहा था इसलिए कोई दिक्कत नहीं आई वह सब उसी तरह से चलता रहा ।

तेरहवीं के बाद उनका खानदानी वकील घर आया ।
सेठानी , बिटिया उनके साथ बैठे ! मुझे भी बुलाया गया

वे सेठजी की वसीयत पढ़ने आए थे

उन्होंने पढ़कर सुनाई जिसमे उन्होंने सब कुछ अपनी पत्नी के नाम लिखा था ।

यह स्वाभाविक था । इसलिए हम सब ने सहमति जताई । सेठानी की आँखों मे कुछ अलग ही भाव थे । वह मुझे गहरी निगाहों से देख रही थी जैसे मुझे तौल रही हो ।

जब उन्होंने सब पढ़ लिया तो मैंने उनसे ऑफिस जाने की इजाजत मांगी और जाने लगा ।

सब कुछ पहले जैसा ही चलता रहा ।

मैं ही सब कुछ देख रहा था और सारी बातें अब सेठजी के बजाय सेठानी और बेटी को बताता था

इसी तरह छह माह गुजर गए

पहले उनकी बेटी मुझसे किसी प्रकार का बातचीत का व्यवहार नहीं रखती थी लेकिन सेठ जी की मृत्यु के बाद कभी-कभी वह मुझसे बात कर लेती थी ।

कभी-कभी मैं उसे घुमाने के लिए लेकर जाता था जिसमें उसकी अटेंडेंट भी मेरे साथ होती थी । उसके मनोचिकित्सक के पास ले जाने का कार्य भी मेरा होता था अधिकांश समय वह स्वयं बंगले पर आ जाया करते थे ।

इसी प्रकार से समय आगे बढ़ता जा रहा था ।

सेठानी की तबीयत भी धीरे-धीरे खराब होने लगी । उन्हें अस्थमा की समस्या पहले से थी सेठ जी के देहांत के बाद संभवतः दुख की वजह से वह समस्या ज्यादा बढ़ गई और उन्हें कभी-कभी अस्थमा के दौरों पड़ने लगे ।

उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा था कि उनके पास ज्यादा समय नहीं है । एक दिन सेठानी ने मुझे बुलाया और मुझसे बिटिया से विवाह कर लेने के लिए कहा । यह मेरे लिए अविश्वसनीय ऑफर था ।

मैं तो उनका नौकर था ! यहाँ तो रिश्ते की बात चल रही थी ।

शायद वह अपनी बेटी का भविष्य सुरक्षित कर लेना चाहती थी और उन्हें वह मुझ में दिखाई दे रहा था ।

मैं सेठजी को दोनों की देखभाल का वचन पहले ही दे चुका था इसलिए मेरे इनकार करने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था ।

एक सादे समारोह में हमारा विवाह हो गया ।

मेरी इच्छा थी कि मैं बाबा जी के मंदिर में विवाह करू ।

सेठानी जी ने मेरी बात का मान रखा और हम दोनों का विवाह बाबा जी के आशीर्वाद से इसी शिव मंदिर में संपन्न हुआ.....

मेरा नित्य श्रीविद्या का मंत्र जाप जारी था और मैं रंक से राजा बन चुका था ।

अब मेरी हैसियत मेनेजर से मालिक की हो चुकी थी ।

अब मैं सेठजी का दामाद बन चुका था ।

सभी लोगों की नजरें बदल चुकी थी । सब अब मुझे ज्यादा सम्मान की दृष्टि से देखते थे ।

लेकिन मैं पहले की तरह ही सभी से व्यवहार करता रहा

मैं सेठ जी की बिटिया का भी भरपूर ख्याल रखता अब पत्नी हो जाने के कारण बहुत सारी चीज जो मैं पहले नहीं कर सकता था वह भी मैं कर लेता था ।

उसे कभी-कभी मैं बाहर घुमाने ले जाता ।

एक बार मैं उसे लेकर शिव मंदिर पहुंचा । बाबा उस समय बाहर ही बैठे हुए थे ।

उस दिन बाबा कुछ अलग ही मूड में थे ।

मैं चरण स्पर्श करके हटा लेकिन मेरी पत्नी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था इसलिए वह कुछ नहीं कर रही थी । खड़ी हुई थी ।

तभी बाबा का कड़क स्वर गुंजा - तू चरण स्पर्श नहीं करेगी क्या ?

उनके इतना कहते ही वह चरण स्पर्श करने झुकी ।

जैसे ही उसने चरण स्पर्श किया बाबा जी ने उसके सीने पर एक जोर की लात मारी ।

इतनी जोरदार लात थी कि वह पीछे की तरफ पलट कर गिर गई ।

मैं उसे उठाने लगा लेकिन वह बेहोश हो चुकी थी ।

बाबा ने मुझे अलग हटने का इशारा किया । मैं हट कर खड़ा हो गया । वह जमीन पर पड़ी हुई थी ।
मुझे बाबा पर विश्वास था कि वह कुछ भी गलत नहीं करेंगे ।

बाबा ने अपने फरसे को उसके सिर के चारों तरफ तीन बार गोल गोल घुमाया और उसका फाल ठीक माथे के बीच में रख दिया और हल्का सा खींच दिया ।
माथे पर घाव बन गया और उसमें से फलफलाता हुआ खून बाहर आने लगा ।

यह सब देख कर मैं विचलित हो रहा था !
लेकिन इतने सालों से बाबा जी के पास आते रहने की वजह से मैं जानता था कि वे बेवजह कुछ भी नहीं करते ।

उसका सारा चेहरा खून से लाल हो चुका था । बाबा ने अपनी कमर पर बंधी हुई पोटली में हाथ डाला और उसमें से भस्म निकाली और उसके ऊपर छिड़क दी !
उसके बाद उन्होंने फारसा हाथ में लिए लिए तीन बार उसकी परिक्रमा की
और बोले - इसे रात को ले जाना ।

उस समय शाम हो रही थी ।

चार पाँच घंटे तक वह उसी प्रकार पड़ी रही और उसके माथे से खून धीरे-धीरे रिसता रहा ।

मेरे मन में विभिन्न प्रकार के विचार आ रहे थे ।

सबसे बड़ा विचार यह था कि घर जाकर जब माताजी इसके सर का यह घाव देखेगी तो मैं उसे क्या जवाब दूंगा ?

खैर

रात ग्यारह बजे बाबाजी ने उसे घर ले जाने के लिए कहा ।

मैंने जल्दी से गीले कपड़े से उसका माथा पोछने की कोशिश की ।

लेकिन बाबा ने मना कर दिया कहा - ऐसे ही ले जा । कल नहला देना ।

मैं घबराता हुआ उसे उसी प्रकार लेकर घर आ गया ।

मैंने उसके सर पर घूँघट नंबर डाल दिया था ताकि किसी को उसका घाव दिखाई ना दे ।

बस डर यह था कि कपड़े में लगा हुआ खून ना दिख जाए ।

सौभाग्य से माताजी सोई हुई थी और नौकरों को मैंने जाने के लिए कह दिया और खुद उसे लेकर कमरे में आ गया । कमरे में पहुंचकर मैंने उसे बिस्तर पर लिटा दिया और उसके बगल में बैठ गया ।

मेरी इच्छा हो रही थी कि मैं उसके माथे मुंह पर पट्टी कर दूं लेकिन बाबा ने मना कर दिया था इसलिए मैं उसके बगल में बैठा उसे देखता रहा वह दोस्ती अब भी बेहोश थी

वहीं बैठे बैठे मेरी भी नींद लग गई !

सुबह लगभग 5 बजे मेरी नींद खुली और उसके बाद मैंने उसे उठाया तो वह उठ गई । उसके बाद मैंने सहारा देकर उसे बाथरूम पहुंचाया और नहलाया ।

पानी उसके सर से होकर खून को बहा ले गया

तभी मैंने जो देखा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा

क्योंकि उसके माथे का घाव पूरी तरह से गायब हो चुका था

उसके बाद गाउन पहनाकर मैंने उसे कमरे में बैठा दिया और खुद फ्रेश होने चला गया

जब वापस आया तो देखा वह बिस्तर सजा रही थी ।

यह बेहद आश्चर्यजनक बात थी क्योंकि ऐसे कोई काम करते हुए मैंने उसे नहीं देखा था ।

वह कुछ भी नहीं करती थी ऐसे ही बैठी रहती थी ।

उस दिन के बाद उसके अंदर व्यापक परिवर्तन होने चालू हो गए और छह महीने के बाद वह पूरी तरह से ठीक हो गई ।

अब वह पूरी तरह ठीक है और हमारे दो बच्चे भी हैं

इतना कह कर उन्होंने बाबा जी के तरफ देख कर फिर से प्रणाम किया और चले गए ।

मैं मन ही मन श्री विद्या के चमत्कार को नमस्कार करता हुआ बाबा जी के विराट व्यक्तित्व को समझने की चेष्टा करता हुआ खड़ा रह गया

मेरे मन के भावों को समझ कर वह मेरी तरफ देख कर मुस्कुराए और फिर अपने काम में लग गए

हमारी साधना आगे चलती रही

साधना के बीच में बाबा चंड भैरव विभिन्न प्रकार की जानकारीयां भी प्रदान करते थे । एक दिन शिवलिंग

के विषय में चर्चा चल रही थी । उन्होंने सबसे पहले विभिन्न पदार्थों से बनने वाले शिवलिंग का महत्व बताया ।

वे बोले -भगवान शिव के पूजन में शिवलिंग का प्रयोग होता है। शिवलिंग के निर्माण के लिये स्वर्णादि विविध धातुओं, मणियों, रत्नों, तथा पत्थरों से लेकर मिट्टी तक का उपयोग होता है । इसके अलावा रस अर्थात् पारे को विविध क्रियाओं से ठोस बनाकर भी लिंग निर्माण किया जाता है,

इसके बारे में कहा गया है कि,

मृदः कोटि गुणं स्वर्णम्, स्वर्णात्कोटि गुणं मणिः,

मणेः कोटि गुणं बाणो, बाणात्कोटि गुणं रसः

रसात्परतरं लिंगं न भूतो न भविष्यति ॥

अर्थात् मिट्टी से बने शिवलिंग से करोड गुणा ज्यादा फल सोने से बने शिवलिंग के पूजन से, स्वर्ण से करोड गुणा ज्यादा फल मणि या रत्न से बने शिवलिंग के पूजन से, मणि से करोड गुणा ज्यादा फल बाणलिंग (नर्मदा नदी से निकलने वाले शिवलिंग) के पूजन से तथा बाणलिंग से करोड गुणा ज्यादा फल रस अर्थात् पारे से

बने शिवलिंग के पूजन से प्राप्त होता है। आज तक पारे से बने शिवलिंग से श्रेष्ठ शिवलिंग न तो बना है और न ही बन सकता है।

शिवलिंग कोई भी हो जब तक भक्त की भावना का संयोजन नहीं होता तब तक शिवकृपा नहीं मिल सकती।

इसके बाद उन्होंने अपनी कमर में बंधी हुई थाली में हाथ डाला और एक सुनहरे रंग का चमकता हुआ शिवलिंग बाहर निकाला जो मुश्किल से 1 इंच लंबा रहा होगा। ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह स्वर्ण से बना हुआ हो लेकिन उसकी सतह स्वर्ण के जैसी पूरी चिकनी नहीं थी।

बाबा ने बताया - यह रस लिंग है, जो पारे से बना हुआ है।

मेरे मन में संदेह आया - पारा तो लगभग चांदी के जैसे कलर का होता है, फिर यह सोने जैसे कलर का कैसे हुआ।

बाबा मेरे मन के भाव को पढ़ गए। मुस्कुराए और बोले - इसको मैंने स्वर्ण ग्रास दिया है इसलिए इसका रंग

सुनहरा है । मेरे झोले से निकलने वाले सामग्रियों का रहस्य यही है । इस शिवलिंग को स्वर्ण ग्रास देकर मैंने अक्षय पात्र साधना संपन्न की है । इसकी उपस्थिति मेरे झोले को कल्प वृक्ष जैसा बना देती है , जिसमें से जो चाहो वह निकल जाता है.....

भगवान शिव ने यक्षराज कुबेर को अक्षय पात्र साधना संपन्न करवाई थी ।

उन्हें देवताओं का कोषाध्यक्ष बनाया था ।

इसलिए उनका भंडार कभी भी खत्म नहीं होता है ।

अक्षय का मतलब होता है =जो कभी नष्ट ना हो या समाप्त ना हो अर्थात जो अनंत हो उसे अक्षय कहते हैं।

अब जाकर मुझे समझ आया कि उनके झोले में से इस प्रकार लगातार वस्तुएं कैसे निकलती रहती है । भगवान भोलेनाथ तो जगदंबा के पति हैं !

इस सृष्टि के स्वामी !

उनकी कृपा से तो कोई भी चीज आपके पास आ ही सकती है.....

वही बाबा के झोले में स्थापित थे ।

इसके बाद उन्होंने ज्योतिर्लिंगों के विषय में बताया ।

उन्होंने आगे बताना प्रारंभ किया - भगवान शिव आदि गुरु है । उनका अस्तित्व और उनकी विशिष्टता दोनों इस बात में है कि वे निरंतर ध्यान रत है !

निरंतर चिंतनशील है !

निरंतर नवीन का सृजन करने के लिए प्रयास करते रहते हैं ।

वह आदिगुरु है ।

सप्त ऋषियों ने उन्हीं से ज्ञान प्राप्त किया ।

सप्त ऋषियों से ही हमारी गुरु परंपरा प्रारंभ होती है ।

वहीं से गुरु श्रृंखला आगे बढ़ती है ऐसा माना जाता है ।

भगवान शिव के अंदर जो अद्भुत ज्ञान का प्रकाश है वहीं

इस पूरे विश्व में ज्ञान का आलोक फैलाता है । जो भी

गुरु है उनके अंदर का जो शिवत्व है वही ज्ञान उनको गुरु

बनाता है ।

मैंने पूछा - बाबा पाखंडी गुरु जी तो बहुत सारे हैं ।

असली गुरु को कैसे पहचाने ।

बाबा बोले - हमारी दिक्कत यह है कि हम शरीर को

देखते हैं । गुरु के कपड़ों की चमक दमक और उसके

आश्रम का साइज देखते हैं । जिस दिन ज्ञान के आधार

पर गुरु बनाएंगे यह दिक्कत नहीं आएगी ।

देह की अपनी सीमा है । गुरु जिस परिवेश में पैदा हुआ है उसके अंदर उस प्रकार की प्रवृत्तियां होना स्वाभाविक है । महत्व उसके व्यवहार या तौर-तरीकों का नहीं है, बल्कि महत्व उसके अंदर स्थित ज्ञान का है । जिसे प्राप्त करना और उसे जीवन में उतारना ज्यादा जरूरी है । हम इस महत्वपूर्ण तथ्य को भूल जाते हैं और पैर छूने या उसके अन्य क्रियाकलापों और चमत्कारों को देखने में लग जाते हैं । इसलिए ज्ञान के मामले में पिछड़ जाते हैं ।

मुझे ही देख लो । मेरे पास अपनी समस्या बताने और समस्या का समाधान मांगने आने वालों की संख्या ज्यादा है । ज्ञान की तलाश में आने वाले लोग बहुत कम है ।

हर कोई बैठे बैठे अपनी समस्या का समाधान करा लेना चाहता है ।

पैर छू लूं और समस्या हल हो जाए ।

बाबा सर पर हाथ रख दे और मेरा काम हो जाए ।

इसी प्रकार की भावना सबके अंदर होती है ।

अगर इनमें से 100 लोगों को मंत्र जाप या साधना करने के लिए कहो तो यकीन मानो उसमें से 98 लोग नहीं करेंगे । अधिकांश लोगों को भगवान के ऊपर विश्वास नहीं है । बहुत सारे लोग डर के मारे नमस्कार करते हैं और बहुत सारे लोग “हो सकता है मेरा काम बन जाए ! नमस्कार करने में क्या जाता है” इस भावना के साथ नमस्कार करते हैं । इसलिए अधिकांश लोगों को ईश्वरी कृपा नहीं मिलती है ।

खैर

उन्होंने विषयांतर किया और आगे बताना चालू किया - भगवान शिव की ज्ञान की परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए सप्त ऋषियों और उनके बाद के ऋषियों ने प्रयास किया ।

वह इस नतीजे पर पहुंचे कि मनुष्य के अंदर की शक्तियों को विकसित करने का और उन्हें ज्यादा चेतनावान बनाने का एक तरीका यह है कि भगवान शिव के स्वरूपों को स्थापित किया जाए ।

ऐसे स्वरूप जिसके अंदर भगवान शिव के ज्ञान की चेतना हो ।

उनका स्वरूप अंश में विराजमान हो ।

जिसके पास बैठने से मनुष्य का ध्यान लग जाए ।

अर्थात् ऐसा शिवलिंग जिसके पास बैठने से और उस के सानिध्य में रहने से मनुष्य को ध्यान की अनुभूति होने लगे ।

उसे ध्यानलिंग कहा गया ।

इस प्रकार की संरचनाएं पूरे विश्व में पाई जाती है ।

ध्यान लिंग का निर्माण कई प्रकार से किया गया और उन सब के पीछे ऋषियों का चिंतन यही था कि सामान्य मनुष्य भी ध्यान लिंग के सानिध्य में ध्यान का अनुभव कर सके और आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर हो सके ।

मैंने पूछा - ध्यान का इतना महत्त्व क्यों है ?

बाबा मुस्कुराए - मानव का शरीर असीमित संभावनाओं का भंडार है । मनुष्य के पास राक्षस बनने के अवसर है और देवता बनने के अवसर भी हैं । मनुष्य तो वह है ही

ऐसा अवसर केवल मनुष्यों के पास उपलब्ध है ।

देवता चाहे तो भी ना तो मनुष्य बन सकता है और ना ही राक्षस ।

उसी प्रकार राक्षस भी इच्छा होने पर या प्रयास करने पर भी न तो मनुष्य बन सकता है और ना ही देवता ।

इसलिए मनुष्य जन्म मिलना बड़े सौभाग्य की बात है क्योंकि यहां पर असीमित संभावनाएं हैं । ध्यान इन संभावनाओं का मूल है ।

जब मस्तिष्क ध्यानस्थ अवस्था में जाता है तो उसके अंदर स्थित अनेक प्रकार की विशेषताएं जागृत होने लगती हैं ।

उदाहरण के लिए अगर कोई पढ़ने वाला बच्चा है और वह नित्य 5 मिनट 10 मिनट या 15 मिनट किसी एक बिंदु पर अपना ध्यान लगाने की कोशिश करता है तो उसकी याद रखने की क्षमता अपने आप बढ़ जाएगी ।

इसी प्रकार कोई कामकाजी व्यक्ति है और वह नित्य अभ्यास करके किसी भी चीज पर ध्यान लगाकर रखता है तो उसे भी अपने कार्य क्षमता में वृद्धि दिखाई देगी । यह तो सामान्य गृहस्थों के लिए लाभ है ।

ठीक ऐसे ही जो साधना कर रहे हैं या आध्यात्मिक मार्ग पर गतिशील हैं, वे जब ध्यान का उपयोग करते हैं, उस का सहारा लेते हैं तो उनके अंदर की आध्यात्मिक शक्तियां विकसित होने लगती है । चेहरे पर एक

अलग तेज दिखाई देने लगता है । उनका आभामंडल प्रकाशमान होने लगता है

मैंने पूछा - ध्यान में ऐसा क्या है जो इस प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं ?

बाबा ने बताया - हमारा मस्तिष्क और हमारा मन अत्यंत शक्तिशाली है । मन हमेशा इधर-उधर भागता रहता है । आप अगर ध्यान से उसकी गतिविधियों को देखेंगे तो आपको स्वयं आश्चर्य होगा कि वह कितना प्रतिभाशाली है ।

कभी आप अपने बचपन की किसी घटना को याद करेंगे

कभी माँ बाप को !

कभी स्कूल की किसी घटना को याद करेंगे ...

तो कभी जवानी की घटना को !

कभी प्रेमिका को याद करेंगे ,

उसके साथ बिताए गए क्षणों को ...

तो कभी पत्नी को याद करेंगे

या अपने विवाह को

उन क्षणों में आप उस घटना को फिर से जी लेते हैं !

ऐसा महसूस कर लेते हैं जैसे आप वहां पर स्वयं मौजूद हो

एक किस्म का टाइम ट्रेवल

उसे आप रोकने की कोशिश करेंगे तो आपको बड़ी मुश्किल होगी ।

ध्यान मन को किसी एक विषय पर केंद्रित करने के लिए प्रयास करने का नाम है ।

यह कोई भी विषय हो सकता है ।

उदाहरण के लिए अगर आपको जलेबी पसंद है तो आप जलेबी के विषय में सोचते हुए भी ध्यान लगा सकते हैं ।

मूल विषय यह है कि आपको एक बिंदु पर ध्यान को केंद्रित करना है जिसके लिए आपको प्रयास करना है ।

जब आप ऐसा करते हैं तो बहुत ज्यादा जोर नहीं देना है , धीरे-धीरे कोशिश करनी है ।

जब पांच दस मिनट का अभ्यास होने लगे तो आप खुद अपने आप में इसका फर्क देखने लगेंगे ।

अध्यात्म के क्षेत्र में जब ध्यान का समय बढ़ता जाता है तो आपको अनेक प्रकार के दिव्य अनुभव प्राप्त होते हैं । जिसमें बिम्बात्मक दर्शन भी शामिल है ।

ध्यान का महत्व अब पश्चिमी देशों के वैज्ञानिक भी स्वीकार करने लगे हैं ।

जब योग योगा हो गया..... तब हमने उसे स्वीकार करना शुरू किया क्योंकि हम भारतीयों को अपनी चीजें बेकार और नकारा लगती हैं ।

अब जब ध्यान मेडिटेशन के रूप में आने लगा तो हम उसे भी धीरे-धीरे स्वीकार कर रहे हैं !

आने वाले समय में ध्यान योग के समान जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाएगा और लोग इसके महत्व को समझ पाएंगे ।

मैंने बाबा से पूछा - क्या अभी भी ध्यान लिंग यहां पर मौजूद है ?

उन्होंने मुझे बड़ी सूक्ष्मता से देखा ।

उसके बाद माधुरी को देखा !

फिर मुझे देखा

ऐसा लगा जैसे उनकी आँखें हमारे आत्मा के अंदर तक प्रवेश कर गए हो ।

उनकी आंखें किसी एक्स-रे की बीम की तरह हमारा परीक्षण कर रही थी ।

फिर उनके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कुराहट आई ।

वे बोले - यहाँ पर आने और श्री विद्या प्राप्त करने की वजह यह है कि तुम भी ध्यान लिंग बनाने वाले सिद्ध योगियों की श्रंखला का एक अंश हो.....

तुमने भी इस प्रकार के ध्यान लिंग बनाने में अपना योगदान दिया है ।

अभी भी हमारे देश में इस प्रकार के ध्यानलिंग मौजूद है क्या तुम उन्हें देखना चाहोगे ?

यह तो नेकी और पूछ पूछ वाली बात थी ।

मैंने माधुरी की तरफ देखा !

उसकी स्थिति भी लगभग मेरे जैसी थी !

वह भी जाने को और देखने को बिल्कुल तैयार थी ।

हमारी उत्सुकता देखकर बाबा भी मुस्कुराए और उन्होंने हमें अपने साथ आने का इशारा किया और उठ कर चल दिए ।

हम उनके पीछे-पीछे चलते हुए उनके कक्ष में पहुंचे ।

अंदर आने के बाद उन्होंने दरवाजा बंद कर लिया ।

इसके बाद उन्होंने अपने झोले में हाथ डाला और उस शिवलिंग को अपनी मुट्ठी में थाम लिया । दूसरे हाथ को उन्होंने हमारी तरफ बढ़ाया मैंने आगे बढ़ कर उनका हाथ थाम लिया और माधुरी ने मेरा हाथ थामा हुआ था

कमरे में धुआं सा भरने लगा धीरे-धीरे कुछ भी दिखाई देना बंद हो गया

जब धुआँ छटा तो हम लोग एक पहाड़ी के पास खड़े थे । पहाड़ी बहुत ऊंची नहीं थी । सामान्य पहाड़ी की तुलना में आधी से भी कम ऊंचाई रही होगी ।

सामने थोड़ी ऊंचाई पर एक विशालकाय मंदिर दिखाई दे रहा था । हम लोग चलकर उसके पास पहुंचे ।

वह एक शिव मंदिर था ।

उसकी बाहर की बनावट देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह अधूरा हो ।

उसकी ऊंचाई तकरीबन 40 फीट रही होगी । जिसमें से 20-22 फीट तक का काम पूरा हो चुका था । उस में

विभिन्न प्रकार की मूर्तियां तथा शिल्प बने हुए दिखाई दे रहे थे ।

लेकिन.....

ऊपर का हिस्सा अधूरा था !

वहां कुछ भी नहीं बना था !!

अनगढ़ पत्थर साफ साफ दिखाई दे रहा था !!

ऐसा प्रतीत हो रहा था....

जैसे.....

पूरे शिव मंदिर को एक पत्थर से काटकर बनाया गया हो

या एक जैसे पत्थरों को लगाकर उन्हीं से बनाया गया हो ।

मूर्तियों का सौंदर्य अद्भुत था

उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे वे बेहद कुशल शिल्पीयों के द्वारा बनाए गए हो ।

हम लोग मंदिर के अंदर पहुंचे

अंदर जो हमने देखा वह अद्भुत से भी ज्यादा अद्भुत था ।

लगभग 10 से 15 फीट के व्यास का एक शिवलिंग सामने दिखाई दे रहा था !

जिसकी ऊंचाई लगभग 20 से 22 फीट की रही होगी ।
उसका आधार लगभग 25 फीट का रहा होगा । नीचे में
पानी बह रहा था जैसे किसी अज्ञात स्रोत से आ रहा हो
।

पानी की मात्रा बहुत ज्यादा नहीं थी

लगभग 2 इंच पानी रहा होगा !

वहां कोई भी मौजूद नहीं था !

केवल हम तीन लोग वहां पर मौजूद थे ।

वहां एक अलग ही किस्म की तेजस्विता का अनुभव हो
रहा था !

ठीक वैसा ही अनुभव.....

जैसे भगवान शिव के सिद्ध पीठों पर जाने पर महसूस
होता है ।

संभवतः इसे आप लोगों ने भी महसूस किया होगा ।

चाहे आप उज्जैन चले जाइए या काशी ...

वहां अगर आप किसी भी स्थान पर कुछ देर शांति से
आंख बंद करके बैठ जाएं !

आपको स्वयं अपने अंदर ऐसी ऐसी अनुभूति होगी जो
आपने किसी और स्थान पर नहीं की होगी ।

यह इस बात का प्रमाण है कि भगवान शिव का
सानिध्य हमें ध्यान की ओर अग्रसर करता है !
अगर सौभाग्य से वहां के शिवलिंग के सानिध्य में अर्थात्
उसके आसपास के इलाके में बैठकर आपको ध्यान
करने का अवसर मिल जाए तो आप इसे और ज्यादा
स्पष्ट महसूस कर पाएंगे

कुछ-कुछ वैसा ही अनुभव मुझे वहां पर हो रहा था और
ना जाने क्यों मुझे शिवलिंग बड़ा जाना पहचाना लग
रहा था ।

बार-बार मुझे लग रहा था कि मैं इस स्थान को जानता
हूँ !

या यहां पर पहले भी आ चुका हूँ !

लेकिन.....

इस जीवन में इस मंदिर में आने का यह मेरा पहला
अनुभव था !

तो मुझे लगा कि संभवतः किसी पूर्व जन्म में यहां आया
रहा होऊंगा.....

इसलिए ऐसा प्रतीत हो रहा है ।

बाबा मेरे मनोभावों को भांप गए और बोले - तुम सही सोच रहे हो अघोराणंद ! यह वही ध्यान लिंग है । जिसकी स्थापना करने के लिए प्रयास करने वाले लोगों में तुम भी शामिल थे ।

इतना कहकर बाबा ने मुझे और माधुरी को पद्मासन में बैठने के लिए कहा । फिर उन्होंने हम दोनों के माथे पर अपनी तर्जनी उंगली से स्पर्श कर दिया

उसके साथ मैं अतीत की गहराइयों में चला गया.....

अनंत गहराइयों में

और उसके बाद.....

मुझे विचित्र प्रकार के दृश्य दिखाई देने लगे ।

मैं सामने अपने आपको देख रहा था !

इसी मंदिर परिसर में ।

घटना कुछ 12 सौ वर्ष पहले की थी !

उस समय मेरा नाम था दिव्याणंद । जिस स्थान पर मैं खड़ा था उसका नाम था बेलापुर ।

आइये उस कालखंड में चलते हैं

बेलापुर के राजा का नाम है राजा रुद्र शंकर ।

उनके राजपुरोहित हैं आचार्य प्रणवानंद !

मैं हूँ उनका प्रमुख शिष्य दिव्यानंद

राजा भगवान शिव के बहुत बड़े भक्त हैं । उनकी इच्छा है कि वह एक भव्य शिवालय का निर्माण करें । उन्होंने दरबार बुलाया और सभी दरबारियों से इस विषय में राय ली । राजा की इच्छा थी तो दरबारियों के मना करने का तो कोई प्रश्न ही नहीं होता ।

इसलिए सभी ने सहमति जताई । भगवान शिव के कार्य में असहमति वैसे भी नहीं होती है

तो यह तय हो गया कि भगवान शिव के भव्य मंदिर का निर्माण किया जाएगा ।

राज शिल्पी को बुलाया गया ।

उसका नाम है नगाचार्य ! वह मेरा परम मित्र है ।

नगाचार्य अपने कार्य में बेहद माहिर और कुशल शिल्पी है । परंपरा से वे राज शिल्पी का कार्य कर रहे हैं ।

नगाचार्य युवा है मगर शिल्प कला पर उसकी पकड़ बहुत जबरदस्त है । साथ ही वह नई नई चीजों को करने के लिए लालायित रहता है ।

राजा ने अपनी इच्छा नगाचार्य के सामने रखी ।
नगाचार्य जैसे ऐसे ही किसी अवसर की प्रतीक्षा में था ।
उसने कहा - मेरे मन में एक स्वरूप है । अगर आप मेरे
शिल्प मंदिर में आए तो मैं आपको दिखाना चाहूंगा ।
गुरुदेव, राजा रुद्रशंकर और मैं, नगाचार्य के साथ उसकी
शिल्पशाला में पहुंचे ।

वहां उसने एक रेशमी सफेद वस्त्र बिछा रखा था ।
उसमें एक भव्य मंदिर की आकृति बनी हुई थी । उसे
देखते ही राजा का हृदय प्रसन्न हो गया और उन्होंने उस
डिजाइन को स्वीकार कर लिया ।

नगाचार्य ने कहा - राजन अगर आप अनुमति दें तो एक
इच्छा है जिसे मैं व्यक्त करना चाहूंगा ।
राजा ने अनुमति दी ।

नगाचार्य ने कहा - मैं इस मंदिर में दुनिया का सबसे
बड़ा शिवलिंग स्थापित करना चाहता हूं लेकिन मेरी
इच्छा है कि वह ध्यान लिंग हो ।

राजा ने पूछा - ध्यानलिंग क्या है ?

नगाचार्य - इस विषय पर आचार्य प्रणवानंदजी ज्यादा बेहतर बता सकते हैं ।

राजा ने आचार्य से आग्रह किया तो उन्होंने ध्यान लिंग के विषय में विस्तार से बताया । जिसे सुनकर राजा ने ध्यान लिंग की स्थापना करने का मन बना लिया ।

गुरुदेव को ध्यान लिंग की स्थापना करने की प्रक्रिया का ज्ञान था । उन्होंने राजा के द्वारा किए गए अनुरोध को स्वीकार कर लिया । यह निश्चित हुआ कि वहां पर दुनिया का सबसे बड़ा ध्यानलिंग बनेगा और स्थापित किया जाएगा !

ताकि राज्य के सभी भक्तगण भगवान शिव की कृपा को अनुभूत कर सकें ।

इस प्रकार से एक भव्य शिवालय के निर्माण का प्रारंभ हो गया । राज्य के उत्तरी छोर पर मंडूक पहाड़ी को इस कार्य के लिए चुना गया । वहां बादामी रंग के हल्के लाल रंग के पत्थर मौजूद थे । बड़े-बड़े शिलाखंडों में से एक को नगाचार्य ने अपने मंदिर निर्माण के लिए चुना

मंदिर निर्माण की प्रक्रिया सामान्य भवन के निर्माण की तरह नहीं होती । सामान्य भवन के निर्माण में भी प्राचीन काल में भूमि दोष का निवारण करना अनिवार्य माना जाता था और मंदिरों के निर्माण में तो विशेष प्रकार के पूजन संपन्न किए जाते थे । अभी अधिकांश भवनों में इसके लिए बहुत ज्यादा प्रयास नहीं किए जाते ।

सबसे पहले नगाचार्य ने आचार्य प्राणवानंद से इस संबंध में निवेदन किया । उन्होंने अपनी गणना के आधार पर बसंत पंचमी का दिन भूमि पूजन के लिए निर्धारित किया । उस दिन गंगा सहित सात नदियों का जल मंगवाया गया और 17 प्रकार के पुष्प तथा 26 प्रकार के फल 31 प्रकार की औषधियां तथा 64 प्रकार के नैवेद्य तैयार किए गए । मंडूक पर्वत के पास निर्धारित शिलाखंड का चयन हो चुका था । जिस पर इस भव्य मंदिर की योजना पर काम होना था ।

उस शिला पर गुरुदेव प्राणवानंद जी ने पूजन प्रारंभ किया । मधुर स्वर में उन्होंने पूजन प्रारंभ किया । धीरे-धीरे उनके स्वर में भारीपन आने लगा....

जैसे ही पूजन प्रारंभ हुआ

आसमान में बादल दिखने लगे.....

बसंत पंचमी के अवसर पर आमतौर पर बारिश नहीं होती है

इस समय मौसम काफी खुला हुआ रहता है ।

इसे मदनोत्सव या कामदेव की जयंती के रूप में भी मनाया जाता है । यह मूल रूप से हर्ष और उल्लास का पर्व है । जहां युवा जोड़े अपने साथियों के साथ जल विहार, वन विहार जैसी क्रीडाएं उस समय किया करते थे । अब समय परिवर्तित हो गया है और वैलेंटाइन डे जैसे त्यौहार मनाए जाने लगे हैं, लेकिन मूल उद्देश्य वही है कि सुहावने मौसम में प्रेमी जोड़ों को साथ में समय बिताने का अवसर मिले

आमतौर पर पिकनिक मनाने के लिए भी यही मौसम सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है

बसंत पंचमी के अवसर पर मौसम काफी सुहावना होता है ।

सभी तरफ सुंदर सुंदर फूल खिले रहते हैं....

ना तो ज्यादा तेज गर्मी होती है

ना ही सर्दी पूरी तरह से जा चुकी होती है ।

यानी हल्की हल्की ठंड और हल्की हल्की गर्मी के बीच का एक ऐसा मौसम जो काफी सुखद लगता है

ऐसे ही मौसम में मंदिर के भूमि पूजन का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ था,

गुरुदेव ने पवित्रीकरण भूमि पूजन आदि संपन्न करने के बाद सामने अष्टदल कमल की रचना करके उस पर पूजन प्रारंभ कर दिया था

सिंह गर्जन की तरह तीव्र और उग्र स्वर मे गुरुदेव के कंठ से भैरव स्तुति उच्चारित हो रही थी

यं यं यं यक्ष रूपं दश दिशि विदितं भूमि कम्पायमानं
सं सं सं संहार मूर्ति शुभ मुकुट जटा शेखरं चन्द्र विम्बं
दं दं दं दीर्घ कायं विकृत नख मुख चौर्ध्व रोमं करालं
पं पं पं पाप नाशं प्रणमतं सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ १ ॥

रं रं रं रक्तवर्णं कटक कटितनुं तीक्ष्णदंष्ट्रा विशालं
घं घं घं घोर घोषं घ घ घ घ घर्घरा घोर नादं
कं कं कं कालरूपं धग धग धगितं ज्वलितं कामदेहं
दं दं दं दिव्य देहं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ २ ॥

लं लं लं लम्ब दन्तं ल ल ल ल लुलितं दीर्घ
जिह्वाकरालं

धूं धूं धूं धूम्रवर्ण स्फुट विकृत मुखं मासुरं भीम रूपं
रूं रूं रूं रुण्डमालं रुधिरमय मुखं ताम्र नेत्रं विशालं
नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ३ ॥

वं वं वं वायुवेगं प्रलय परिमितं ब्रह्मरूपं स्वरूपं
खं खं खं खड्गहस्तं त्रिभुवन निलयं भास्करं भीमरूपं
चं चं चं चालयन्तं चल चल चलितं चालितं भूत चक्रं
मं मं मं मायकायं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ४ ॥

खं खं खं खड्गभेदं विषममृतमयं काल कालान्धकारं
क्षि क्षि क्षि क्षिप्र वेग दह दह दहन नेत्रं सन्दीप्यमानं
हूं हूं हूं हूंकार शब्दं प्रकटित गहन गर्जितं भूमिकंपं
बं बं बं बाललीलम प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ५ ॥
॥

इसके पश्चात जैसे ही अष्ट भैरव स्वरूपों की सूक्ष्म रूप से
स्थापना का कार्य प्रारंभ हुआ !

मौसम बदलने लगा !

आसमान में काले काले बादल छाने लगे !

बिजलियाँ कड़कने लगी !

थोड़ी देर में बारिश जैसा मौसम हो चुका था ।

भूमि पूजन के लिए महाराज रुद्र शंकर सपत्नीक बैठे हुए थे ।

उनके चेहरे पर भी इन सारे परिवर्तनों को देखकर हल्का विकार दिखाई दे रहा था ।

जैसे वे इन सब चीजों को देखकर विचलित हो रहे हो ।

आचार्य प्रणवानंद के चेहरे पर किसी प्रकार के विकार नहीं थे !

जैसे वह इन सारी चीजों की प्रतीक्षा कर रहे थे ।

मैं भी बार-बार आसमान की ओर देखता हुआ बैठा था ।

महाराजा ने इससे पहले आचार्य से कई प्रकार के पूजन संपन्न कराए थे ।

लेकिन....

इस प्रकार का विशिष्ट तांत्रिक पूजन वे पहली बार संपन्न कर रहे थे !

और....

उन्होंने आचार्य के इस स्वरूप को पहले नहीं देखा था ।

महाराजा अपने से ज्यादा महारानी के लिए चिंतित दिखाई दे रहे थे ।

जिसे देखकर आचार्य प्रणवानंद ने राजा को सुझाव दिया - राजन ! आपके अंदर मौसम को देखकर विचलन दिखाई दे रहा है ! यह स्थिति पूजन के लिए सही नहीं है । अगर आप उचित समझे तो मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप महारानी को लेकर प्रस्थान करें । आगे का पूजन आपके प्रतिनिधि के रूप में मेरा शिष्य दिव्यानंद संपन्न करेगा ।

राजा तो जैसे ऐसी ही किसी बात की प्रतीक्षा में बैठे हुए थे ।

उन्होंने सहमति जताई ।

उन्होंने अपना उत्तरीय मुझे सौंपा ! यह इस बात का प्रतीक था कि मैं पूजन में उनका प्रतिनिधित्व करूंगा ! वे खड़े हुए और महारानी के साथ तेजी से एक ओर बढ़ गए । साथ में सुरक्षा के लिए खड़े सैनिक भी चले गए

दस बारह राज सेवक वहां पर आसपास खड़े थे । उनके चेहरे पर भी विकार के भाव साफ-साफ दिखाई दे रहे थे ।

आचार्य ने उनको भी जाने का इशारा किया !

वह भी जान बची तो लाखों पाए जैसे भाव अपने चेहरे पर लिए हुए वहां से भाग लिए ।

ऐसे तांत्रिक पूजन में भाग लेना हर किसी के बस की बात नहीं होती ।

ऐसे पूजन जब संपन्न होते हैं तो प्रकृति भी अनेक प्रकार के परीक्षण लेती है ।

इस संदर्भ में मैं एक घटना का उल्लेख करना चाहूंगा । पूज्य पाद सदगुरुदेव स्वर्गीय डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी छत्तीसगढ़ के भिलाई शहर में सन 1993 में नवरात्रि का शिविर ले रहे थे । आमतौर पर उनके अधिकांश शिविर एक या दो दिन के होते थे । लंबे शिविर जैसे नवरात्रि के शिविर उनके जोधपुर स्थित आश्रम में ही संपन्न किए जाते थे । यह पहला अवसर था जब

जोधपुर के बाहर नवरात्रि जैसा नौ दिवसीय शिविर
संपन्न हो रहा था ।

गुरुदेव के शिविरों में पंडाल अपने आप हिलने लगता
था । हल्की-हल्की हवाएं चलने लगती थी । यह इस
बात का प्रतीक होता था कि गुरुदेव मंच पर आने वाले
हैं

ऐसा एक बार नहीं बल्कि पूरे शिविर के दौरान कई बार
होता था ।

सबसे विचित्र बात यह थी कि किसी भी प्रकार का
मौसम हो उनके शिविर में एक बार बूँदाबांदी जरूर होती
थी । चाहे वह गर्मी का मौसम हो सर्दी का मौसम हो
या फिर बारिश हो ।

यह इस बात का प्रमाण है कि प्रकृति भी उस सिद्ध
साधक का स्वागत करने के लिए आतुर हो उठती है ।

यह आज भी उतना ही सत्य है । अगर आप किसी सिद्ध
गुरु के पास जाएंगे तो उनके मंच पर आगमन से ठीक
पहले हल्की हवाएं चलनी प्रारंभ हो जाएंगी । मौसम
थोड़ा सुहावना हो जाएगा ।

यह इस बात का प्रतीक है कि प्रकृति भी उनके आगमन से प्रसन्न और आनंदित है

सुनने में बात विचित्र लग सकती है.....

लेकिन ऐसा होता है !

अगर ऐसा होता है तो आप समझ जाएं कि आप जिनके सानिध्य बैठे हैं वह एक सिद्ध पुरुष है ।

गुरुदेव अलग अलग दिन अलग-अलग प्रकार के प्रयोग कराते थे । वे किताब या कोई ग्रंथ देखकर पूजन नहीं कराते थे । कई बार वे एक-एक घंटे तक बिना कोई किताब देखें लगातार पूजन और प्रयोग संपन्न करवा देते थे । ऐसा लगता था जैसे वे ब्रह्मांड से मंत्रों को प्राप्त कर रहे हो या उनके सामने अदृश्य रूप से वे सारे मंत्र हवा में तैर रहे हो और उनको वह अपनी तेजस्विता से प्राप्त करके उच्चरित कर रहे हो ।

उनकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वे एक प्रयोग को दोबारा उसी पद्धति से नहीं कराते थे । अगर उन्होंने एक बार बगलामुखी प्रयोग संपन्न करवाया है तो वह बगलामुखी प्रयोग किसी दूसरे शिविर में उसी प्रकार

संपन्न नहीं करवाते थे । उसे संपन्न करने की विधि और मंत्र दोनों हर बार परिवर्तित हो जाती थी ।

वाग्देवी साक्षात् उनके कंठ में विराजती थी !

उनके पास प्रयोगों और मंत्रों का अकूत भंडार

था

उनके ऑडियो कैसेट नेट पर उपलब्ध है आप उन्हें सुनेंगे तो उनके प्रयोगों की तेजस्विता को आप खुद समझ पाएंगे ।

अब उनके जैसा कोई तेजस्वी तांत्रिक गुरु उपलब्ध नहीं है !

बहुत से ऐसे लोग गुरु बन बैठे हैं !

जिनको न तो मंत्रों का उच्चारण सही ढंग से करना आता है और ना ही किसी प्रकार का पूजन संपन्न करवाना आता है । इसके लिए भी वह अपने साथ एक असिस्टेंट रखते हैं ।

खैर

मैं बात कर रहा था भिलाई में संपन्न होने वाले नवरात्रि शिविर की जो वर्ष 1993 में हुआ था ।

उन्होंने एक विशेष प्रयोग करवाने के लिए संभवतः
पंचमी का दिवस निर्धारित किया था ।

आश्विन नवरात्रि अर्थात् अक्टूबर का महीना होने के
बावजूद

उस दिन प्रयोग के पहले इतनी बारिश हुई थी....

कि वह मैदान !

जिसमें शिविर लगा था !

वह पानी से भर गया था । सभी साधकों शिविरार्थियों
के आसन मंच सब कुछ गीला हो गया था । उस स्थिति
में जो लोग वहां पर भीगते हुए उन गीले आसनों पर
बैठे रहे..... उनको गुरुदेव ने एक विशेष प्रयोग संपन्न
करवाया था ।

यह भी एक विशिष्ट प्रयोग चल रहा था !

संभवतः राजा और रानी तथा सेवक गण उस में भाग
लेने के योग्य नहीं रहे होंगे !

अस्तु

थोड़े समय में वहां पर सिर्फ तीन लोग बैठे हुए थे
आचार्य प्रणवानंद , राज शिल्पी नगाचार्य और मैं

अब यजमान के स्थान पर मैं बैठा हुआ था ।

सनातन धर्म में सभी पूजन कर्मों में पुरुष और स्त्री को एक साथ बैठाने का विधान है !

इसके पीछे जो कारण है वह यह है कि पुरुष और स्त्री दो अलग-अलग प्रकार की शक्तियों को अपने अंदर समाहित किए हुए होते हैं । इसे एक प्रकार से आप बिजली के तारों की तरह समझ सकते हैं जिसमें एक पॉजिटिव होता है और एक नेगेटिव होता है । जब तक यह दोनों तार किसी बल्ब में नहीं लगते तब तक वह बल्ब नहीं जलता या यूँ कह लीजिए कि बिजली उस बल्ब तक नहीं पहुँचती या सर्किट पूरा नहीं होता । यह ऊर्जा के स्थानांतरण का एक सामान्य नियम है । जो भौतिक शास्त्र में पढ़ाया जाता है । यह नियम सार्वभौमिक रूप से हर जगह लागू होता है

आध्यात्मिक ऊर्जा के प्रवाह के लिए भी पुरुष और स्त्री दोनों शक्तियों की मौजूदगी आवश्यक होती है । इसलिए हर पूजन में पुरुष और स्त्री दोनों को संयुक्त रूप से बिठाया जाता है । इससे सामान्य से कई गुना

ज्यादा फल प्राप्त होता है । यदि आप मंत्र जाप करते हैं तो अगर आप अपनी पत्नी के साथ बैठकर मंत्र जाप करेंगे या अपनी प्रेमिका के साथ बैठकर जाप करेंगे तो यकीन मानिए कि आपको मंत्र जाप में ज्यादा शक्ति और ऊर्जा का अनुभव होगा और साधनात्मक रूप से भी आपके अनुभव काफी उच्च कोटि के प्राप्त होंगे । सनातन धर्म इस बात को सदैव स्वीकार करता रहा है

इसीलिए अगर आप देखेंगे तो सभी बड़े मंदिरों में पुरुषों और स्त्रियों की मूर्तियां बराबर संख्या में बनी हुई है ! विशेष रूप से स्त्री मूर्तियां तो अनिवार्य रूप से लगी होती है ताकि ब्रह्मांडीय शक्तियों का आवाहन ज्यादा आसानी से संपन्न किया जा सके ।

यजमान के रूप में उस समय में ही बैठा हुआ था ।

मेरे पास स्त्री शक्ति उपलब्ध नहीं थी ।

ऐसी स्थिति में यह विशिष्ट स्थिति प्राप्त करना संभव नहीं था और इसके उपाय में आचार्य प्रणवानंद ने एक विशिष्ट मंत्र के द्वारा आसमान की ओर देखते हुए कुछ मुद्राएं प्रदर्शित की.....

यह मुद्राएं अप्सरा साधना तथा शक्ति आवाहन से
संबंधित मुद्राएं थी !

और.....

थोड़ी ही देर में

एक अत्यंत ही रूपवान युवती शून्य से प्रकट होने लगी !

उसका सौन्दर्य व्याख्या से परे था !

उसका रंग हल्का सांवला था ...

बहुत कुछ अनकहे को भी कह जाने में सक्षम थी उसकी
काली कजरारी आंखें

बोलती हुई आंखें

चेहरे का हर हिस्सा चाहे, वह आंख हो, नाक हो, मादक
होठ हो, सब सौन्दर्य की परिभाषा को अभिव्यक्त करता
हुआ सा प्रतीत होता था

उसके घुँघरालू बाल खुले हुए थे ।

जिन्हें हल्के से उसने बांधा हुआ था...

वे उसके कानों से होते हुए उन्नत वक्षस्थलों तक किसी
बेचैन नदी की तरह बिखरे हुए थे

ऐसा प्रतीत होता था जैसे अप्सरा की मूर्तियों में से किसी मूर्ति में प्राण आ गए हों

और वह इठलाती हुई उस पूजन स्थल तक खिंच आई हो ।

उसका हर अंग यौवन की परिपूर्णता से भरा हुआ और शास्त्रीय व्याख्या के अनुसार सुडोल था।

एक क्षण को मेरी आंखें उसे देख कर स्तब्ध रह गई
कुछ समय तक मैं उसी स्थिति में अचंभित स्तंभित सा बैठा रहा !

वह गुरुदेव के सामने हाथ जोड़कर खड़ी थी ।

गुरुदेव ने कहा - पुष्पदेहा ! पूजन कर्म की पूर्णता के लिए शक्ति अनिवार्य है । इसलिए तुम इस पूजन में सम्मिलित होकर इसे पूर्णता प्रदान करो ।

पुष्पदेहा ने सिर झुकाया और कहा - जैसी आपकी आज्ञा आचार्य ।

मैं उस आसन पर बैठा था, जिस पर कुछ समय पहले तक राजा रुद्र शंकर बैठे हुए थे ।

मेरे बगल में महारानी का आसन खाली था !

उस आसन पर पुष्पदेहा आकर बैठ गई ।

उसके बैठते ही ऐसा लग रहा था जैसे हजारों फूलों को
आसपास में इकट्ठा कर दिया गया हो !
सुगंध से पूरा वातावरण भर चुका था !!

आसमान बादलों से भरा हुआ था

बरसात होने वाली थी

लेकिन !

उसकी उपस्थिति और सुगंध के चलते मैं सब कुछ भूल
चुका था और उसकी ओर देख रहा था । मैं बाकी दोनों
के अस्तित्व को ही भूल चुका था और मुग्ध भाव से
उसकी ओर देख रहा था

तभी गुरुदेव का कड़ा स्वर गूंजा - दिव्यानंद पूजन पर
ध्यान दो ।

उस स्वर के साथ मैं वापस यथार्थ के धरातल पर आ
गया और पूजन कर्म की ओर ध्यान देने लगा । मेरी नजर
सामने बैठे हुए नगाचार्य के तरफ उठी । नगाचार्य के
बगल में भी एक दिव्य सौंदर्य शालिनी युवती बैठी हुई
थी ! जो इसके पहले मुझे दिखाई नहीं दे रही थी ।

संभवतः अप्सरा के आह्वान और उसे दिखाई देने के लिए गुरुदेव के द्वारा किए गए प्रयोग की वजह से अब वह भी मुझे दिखाई दे रही थी

अब एक तरफ मैं पुष्पदेहा के साथ बैठा हुआ था और दूसरी तरफ नगाचार्य और वह युवती बैठे हुए थे ।

हमारे सामने अष्टदल कमल बना हुआ था ।

उसके बीचो बीच रखा हुआ था स्वर्ण से बना हुआ चमचमाता हुआ एक प्लेट ! जो लगभग 1 फुट बाई 1 फुट के आकार का रहा होगा ।

मुझे आश्चर्य हुआ !

पहले तो वहां पर वैसा कोई यंत्र नहीं रखा था !

केवल अष्टदल कमल बना हुआ था ।

उस प्लेट पर श्री यंत्र उकेरा हुआ था ...

या संभवतः उसके जैसा कोई यंत्र था !

जो मुझे श्रीयंत्र जैसा लग रहा था ।

मुझे समझ आया कि वह भी कोई दिव्य यंत्र था ...

जो पहले मुझे दिखाई नहीं दे रहा था...

और अब दिखने लगा था

या फिर

अप्सरा के आने के साथ ही

गुरुदेव ने शून्य से उस यंत्र को प्राप्त करके वहां स्थापित किया होगा ।

जो भी हो !

इसके पहले मुझे वह नहीं दिख रहा था और अब वह मुझे स्पष्ट दिखाई दे रहा था ।

आचार्य प्रणवानंद जी ने पूजन पुनः प्रारंभ किया ।

पूजन बीच में रुक गया था इसलिए उन्होंने पुनः प्रारंभ किया । गणपति वंदना के साथ पूजन प्रारंभ हुआ ।

भूमि पूजन पवित्रीकरण गणपति भैरव गुरु क्षेत्रपाल आदि का पूजन संपन्न करने के बाद उन्होंने आदि गुरु भगवान शिव का आह्वान और पूजन संपन्न किया ।

सप्तर्षियों का आह्वान और पूजन संपन्न किया । इसके बाद उन्होंने अत्यंत गोपनीय मंत्रों से देवाधिदेव महादेव के निवास कैलाश पर्वत को सूक्ष्म रूप से उस मंडूक पर्वत पर स्थापित करने के लिए पूजन प्रारंभ किया । उसके साथ गुरुदेव के चेहरे की भाव भंगिमा ही बदल गई ।

उनके चेहरे का रंग सुख लाल हो गया ।

आंखें शून्य में से किसी वस्तु को या तत्व को खींचने के लिए प्रयत्न रत दिखाई दे रही थी ।

चेहरे की नसें फूल गई थी

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह किसी आंतरिक शक्ति और ऊर्जा का प्रवाह अपने मंत्रों में डालकर भगवान शिव के निवास स्थल कैलाश पर्वत की तेजस्विता को स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील हो

इस बार वे पहले से भी ज्यादा उग्र और रौद्र रूप में दिखाई दे रहे थे

ठीक उसी समय बादल गरजने लगे और बिजली कड़कने लगी

एक बिजली ठीक उसी स्थान पर आकर गिरी जहां पर हम लोग पूजन संपन्न कर रहे थे ।

आश्चर्य की बात यह थी कि वह बिजली वहां पर किसी आघात की तरह नहीं गिरी

बल्कि पीली रोशनी की एक रेखा के रूप में आकर ठीक उस यंत्र के मध्य में स्थापित हो गई !

ऐसा लग रहा था

जैसे कोई लेजर की बीम ...

उस यंत्र के मध्य बिंदु को पॉइंट करके आकाश से गिर रही हो !

ऐसा प्रतीत हो रहा था

जैसे कोई आकाशीय ऊर्जा उस किरण के माध्यम से उस यंत्र के अंदर समाहित हो रही थी !

या.....

संभवतः उस मंदिर के निर्माण के लिए चुने गए पर्वत को अपनी ऊर्जा से आच्छादित कर रही थी । लगभग 5 सेकंड तक वैसी ही स्थिति रही होगी उसके बाद वह बिजली विलुप्त हो गई ।

आसपास के स्थानों पर बार-बार बिजली कड़क कर गिरती रही

घनघोर बारिश होती रही.....

इसी बीच में बैठकर हम लोगों ने पूरा पूजन संपन्न किया !

उस पूरे पूजन के दौरान हमारे साथ वे दोनों दिव्य शक्तियां भी पूजन में शामिल रही

यह पूजन दोपहर के बाद प्रारंभ हुआ था जो खराब मौसम की वजह से राजा और रानी के जाने के कारण बीच में अल्प समय के लिए थोड़ा बाधित हुआ ।

पुनः सायंकाल से पुष्पदेहा और उस अज्ञात दिव्य कन्या के सानिध्य में उस पूजन को संपन्न किया गया था

जो अर्धरात्रि के समय तक चलता रहा ।

बारिश निर्बाध रूप से चालू थी !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे बारिश का मौसम हो !

घनघोर बारिश !

मूसलाधार बारिश !

ऐसी बारिश जैसी भारी तूफान के आगमन के समय होती है

लेकिन आश्चर्य की बात यह कि

जहां हम पूजन कर रहे थे

वहां लगभग 20 फुट बाई 20 फुट का एरिया ऐसा था

जहां पर पानी नहीं गिर रहा था !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कोई अदृश्य छत हमारी रक्षा कर रही हो !

संभवतः यह गुरुदेव प्रणवानंद जी के किसी प्रयोग का परिणाम रहा होगा !

या फिर

उस अप्सरा या दिव्यकन्या के द्वारा किए गए किसी रक्षा प्रयोग का परिणाम रहा होगा ।

जो भी हो जहां हम बैठे थे वहां पर पानी नहीं गिर रहा था

और.....

हमारे चारों तरफ मूसलाधार बारिश ने एक ऐसी दीवार खड़ी कर दी थी जिसके आर पार देख पाना संभव नहीं था ।

यह था प्रकृति के द्वारा उस रहस्यमय पूजन को गोपनीय रखने का अपना अद्भुत तरीका

अर्ध रात्रि के बाद पूजन संपूर्ण हो गया और उसके बाद हवन संपन्न किया गया ।

तब तक बारिश बंद हो चुकी थी ।

भगवान शिव के आह्वान और पूजन के साथ यज्ञ प्रारंभ हुआ । नवार्ण मंत्र के उच्चारण के साथ यज्ञ में जब आहुतियां दी जाने लगी तो अग्निशिखाओं के बीच में देवी का बिंब स्पष्ट होने लगा । जो इस बात का प्रमाण था कि उन्होंने हमारे अनुरोध को स्वीकार किया ।

पूर्णाहुति के बाद दोनों देव कन्याएं विलुप्त हो चुकी थी ।

गुरुदेव ने उस अद्भुत यंत्र को एक लाल कपड़े में लपेटकर नगाचार्य को दे दिया और उसे निर्देश दिया कि जब आधार का निर्माण हो तो उसके अंदर इस यंत्र को भी स्थापित करना है । नगाचार्य ने सहमति में सिर हिलाया और उसे लेकर अपने स्थान की ओर चले गए ...

आचार्य और मैं नित्य क्रियाओं से संपन्न होने के बाद वापस उस स्थान पर पहुंचे । नगाचार्य भी तब तक वापस आ चुके थे ।

महाराज को संदेश भेज दिया गया था

प्रातः महाराज का फिर से आगमन हुआ और उन्होंने शिला पर पहला प्रहार करके निर्माण का श्रीगणेश किया ।

लगभग 6 महीने के परिश्रम के बाद आधार का निर्माण कार्य प्रारंभ होने लगा । भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी अर्थात् जन्माष्टमी के दिन शिवलिंग के आधार में उस अद्भुत स्वर्ण यंत्र को गुरुदेव की उपस्थिति में नगाचार्य ने स्थापित किया ।

उसके बाद शिवलिंग निर्माण का कार्य प्रारंभ हो गया । शिवलिंग के पास एक विचित्र किस्म की जंगली जड़ी की धूप रात को जला दी जाती थी जो सुबह तक जलती रहती ।

सबसे विचित्र बात यह थी कि उसका धुआँ वह पत्थर सोख लेता था । पूर्णिमा की रात्रि को सारे शिल्पकारों को छुट्टी दे दी जाती थी । वहां पर सिर्फ हम तीन लोग हुआ करते थे । इस दौरान विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियों और पत्तों के माध्यम से, जिसमें बेलपत्र भी शामिल थे, शिवलिंग का पूजन संपन्न किया जाता था ।

यह प्रक्रम लगातार इसी प्रकार चलता रहा और 2 वर्ष बीत गए। शिवलिंग का निर्माण लगभग पूरा हो चुका था। बाहरी मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा था।

शिवरात्रि का दिन था.....

जब आचार्य के आश्रम में ऋषि तुल्य दिखने वाले जोड़ों का आगमन प्रारंभ हुआ। वे संख्या में 8 थे। शिवरात्रि से मंदिर परिसर में उन 8 जोड़ों ने पूजन प्रारंभ कर दिया.....

वर्तमान समय में हम चार दिशाएं मानते हैं। लेकिन सनातन धर्म 10 दिशाओं को मानता है। यह इस प्रकार हैं :-

पूर्व east उत्तर north दक्षिण south पश्चिम west। जो हम सामान्यता जानते हैं इसके अलावा इनके बीच में चार दिशाएं और मानी जाती हैं।

पूर्व और उत्तर के बीच में इशान दिशा north-east उत्तर और पश्चिम के बीच में वायव्य दिशा north-west

पश्चिम और दक्षिण के बीच में नेऋत्य दिशा west-south

दक्षिण और पूर्व के बीच में आग्नेय दिशा south-east

इनको मिलाकर कुल आठ दिशाएं हो गई ।

नौवीं दिशा अधः अर्थात जमीन के नीचे की तरफ और दसवीं दिशा ऊपर की तरफ अर्थात अंतरिक्ष को माना जाता है ।

इस प्रकार 10 दिशाओं का पूजन संपन्न किया जाता है ।

युगल इसी प्रकार से शिवलिंग को घेरकर आठ दिशाओं में बैठते थे ।

पूरी रात्रि उनका पूजन संपन्न होता था और मुझे उनकी आवश्यकता पूर्ति करने और वहां की व्यवस्था और सुरक्षा देखने का भार सौंपा गया था ।

मंदिर में विशाल पट लग चुके थे । जो लोहे के आधार पर लकड़ी से बने हुए थे । उनकी लंबाई लगभग 25 फीट के आसपास थी । चौड़ाई 10 फुट की रही होगी । ऐसे दो द्वार बने हुए थे जो उत्तर और दक्षिण दिशा में स्थित थे ।

शिवरात्रि से यह पूजन निरंतर चलता रहा । चैत्र नवरात्रि में मंदिर के शिल्पकार भी देवी पूजन में भाग लेने के लिए अपने अपने स्थान को चले गए । अब वहां पर वे आठ जोड़े और मैं ! केवल बचे हुए थे । उनकी पूजन की अवधि भी अब बढ़ चुकी थी दिन के समय भी वे विभिन्न प्रकार के पूजन अर्चन संपन्न करते रहते थे । इसके लिए कई प्रकार की सामग्री लगती थी । जिसकी व्यवस्था करना मेरा उत्तरदायित्व था । इसलिए मेरे पास 2 सहायक भी थे ।

अष्टमी की रात्रि थी वे अंदर पूजन में लगे हुए थे और मैं बाहर पहेरेदारी पर था ।

अचानक मंदिर के अंदर प्रकाश फैलने लगा.....

ऐसा प्रतीत हो रहा था !

जैसे अंदर सूर्योदय हो गया हो !

दरवाजे की दरारों के बीच से प्रकाश की रश्मियां बाहर की तरफ बिखर रही थी.....

अचानक दक्षिण दिशा का द्वार खुल गया !

मैंने देखा कि जो यंत्र हमने उस शिवलिंग के आधार पर लगाया था

उस यंत्र की आकृति शिवलिंग के ऊपर शून्य में दिखाई दे रही थी

वह धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ रही थी.....

ऐसा लग रहा था जैसे कोई गर्म लोहे का तपता हुआ पिंड !

जो उस यंत्र की डिजाइन में बना हुआ था !

वह धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठ रहा हो !

उसी प्रकार से उठते उठते वह जाकर छत में टकराया !

उसके टकराते ही एक विस्फोट जैसी जोरदार आवाज आई !

भूमि में कंपन जैसा प्रतीत हुआ !

मेरे देखते ही देखते छत का वह हिस्सा अलग हो गया और ऊपर की ओर उठता हुआ शून्य में विलीन हो गया ...

यह दृश्य देखकर मेरा दिमाग घूम गया और मैं वहीं पर बेहोश होकर गिर पड़ा.....

जब मुझे होश आया तो प्रातः कालीन सूर्य की किरणें मेरे चेहरे पर पड़ रही थी

मंदिर के दोनों द्वार बंद थे ।

अचानक मंदिर के दोनों द्वार एक साथ खुल गए

वे लोग दोनों द्वारों से होकर बाहर अपने स्थान की ओर निकल गए ।

उनके जाते ही मैं अपनी उत्कंठा को रोक नहीं पाया ...
उस उड़ी छत को देखने के लिए मंदिर के अंदर प्रवेश कर गया !

लेकिन !

वहां जो मैंने देखा वह किसी चमत्कार से कम नहीं था ।
छत अपने स्थान पर मौजूद था ।

उस छत पर एक विशालकाय यंत्र भी बना हुआ था !
जो उस यंत्र की प्रतिकृति था जो हमने भूमि पूजन के समय देखा था और शिवलिंग के आधार पर स्थापित किया था । यह यंत्र काफी कुछ श्री यंत्र से मिलता जुलता था । उसमें अधोमुखी और ऊर्ध्वमुखी त्रिकोण जैसे रचनाएं बनी हुई थी । जिनके बाहर कमल दल भी बने हुए थे ।

जिनकी संख्या 64 थी । जिसके बारे में बाद में गुरुदेव ने बताया कि वह भगवान शिव और भगवती के 64 कलाओं का भी प्रतीक है ।

देवताओं में भगवान श्रीकृष्ण को 16 कलाओं से युक्त माना जाता है और उन्हें पूर्ण पुरुष कहा जाता है ।

भगवान शिव और शक्ति 64 कलाओं से युक्त मानी जाती है और यह पद्म दल उन्हीं का प्रतीक थे ।

नवरात्रि की पूर्णता के साथ शिल्पकार भी वापस लौट आए और पुनः मंदिर का कार्य प्रारंभ हो गया ।

बाहर के हिस्से में विभिन्न प्रकार की मूर्तियां उकेरी जाने लगी । दिन भर शिल्पकारों का होता और वे अपना काम करते रहते । रात उन साधकों की होती जो विभिन्न प्रकार के पूजन प्रयोग करते रहते ।

दरवाजे की ऊंचाई तक शिल्पों के निर्माण का काम पूरा हो चुका था । विभिन्न प्रकार की देवी देवताओं की तथा युगल मूर्तियों की संरचनाएं मंदिर के चारों तरफ बनाई जा चुकी थी ।

नित्य वे साधक शिल्प कारों के जाने के बाद रात्रि काल में मंदिर के दरवाजे बंद करके अंदर साधना रत हो जाते थे ।

इसी प्रकार से कार्य आगे बढ़ता जा रहा था और मंदिर लगभग पूरा हो चुका था ।

सावन का महीना था !

घनघोर बारिश चल रही थी !

हर तरफ पानी ही पानी था !

मंदिर का काम लगभग 90% पूरा हो चुका था । बाहरी दीवारों की फिनिशिंग का काम चल रहा था ।

उस दिन जोरदार पानी की वजह से कारीगर अपने झोपड़ी में रुके हुए थे

वह श्रावण मास की अमावस्या की रात थी जब गुरुदेव और नगाचार्य भी उस पूजन में शामिल हुए ।

नगाचार्य और गुरुदेव बीच में बैठे हुए थे !

आठों दिशाओं में उसी प्रकार से युगल बैठे हुए थे । उस अंतिम प्रयोग में उस शिवलिंग को ध्यान लिंग बनाया जाना था ।

गुरुदेव ने मुझे भी कुछ विशेष निर्देश दिए थे । इसलिए मैं भी दरवाजे को बंद करके अंदर बैठा हुआ था ।

संभवतः गुरुदेव उस प्रक्रिया को मुझे भी सिखाना चाहते थे ।

उन्होंने सिद्धांत रूप से पूरी विधि मुझे बता दी थी और उसका व्यवहारिक उपयोग बताने के लिए मुझे अपने साथ बिठा रखा था ।

गुरु जीवित रहते रहते अगर अपने शिष्य को अपने सामने प्रयोगों को संपन्न करवा देता है तो वह काफी

सामर्थ्यवान साधक बन जाता है । कई गुरु यह शर्त रखते हैं कि मेरी मृत्यु के बाद तुम्हें यह सिद्धि प्राप्त हो जाएगी । वह भी एक अलग तरीका है लेकिन कई बार इसमें दिक्कतें भी आती है ।

मेरी जानकारी में एक असम के कामाख्या कामरूप नगर से साबर मंत्र विद्या सीखे हुए बैगा थे । जिनके तीन शिष्य उनको बहुत प्रिय थे । वे लगातार उनके संपर्क में आना-जाना करते रहे और मंत्र जाप भी करते रहे । सिद्धियों के विषय में उन्होंने यह कहा हुआ था कि मेरी मृत्यु के बाद में तुम्हारे लिए यह चीजें छोड़ जाऊंगा और उनको लेकर जाते ही सिद्धियां प्राप्त हो जाएंगे ।

अंत समय उनका करीब था । लगभग 92-93 वर्ष की अवस्था उनकी हो चुकी थी । एक दिन उनको लकवा हो गया और उनके बोलने की क्षमता समाप्त हो गई थी । वे जो बोलते थे वह स्पष्ट नहीं हो पाता था इसलिए अपने अंतिम समय में वे उस प्रक्रिया को संपन्न नहीं कर पाए और वह विद्या उनके साथ ही लुप्त हो गई ।

गुरु का इस प्रकार का कंजूस होना भी कई बार हमारी सनातन धर्म की कई विधाओं के लुप्त होने का कारण बन जाता है ...

खैर

उस समय मेरी आंखों से आंसू बह रहे थे ।

क्योंकि....

इस प्रक्रिया में जो होने वाला था वह मेरे लिए दुखद था ।

मेरे गुरु का साथ मुझ से छूटने वाला था । उन्होंने बताया था कि ध्यानलिंग की जिस प्रक्रिया में वे जा रहे हैं ,उसमें अंतिम चरण में साधकों को उसी में समाहित होकर अपनी तेजस्विता समर्पित करनी होती है ।

तभी उसको पूर्णता मिलती है

इसलिए मैं दुखी हो रहा था ।

हर-हर महादेव के उद्घोष के साथ पूजन कर्म प्रारंभ हुआ ।

गुरुदेव ने घन पाठ प्रारंभ किया !

घनपाठ वेद पाठ की एक विधा है , जिसके वीडियो आप नेट पर देख सकते हैं ।

दरअसल वेद कई हजार वर्ष पहले लिखे गए थे और उनको याद करने के लिए विभिन्न प्रकार की विधियां विकसित की गई थी। जिनके अनुसार गुरु अपने शिष्यों को वेदों को कंठस्थ करा देते थे। इस प्रकार वे अपने मूल स्वरूप में कई हजार वर्षों के बाद भी आज उपलब्ध है।

वेदों को कंठस्थ कराने की परंपरा आज भी भारत में कई स्थानों पर विद्यमान है। मेरे गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमालीजी ने अपने प्रवचन में बताया था कि उन्हें 8 साल की अवस्था में वेदों को कंठस्थ करा दिया गया था। दरअसल कंठस्थ कराने की यही परंपरा इतने प्राचीन वेदों को इतने लंबे समय तक जीवित रख पाई है

वेद को कण्ठस्थ करने हेतु निम्नलिखित आठ विकृति पाठ हैं-

1. जटा पाठ
2. माला पाठ
3. शिखा पाठ
4. रेखा पाठ

5. ध्वज पाठ
6. दण्ड पाठ
7. रथ पाठ
8. घन पाठ

इन में घन पाठ सब से कठिन और सब से बड़ा है।
भगवान शिव के सानिध्य के लिए इसे महत्वपूर्ण माना जाता है ।

गुरुदेव आचार्य प्रणवानंद जी के साथ में वह सभी
साधक भी घन पाठ कर रहे थे ।

उनकी ध्वनियां मंदिर के अंदर गुंजरित हो रही थी और
एक मनोहारी और अद्भुत वातावरण की सृष्टि कर रही
थी

जिसकी दिव्यता शब्दों में वर्णित नहीं की जा
सकती.....

घन पाठ लगभग अपने अंतिम चरण में पहुंच चुका था !
जब गुरुदेव का शरीर हवा में ऊपर उठने लगा !

ऊपर उठते उठते वह आसन शिवलिंग के ऊपर पहुंच
गया !

तभी....

मैंने देखा की गुरुदेव प्रणवानंद जी के शरीर के दो भाग हो गए.....

उनके शरीर से एक और शरीर निकलने लगा.....

वह शरीर एक स्त्री शरीर था

ऐसा माना जाता है कि पुरुष के शरीर में स्त्री और स्त्री के शरीर में पुरुष विद्यमान होता है । साधना की उच्चतम अवस्था में शरीर के अंदर स्थित उस पुरुष या स्त्री के साथ समागम करने का निर्देश तंत्र शास्त्र में होता है जो कि साधना की सबसे उच्चतम अवस्था है ।

भगवान शिव का अर्धनारीश्वर स्वरूप इसी का एक उदाहरण है कि किस प्रकार से उच्च कोटि के योगी अपने देह के अंदर ही पुरुष और स्त्री दोनों स्वरूपों में हो सकते हैं ।

अब वे युगल अवस्था में थे और स्त्री शरीर पुरुष शरीर के ऊपर आरुढ़ था.....

विपरीत रति की मुद्रा मे.....

उनकी स्थिति ऐसी थी कि वह शिवलिंग के ऊपर थे और छत पर बने हुए यंत्र के मध्य बिंदु के सीध में भी ! घन पाठ समाप्त होते ही ऊपर की छत पर बने हुए यंत्र की लाइनें चमकने लगी !

उसके मध्य बिंदु से एक प्रकाश की किरण उस दिव्य स्त्री शरीर के पीठ के हिस्से से गिरती हुई संभवत गुरुदेव के नाभि स्थल से होती हुई शिवलिंग पर पड़ी और वह आठ जगह से किसी कमल की तरह खुल गया !

उन किरणों के साथ साथ गुरुदेव का शरीर भी उसी शिवलिंग के अंदर प्रवेश करने लगा ।

उनका पूरा शरीर उस समय सुनहरे रंग की रश्मियों से आच्छादित होकर किसी अग्नि पिंड की तरह प्रतीत हो रहा था.....

जो धीरे-धीरे उस शिवलिंग के फटे हुए भाग के अंदर प्रवेश करता जा रहा था

मेरे देखते ही देखते गुरुदेव का युगल शरीर उस शिवलिंग के अंदर समा गया !

अंदर समाते ही उस दिव्य स्वर्णिम यंत्र से एक एक किरण युगलों के ऊपर पड़ने लगी

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह उन्हें अपने आगोश में लेती जा रहे हो !

धीरे-धीरे उनका शरीर भी उसी प्रकार स्वर्णिम आभा से युक्त होकर किसी स्वर्ण पिंड की तरह दिखाई देने लगा

उसके बाद एक-एक करके वे युगल भी शून्य में उठते गए और एक एक कटाव से होते हुए शिवलिंग के अंदर प्रवेश कर गए ।

जैसे ही वे आठों युगल उस शिवलिंग के अंदर प्रवेश कर गए वह आठों हिस्से वापस जुड़ गए ।

उसके बाद एक विस्फोट जैसे आवाज के साथ उसके आधार का हिस्सा दो भागों में विभक्त हो गया ।

उसके अंदर वह यंत्र चमकता हुआ दिखाई दे रहा था

जो नगाचार्य ने उस आधार में डाला था ।

जैसा कि मैंने कहा था कि वह यंत्र सोने के रंग का दिखाई देता था !

उसमें से एक स्वर्णिम किरण नगाचार्य की तरफ
आई

उसे भी उसी प्रकार से स्वर्णिम किरणों ने आच्छादित कर
लिया.....

वह एक गोल स्वर्णिम पिंड की तरह दिखाई देने लगा !
ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह किरणें किसी धागे की
तरह उन शक्तियों को अपने अंदर समाहित करने के
लिए आ रहे हो !

उन्हें सभी तरफ से संरक्षित करके उनके अंदर के प्राण
तत्व को

उनके अंदर की साधना को

उनकी पूजा को ...

उनके सम्पूर्ण अस्तित्व को खींचकर उस दिव्य लिंग के
अंदर प्रवेश करवा रही हो

कुछ ही समय में आधार के उस खुले भाग में नगाचार्य
भी प्रवेश कर गया ।

उसके प्रवेश करते ही एक जोरदार धमाके की आवाज
हुई और शिवलिंग वापस जुड़ कर अपनी पूर्व अवस्था में
आ गया ।

अब वह किसी तप्त लोहे की तरह लाल दिखाई दे रहा था ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे किसी अज्ञात ऊष्मा से उसका रंग ऐसा हो गया हो ।

पूरा कमरा उसकी लालिमा से जगमगा रहा था । ऊपर वाले यंत्र से निकलने वाले रश्मियां शिवलिंग के जुड़ जाने के बाद बंद हो चुकी थी । लगभग 1 घंटे तक मंदिर उसी प्रकार से जगमगाता रहा । उसके बाद उसकी रोशनी धीरे-धीरे मंद पड़ने लगी

सुबह होते तक वह पूरी तरह से सामान्य हो चुका था

सुबह गुरुदेव के निर्देशानुसार शिष्यों की पूरी टीम सारे साजो सामान के साथ आ चुकी थी ।

इसके बाद मैंने गुरुदेव द्वारा बताए गए प्रक्रम के द्वारा उस शिवलिंग को एकादश रुद्र पूजन संपन्न करके जंगली लताओं से आबद्ध किया । उन लताओं को 11 दिन तक उसी प्रकार बंधा रखना था ।

उसके बाद 10 महाविद्याओं की उनके भैरवों के साथ स्थापना हुई । नियमानुसार बलि आदि नैमित्तिक कर्म सम्पन्न हुए ।

नीले रंग की आभा से जगमगा रहा था ।

मैं अपने आपको भी वहां पर देख पा रहा था ।

मेरा सूक्ष्म शरीर धीरे-धीरे उस ज्योतिर्लिंग की ओर बढ़ रहा था और बढ़ते बढ़ते उस ज्योतिर्लिंग में समाहित हो गया ।

उसके बाद मुझे ब्रह्मांड की अनेक दिव्य वस्तुओं के दर्शन हुए !

भगवती के मणिद्वीप के भी दर्शन हुए !

सबसे अंत में भगवान शिव के कैलाश पर्वत पर दिव्य दर्शन भी प्राप्त हुए.....

दिगंबर !

त्रिशूलधारी !

भस्माङ्गरांगी !

सोम गंगा से अभिषिक्त !

लगभग 100 फीट से भी ज्यादा विशालकाय !

दिव्य स्वरूप के दर्शन के बाद मैं भी भाव आवेश में आ गया !

उसके बाद क्या हुआ मुझे पता नहीं चला ।

दोपहर के लगभग 12 बजे होंगे !

तब मुझे होश आया !

बारिश तब भी हो रही थी.....

जैसे ही मुझे होश आया मुझे रात की घटनाओं का
आभास हुआ !

मेरी आंखों से आंसू बहने लगे !

मेरे गुरुदेव मुझसे अलग हो चुके थे दुख इस बात का
था !

भगवान शिव के दिव्य स्वरूप के दर्शन हुए उस बात की
खुशी थी !

ध्यान लिंगम संपूर्ण हो चुका था !

गुरुदेव के द्वारा किया गया यह कार्य संपूर्ण हो गया था !

इस बात की खुशी भी थी !!!

मैंने ध्यान लिंगम को दंडवत प्रणाम किया और द्वार
खोल कर बाहर आ गया ।

जैसे ही मंदिर का द्वार खोल कर मैं बाहर आ गया
बिजलियां और जोर से कड़कीं ।

प्रकृति की पूजा शायद अभी संपन्न नहीं हुई थी !

घनघोर बारिश होने लगी

ऐसा लग रहा था जैसे स्वयं इंद्रदेव उस ध्यान लिंगम का अभिषेक करने के लिए आतुर हो गए हो ।

उसे देख कर मैं फिर से मंदिर के अंदर आ गया ।

मूसलाधार बारिश के पानी से शिवलिंग का अभिषेक संपन्न होने लगा ।

थोड़ी देर में आधार पूरा का पूरा बारिश के पानी में डूब चुका था और भगवान शिव का दिव्य लिंग अपनी तेजस्विता के साथ मुस्कुराता हुआ प्रतीत हो रहा था । अब बारिश की गति मंद हो चुकी थी जैसे वह अभिषेक कर लेने की प्रसन्नता में शांत हो गई हो

मैं प्रकृति के इस अद्भुत पूजन का साक्षी बना हुआ अपने भाग्य पर इतरा भी रहा था

और गुरुदेव के विरह के विषय में सोच कर दुखी भी हो रहा था

इसके बाद वह सारा का सारा दृश्य वहाँ से विलुप्त हो गया ...

सामने वही मंदिर स्थापित था

और बाबा चंड भैरव मुस्कुरा रहे थे

ऐसा लग रहा था जैसे स्वयं इंद्रदेव उस ध्यान लिंगम का अभिषेक करने के लिए आतुर हो गए हो ।

उसे देख कर मैं फिर से मंदिर के अंदर आ गया ।

मूसलाधार बारिश के पानी से शिवलिंग का अभिषेक संपन्न होने लगा ।

थोड़ी देर में आधार पूरा का पूरा बारिश के पानी में डूब चुका था और भगवान शिव का दिव्य लिंग अपनी तेजस्विता के साथ मुस्कुराता हुआ प्रतीत हो रहा था । अब बारिश की गति मंद हो चुकी थी जैसे वह अभिषेक कर लेने की प्रसन्नता में शांत हो गई हो

मैं प्रकृति के इस अद्भुत पूजन का साक्षी बना हुआ अपने भाग्य पर इतरा भी रहा था

और गुरुदेव के विरह के विषय में सोच कर दुखी भी हो रहा था

इसके बाद वह सारा का सारा दृश्य वहाँ से विलुप्त हो गया ...

सामने वही मंदिर स्थापित था

और बाबा चंड भैरव मुस्कुरा रहे थे

हम समय यात्रा से वापस लौट चुके थे !!!

यह कुछ कुछ स्वप्न के टूटने जैसा था । हम दोनों उसी मंदिर में मौजूद थे । माधुरी की स्थिति भी कुछ-कुछ मेरे जैसी ही थी ।

ऐसे दिव्य अनुभव से गुजरने के बाद सामान्य परिस्थिति में आना बिल्कुल वैसा ही होता है जैसे रिमझिम बारिश में भीगते हुए किसी शख्स को उठाकर तपती हुई रेत पर डाल दिया गया हो....

खैर....

वास्तविकता वही थी हम उसी मंदिर के सामने खड़े थे । अब बारी थी मेरे सवाल जवाबों की क्योंकि बहुत सारे ऐसे प्रश्न मेरे दिमाग में आ रहे थे जिनका उत्तर मैं बाबा चंड भैरव से चाहता था ।

मैंने उनसे पूछा - मैंने जो देखा क्या वह सही था। उन्होंने कहा - काल एक अनंत यात्रा है जिसका कोई ओर छोर नहीं है । इसका हर बिंदु, हर क्षण एक दूसरे के साथ जुड़ा हुआ है । हमने इसे सेकंड मिनट, घंटे, दिन-रात, वर्ष में बांध दिया है लेकिन वास्तविकता यही है

कि हम आज को कल से और कल को परसों से अलग नहीं कर सकते । काल या समय निरंतर प्रवाह मान है । इस प्रवाह को रोका नहीं जा सकता !

हां !

इस प्रवाह में आगे और पीछे दोनों तरफ यात्रा करना संभव है ।

हममे से अधिकांश ने अपने भूतकाल या भविष्यकाल का ऐसा अनुभव कभी न कभी स्वप्न में किया होता है.... जो हमारे जीवन में कभी न कभी घट चुका होता है या घटने वाला होता है ।

उसमें हम ऐसा महसूस करते हैं जैसे हम उस घटना में स्वयं भागीदार है ।

कई डरावनी घटनाओं के अनुभव में हमारी हालत खराब हो जाती है हम पसीने से भीग जाते हैं यानी किसी न किसी रूप में हम समय यात्रा करते हैं।

साधनात्मक रूप से यह अनंत काल से संभव रहा है । मानवीय शरीर के अंदर स्थित अनेक गुप्त ग्रंथियों में इस प्रकार की क्षमता मौजूद है । हमारे योगी इसे त्रिकाल सिद्धि कहा करते थे । ऐसे योगियों को जो इस प्रकार

समय के आरपार यात्रा कर सकते थे उन्हें त्रिकालज्ञ कहा जाता था ।

मैंने पूछा- क्या इस प्रकार समय यात्रा करने पर पूर्व के काल में या भविष्य के काल में जाकर किसी प्रकार का परिवर्तन करना संभव है ।

बाबा ने कहा - यह उस सिद्ध योगी की इच्छा पर निर्भर करता है । सामान्यतः ऐसे हस्तक्षेप नहीं किया जाता क्योंकि इससे बहुत सारी घटनाओं में परिवर्तन आ जाता है । उदाहरण के लिए अगर मैं 2000 साल पहले की यात्रा पर निकल जाऊं और वहां पर किसी व्यक्ति की हत्या कर दी जिसके दस बच्चे होने वाले थे तो उसकी आने वाली पीढ़ियां पैदा नहीं हो पाएंगी । हो सकता है कि 2000 साल में उनके बच्चे और उनके बच्चे इस प्रकार से कुल मिलाकर लाखों लोग जो जन्म लेने वाले थे ।

वे जन्म नहीं लेंगे क्योंकि मूल समाप्त हो गया है इससे वह भी समाप्त हो जाएंगे !

इस प्रकार से यह प्रकृति की व्यवस्था में एक बहुत बड़ा आघात हो जाएगा और इस प्रकार के आघात स्वीकार्य नहीं होते ।

बाबा ने कहा - आओ तुम्हें कुछ और चीजें दिखाता हूं ।
जैसा कि मैंने कहा था वह मंदिर एक अत्यंत अद्भुत और विशालकाय शिवलिंग को अपने अंदर समेटे हुए था

शिवलिंग के आधार के पास एक चौकोन पत्थर का बक्सा जैसा बना हुआ था । उसके बाहर की तरफ गोल गोल आकृतियां बनी हुई थी । यह सारी चीजें पत्थर की बनी हुई थी । जिसे देखकर ऐसा आभास होता था कि वहां पर कुछ डिजाइन बनाया गया होगा ।

बाबा ने उन गोल आकृतियों को तीन बार दाहिनी तरफ घुमाया और उसके बाद चार बार बाईं तरफ घुमाया । इतना करते ही बक्से के बीच का एक हिस्सा जो लगभग 8 इंच लंबा चौड़ा रहा होगा , वह अपनी जगह से बाईं तरफ खिसक गया !
वहां पर एक गड्ढा दिखाई देने लगा !

उस गड्ढे के अंदर एक गोल छल्ला दिख रहा था । जो कुछ कुछ वैसा था जैसे हम पंखा लटकाने के लिए छत पर लगाते हैं, लेकिन उसका आकार उससे थोड़ा सा बड़ा था । लगभग 4 इंच के व्यास का रहा होगा । बाबा ने उस गोल छल्ले को अपनी तरफ खींचा और उसे 11 बार किसी चाबी की तरह घुमाया ।

इतना करते ही एक अजीब सी सरसराहट जैसी आवाज आने लगी ऐसा लग रहा है जैसे कुछ घूम रहा है !

लगभग 1 मिनट के बाद मुझे लगा कि हमारी बाईं तरफ का एक पत्थर अपने स्थान से खिसक रहा है

वाकई वह अपने स्थान से दाहिनी ओर बढ़ रहा था

नीचे कुछ काला काला दिखाई दे रहा था ।

दस मिनट में वह पत्थर पूरा का पूरा खिसक गया और लगभग 2 फुट बाईं 2 फुट का गड्ढा वहां पर दिखाई देने लगा !

अब बाबा ने अपनी थैली में हाथ डाला और बाहर निकाला तो उनके हाथ में एक टॉर्च थी । उसकी रोशनी में वे धीरे-धीरे नीचे उतरने लगे !

वहां सीढ़ियां बनी हुई थी !

उन्होंने हमें पीछे आने का इशारा किया !

हम भी धीरे-धीरे उनके पीछे चले गए !

नीचे एक और वैसा ही छल्ला लगा हुआ था ।

जिसे बाबा ने उल्टी दिशा में 11 बार घुमाया ।

वह पत्थर जिसमें से हम लोग नीचे आए थे वह वापस अपने स्थान की ओर सरकने लगा

हम जिस स्थान पर आए थे, वह एक हाल नुमा कमरा था जो आकार में ऊपर के मंदिर के आकार से बराबर या थोड़ा छोटा रहा होगा

कक्ष के बीचो बीच एक छोटा सा शिवलिंग बना हुआ था जो लगभग एक फुट ऊंचा और डेढ़ फुट चौड़ा रहा होगा !

ऊपर मंदिर में बने हुए विशालकाय शिवलिंग की तुलना में यह उसका दसवां हिस्सा रहा होगा ।

यह शिवलिंग पारे का बना हुआ था

शिवलिंग पर ऊपर से अपने आप बूंद बूंद पानी गिर रहा था ।

यह कमरे के बिल्कुल मध्य में स्थापित था !

जिससे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह ऊपर वाले शिवलिंग के ठीक नीचे स्थित है !

बाबा ने हमको उसके पास बैठने का इशारा किया !

हम वहाँ बैठ गए !

मैंने ऊपर की तरफ देखा तो वहाँ उसी प्रकार का एक यंत्र बना हुआ था

जैसा ऊपर मंदिर की छत पर बना था लेकिन यह उससे आकार में छोटा था

बाबा ने बताया - वास्तव में यही मूल ध्यान लिंग है ।

ऊपर जो ध्यान लिंग बनाया गया है वह इसका आवरण है । वह इस ध्यानलिंग की उर्जा को अपने अंदर समेटता है और आने वाले भक्तों में प्रवाहित करता रहता है ।

इसका कारण यह है कि इस ध्यान लिंग के अंदर असीमित ऊर्जा विद्यमान है । इस के सानिध्य में जो भी सामान्य व्यक्ति बैठेगा वह इस ऊर्जा के प्रवाह को सहन नहीं कर पाएगा ।

इसके पास बैठने के लिए जरूरी है कि वह पहले से एक सिद्ध पुरुष हो , उसके अंदर शक्तियों का संचार पहले से हो रहा हो, तभी वह इस शिवलिंग के पास बैठ सकता है

अन्यथा उसकी मृत्यु भी हो सकती है।

तुम दोनों ने विभिन्न साधनाएं संपन्न की है इसलिए तुम इस स्थान पर बैठ पा रहे हो

अन्यथा अभी तक तुम्हारा शरीर और मस्तिष्क विचलन की अवस्था में आ चुका होता ।

उन्होंने हमें उस ध्यानलिंग पर त्राटक करने का निर्देश दिया

हम दोनों ने उस पर त्राटक करना प्रारंभ कर दिया !

त्राटक का अर्थ होता है किसी भी वस्तु को ध्यान से लगातार देखते रहना

इसमें आंखों को हल्का खुला रखा जाता है और उसे बंद नहीं करना होता है अर्थात् पलकें झपकाने का निषेध होता है

त्राटक का प्रयोग अपनी मानसिक शक्तियों को केंद्रित करने के लिए किया जाता है ।

इसके लिए सफेद कागज में बिंदु लगाकर उस पर ध्यान केंद्रित करने से लेकर शक्ति चक्र और घूमते हुए शक्ति चक्र का भी प्रयोग किया जाता है ।

त्राटक से आंखों में सम्मोहन क्षमता का भी विकास होता है । जो उच्च कोटि के सम्मोहन विशेषज्ञ होते हैं वह त्राटक का अभ्यास करते हैं । इससे उनकी आंखों में एक विशेष प्रकार का आकर्षण और सम्मोहन पैदा हो जाता है ।

कई उच्च कोटि के सन्यासी चंद्रमा पर त्राटक करते हैं । चंद्रमा मन का प्रतिनिधि माना जाता है इसलिए चंद्रमा पर त्राटक करने से भी आंखों में सम्मोहन क्षमता का विकास होता है.....

लेकिन यह सब नियमित रूप से करना पड़ता है लगातार करते रहना पड़ता है.... अन्यथा वह क्षमता क्षीण होनी शुरू हो जाती है ।

इसके अलावा जो उग्र साधनाएं होती हैं उसमें भी अपने इष्ट या आराध्य को इसी प्रकार देखते हुए या त्राटक करते हुए साधना करने का विधान भी बताया गया है । कुछ 15 सेकंड बीते होंगे

अब मुझे वे सूक्ष्म रश्मियां दिखने लगी जो उस शिवलिंग से निकलकर ऊपर की ओर प्रवाहित हो रही थी ! ऊर्ध्वमुखी त्रिकोण जैसे

वह एक त्रिकोण के आकार की आकृति थी । जिसका नोक वाला हिस्सा ऊपर की ओर था और आधार वाला हिस्सा उस शिवलिंग के आधार से निकलता हुआ प्रतीत होता था ।

गहरे नीले रंग के बने हुए उस सूक्ष्म त्रिकोणाकार स्वरूप में अग्निशिखाओं के समान नीली नीली लपटें ऊपर की ओर बढ़ती हुई जा रही थी और ऊपर छत पर बने हुए यंत्र के निर्माण में प्रयुक्त की गई लाइनों को नीले आकार में रंग रही थी और उसके अंदर समाहित होती जा रही थी ।

यह कुछ कुछ वैसा था जैसे किचन के अंदर जो चिमनी लगी हुई होती है

वह चूल्हे से निकलते धुएं को अपनी ओर खींच कर ऊपर भेज देती है !

ठीक वैसा ही यहां पर भी था !

फर्क सिर्फ इतना था कि चिमनी की जगह पर वह दिव्य यंत्र लगा हुआ था जो ध्यान लिंग के अंदर से निकलती हुई शक्ति किरणों को अपने अंदर समाहित कर के ऊपर बने हुए विशालकाय ध्यानलिंग आवरण में प्रवाहित कर रहा था

जब वापस सामान्य अवस्था मे आए तो हम उसी आश्रम के कक्ष में मौजूद थे जहां से बाबा ने हमारी यात्रा प्रारंभ करवाई थी ।

अभी भी तीनों का शरीर नीले रंग की आभा से जगमगा रहा था !

ऐसा लग रहा था जैसे नीले रंग का आभामंडल चारों तरफ फैला हुआ हो ।

आश्रम में पहुंचने के बाद बाबा ने शांति मंत्रों का उच्चारण किया

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः

पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः

सर्वं शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

यजुर्वेद के इस शांति मंत्र में सृष्टि के समस्त तत्वों व कारकों से शांत होने की प्रार्थना है।

इसका भावार्थ यह है कि द्युलोक में शांति हो, अंतरिक्ष में शांति हो, पृथ्वी पर शांति हों, जल में शांति हो, औषध में शांति हो, वनस्पतियों में शांति हो, विश्व में

शांति हो, सभी देवतागणों में शांति हो, ब्रह्म में शांति हो,
सब में शांति हो, चारों ओर शांति हो, शांति हो, शांति
हो, शांति हो।

पाठ समाप्त होते-होते वह नीले रंग की आभा हमारे
शरीर के अंदर समाहित होकर लुप्त हो चुकी थी ।
यह उतना आसान नहीं था जितना लग रहा था !
हम दोनों को उसी कक्ष में छोड़कर बाबा बाहर निकल
गए ।

हम दोनों का शरीर एकदम ठंडा हो चुका था !
ऐसा लग रहा था जैसे अभी अभी बर्फ से निकल कर
आए हो !

मैंने अपनी बात की पुष्टि के लिए माधुरी को छूकर
देखा

वाकई एकदम ठंडा

बर्फ जैसा हो चुका था हम दोनों का शरीर !
लगभग दो दिनों तक यही स्थिति बनी रही ।

तीसरे दिन बाबा ने 15 दिनों का अनुष्ठान बताया जो हमें
संपन्न करना था ।

इसके अंतर्गत राज राजेश्वर कामेश्वर शिव के मंत्र का तीन लाख जाप करना था !

इसके लिए उन्होंने भगवान शिव के जिस स्वरूप का वर्णन किया

वह सामान्य स्वरूप से बिल्कुल अलग था ।

इस रूप में भगवान शिव दिगंबर नहीं थे

न तो भस्म से रचे हुए थे

बल्कि संपूर्ण रूप से सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित और मुकुट तथा आभूषण धारण किए हुए थे

भगवान शिव के इस प्रकार के स्वरूप का वर्णन हमने पहली बार सुना था ।

इसलिए हमारे मन में उस स्वरूप को लेकर जिज्ञासा का भाव आया । जिसे संभवतः बाबा ने समझ लिया और उन्होंने कामेश्वर शिव के विषय में कथा सुनाई

बाबा चंड भैरव बोले - देवी सती भगवान शिव की पत्नी थीं और प्रजापति दक्ष की पुत्री

इसके अंतर्गत राज राजेश्वर कामेश्वर शिव के मंत्र का तीन लाख जाप करना था !

इसके लिए उन्होंने भगवान शिव के जिस स्वरूप का वर्णन किया

वह सामान्य स्वरूप से बिल्कुल अलग था ।

इस रूप में भगवान शिव दिगंबर नहीं थे

न तो भस्म से रचे हुए थे

बल्कि संपूर्ण रूप से सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित और मुकुट तथा आभूषण धारण किए हुए थे

भगवान शिव के इस प्रकार के स्वरूप का वर्णन हमने पहली बार सुना था ।

इसलिए हमारे मन में उस स्वरूप को लेकर जिज्ञासा का भाव आया । जिसे संभवतः बाबा ने समझ लिया और उन्होंने कामेश्वर शिव के विषय में कथा सुनाई

बाबा चंड भैरव बोले - देवी सती भगवान शिव की पत्नी थीं और प्रजापति दक्ष की पुत्री

प्रजापति दक्ष ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं । उनको प्रजापति होने के कारण सभी ऋषियों और देवताओं के द्वारा सम्मान प्रदान किया जाता था ।

देवाधिदेव महादेव उनके दामाद होने के बावजूद उनके प्रति वैसा सम्मान व्यक्त नहीं करते थे क्योंकि वह तो स्वयं आदि पुरुष थे !

इसलिए उनका स्थान प्रजापति से कई गुना ऊंचा था.....

वे उस गरिमा को ध्यान में रखते हुए प्रजापति को वैसा सम्मान नहीं देते थे !

जैसा बाकी देवी देवता देते थे ।

भगवान शिव नंग धड़ंग, विचित्र वेशभूषा धारी, फक्कड़ व्यक्तित्व के स्वामी थे !

जिनका व्यक्तित्व प्रजापति दक्ष के लिए बड़ा असहनीय हुआ करता था, लेकिन वह दामाद होने की वजह से उनको सहन करते थे ।

किसी सभा में जब भगवान शिव उपस्थित होते थे तो बाकी देवी देवता प्रजापति दक्ष की तुलना में भगवान शिव को ज्यादा सम्मान देते थे !

यह बात भी दक्ष को खटकती थी !

दक्ष के हृदय में भगवान शिव के प्रति विरोध का भाव हमेशा बना रहता था ।

उनको ऐसा लगता था कि भगवान शिव उनका अपमान कर रहे हैं और उस अपमान का बदला लेने के लिए वह चिंतन करते रहते थे

इस विचार को मन में रखते हुए भगवान शिव को नीचा दिखाने के विचार से एक बार देवी सती के पिता प्रजापति दक्ष ने एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया ।

जिसमें संपूर्ण देवी देवताओं को बुलाया गया था । भगवान शिव से विद्वेष की वजह से उन्होंने भगवान शिव और देवी सती दोनों को नहीं बुलाया.....

कैलाश पर्वत पर विराजमान सती ने जब देवलोक के देवताओं को अपने-अपने वाहनों पर बैठकर प्रजापति दक्ष के निवास की ओर जाते हुए देखा तो उनसे इसका कारण पूछा ।

जब उन्हें यह पता चला कि उनके पिता प्रजापति दक्ष यज्ञ का आयोजन कर रहे हैं तो वह यज्ञ में शामिल होने के लिए आतुर होने लगी.....

मायके में होने वाले आयोजन में शामिल होने की इच्छा हर स्त्री की रहती है !

उन्होंने भगवान शिव से इस संबंध में निवेदन किया ।

भगवान शिव ने स्पष्ट कहा - देवी सती ! जब हमें आमंत्रण नहीं मिला है तो हमें नहीं जाना चाहिए ।

बाल हठ , राज हठ और स्त्री हठ दुनिया में प्रसिद्ध है ।

बाल हठ, यानि अगर बच्चा किसी बात पर अड़ जाए, तो फिर उसे समझाना बड़ा मुश्किल होता है । बच्चे को वह चीज दिलानी ही होती है, तब जाकर वह शांत होता है ।

इसी प्रकार किसी राज पद पर बैठे हुए व्यक्ति को किसी चीज की सनक हो जाए, या किसी जिद पर वह आ जाए, तो वह उस चीज को मनवा कर ही मानता है । स्त्री हठ के विषय में बताने की आवश्यकता शायद नहीं है

जितने विवाहित पुरुष हैं, वे अपने जीवन में इसका अनुभव अवश्य कर चुके होंगे ।

जो विवाहित नहीं है, और जिनकी प्रेमिका है, वह भी इसका अनुभव कर चुके होंगे ।

जब स्त्री हठ पर आ जाए, तो वह अपनी इच्छा अनुसार कार्य करवा कर ही छोड़ती है । इसी प्रकार के हठ के चलते कई कार्य होते हैं, जो अनेक प्रकार की घटनाओं को जन्म देते हैं । इसका सबसे बड़ा उदाहरण माता सीता के द्वारा स्वर्ण मृग की प्राप्ति का हठ था , जो आगे चलकर राम रावण के युद्ध का कारण बना खैर ...

देवी सती को भी नहीं मानना था और वह नहीं मानी ! ऐसी स्थिति में पति को पत्नी की बात स्वीकार करनी ही होती है और चाहे अनचाहे उसको अनुमति देनी ही पड़ती है ।

देवी सती भी जिद करके भगवान शिव की अनुमति लेकर अकेले ही प्रजापति दक्ष के यज्ञ में शामिल होने के लिए चली गई ।

यज्ञ स्थल पर पहुंचने पर पिता दक्ष का व्यवहार बहुत ज्यादा सम्मानजनक नहीं था जिसे देखकर सती को थोड़ी सकुचाहट भी हुई

अपने आने के निर्णय पर थोड़ा पश्चाताप भी हुआ.....

फिर उसने जब यज्ञ स्थल पर जाकर देखा तो सारे देवी देवताओं की वेदियां बनी हुई थी

लेकिन !

भगवान शिव के लिए वेदी नहीं बनी थी ।

जबकि उनके वेदी के बिना कोई भी यज्ञ पूर्ण नहीं हो सकता था ।

वहां उपस्थित सारे देवी-देवताओं और ऋषियों से उन्होंने इस संबंध में प्रश्न पूछा - आप लोग ऐसे यज्ञ में कैसे सम्मिलित हो रहे हैं जिसमें देवाधिदेव शिव का स्थान नहीं रखा गया है ?

इस पर प्रजापति दक्ष सती पर क्रोधित हो गए और उन्होंने उनसे स्पष्ट शब्दों में कहा - तुम बिना निमंत्रण के यहां पर आई हो । अगर रहना चाहती हो तो शांति से रुको । अन्यथा यज्ञ स्थल छोड़कर जाने के लिए तुम स्वतंत्र हो.....

इसके अलावा उन्होंने भगवान शिव पर अपमानजनक टिप्पणियां भी की । कहा - वह औघड ! नंगे बदन घूमने वाला, भस्म लगाने वाला, सम्मान का पात्र कैसे हो सकता है ?

इतना सुनते ही सती अत्यंत क्रोधित हुई और उन्होंने अपनी योगाग्नि प्रज्वलित करके स्वयं को यज्ञ कुंड में ही जला दिया ।

यह एक प्रलयंकारी घटना थी !

जिसकी अपेक्षा वहां उपस्थित देवी देवताओं ने भी नहीं की थी ।

सभी भगवान शिव के क्रोध को जानते थे !

यह भी जानते थे कि सती का आत्मदाह एक भयानक विपत्ति का प्रारंभ है !

और वास्तव में ऐसा हुआ भी

भगवान शिव को जब इस आत्मदाह का आभास हुआ तो उनका प्रलयंकर स्वरूप जागृत हो गया ।

उन्होंने अपनी जटा तोड़ कर जमीन पर दे मारी और वहां से प्रलयंकारी वीरभद्र और भद्रकाली का प्रादुर्भाव हुआ

। जिनको भगवान शिव ने दक्ष के यज्ञ के विध्वंस का आदेश दे दिया ।

दोनों ने मिलकर प्रजापति दक्ष के यज्ञ का विध्वंस भी किया और वहां उपस्थित समस्त देवी देवताओं और ऋषियों को भयंकर प्रताड़ना भी दी । सारा यज्ञ उन्होंने तहस-नहस कर दिया ।

सारे देवी देवता वहां से भाग खड़े हुए ।

प्रजापति दक्ष ने भी छुपने का प्रयास किया लेकिन उन्होंने प्रजापति दक्ष का सिर छेदन कर दिया

इसके बाद देवताओं के आग्रह और क्षमा याचना के बाद भगवान शिव का क्रोध शांत हो गया !

उन्होंने प्रजापति दक्ष के सिर पर की जगह बकरे का सिर प्रत्यारोपित करके उन्हें जीवनदान दे दिया ।

देवी सती के इस प्रकार चले जाने से भगवान शिव पूर्णतः विचलित अवस्था में आ गए ।

वह सती के शरीर को लेकर पूरे ब्रह्मांड में विचरण करने लगे

उनका स्वरूप उस समय अत्यंत भयंकर था !

क्रोध से देदीप्यमान उनके उस उग्र स्वरूप को देख कर कोई भी उनके पास जाने का साहस नहीं कर पा रहा था ।

ऐसी स्थिति में सभी देवी देवताओं ने मिलकर भगवान विष्णु को इसका हल निकालने का कार्य सौंपा । जिसके बाद उन्होंने अपने सुदर्शन चक्र के द्वारा देवी सती के मृत देह के टुकड़े किए । जो पृथ्वी पर अलग-अलग स्थानों पर गिरे । जिन्हें देवी का शक्तिपीठ माना जाता है । इसमें सबसे प्रमुख शक्तिपीठ कामाख्या का शक्तिपीठ है । जिसे तंत्र साधना का केंद्र भी माना जाता है ।

भगवान शिव सती के विरह की वेदना और उत्ताप की वजह से इतना विचलित हो गए थे कि वह समस्त संसार और प्राणी मात्र से विमुख हो गए ।

जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे कि केवल भगवान शिव ऐसे देवता हैं जिनका अर्धनारीश्वर स्वरूप है । वे पुरुष शक्ति और स्त्री शक्ति दोनों का संयुक्त स्वरूप है ।

इस सृष्टि में जो भी उत्पन्न होता है वह पुरुष शक्ति और स्त्री शक्ति के मिलन से होता है !

उनके आपसी सहवास से ही होता है !

इसका संचालन भगवान शिव और उनकी शक्ति के माध्यम से ही होता है ।

भगवान शिव की शक्ति दक्ष के यज्ञ में विलुप्त हो चुकी थी , जिसके बाद अब शिव शक्ति हीन हो चुके थे ।

विचलन की इस अवस्था में वह ध्यान में चले गए ।

कई वर्षों तक वह इसी प्रकार संसार से विमुख होकर ध्यान मग्न बने रहे ।

शिव और शक्ति का समन्वय जब तक नहीं होगा तब तक सृष्टि में कुछ भी नवीन उत्पन्न नहीं हो सकता !

इसलिए सृष्टि में ठहराव आने लगा !

नवीन की उत्पत्ति बंद हो गई !

जो उपस्थित था वह धीरे-धीरे वयोवृद्ध होने लगा !

उसमें उत्पादकता की कमी आने लगी !!

यह स्थिति संसार को समाप्त करने के लिए पर्याप्त थी

इसको एक उदाहरण के माध्यम से समझाने का प्रयास करता हूँ

आप कल्पना कीजिए कि किसी स्थान पर या किसी प्रदेश में 200 लोग निवास करते हैं । जिसमें से 100 पुरुष है और 100 स्त्रियां हैं ।

इनमें से मान लीजिए कि 50 पुरुष और स्त्रियां ऐसी है जो वृद्धावस्था को प्राप्त कर चुकी हैं और उनके द्वारा संतान की उत्पत्ति नहीं हो सकती ।

बाकी 50 स्त्री और पुरुष ऐसे हैं जो बच्चे हैं और वह भी संतान उत्पन्न नहीं कर सकते ।

शेष बचे हुए 100 युवा लोग जिनमें से मान लीजिए कि 50 पुरुष और 50 स्त्री हैं यानी कि 50 युवा जोड़ी ऐसी है जो संतान उत्पन्न करने की क्षमता रखते हैं ।

यही उस प्रदेश की जनसंख्या को आगे बढ़ाने का कार्य करेंगे ।

अब मान लीजिए किसी कारण से वहाँ सभी की संतान उत्पादक क्षमता समाप्त हो जाती है ।

ऐसी स्थिति में 20 वर्ष के बाद एक ऐसी स्थिति आएगी जब वह 50 युवा जोड़े भी वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाएंगे

जीव मात्र में उत्पादन की क्षमता समाप्त होने लगी थी !
यहां तक की पेड़ पौधों में भी धीरे धीरे उत्पादकता का
अभाव होने लगा था

यह स्थिति संसार को समाप्त करने के लिए अग्रसर थी !
जो कि उपयुक्त नहीं माना जाता !
सभी ऋषि-मुनियों देवताओं ने मिलकर इस समस्या के
समाधान के लिए भगवती जगदंबा की आराधना की !
उन्हें पुनः प्रकट होने और भगवान शिव के सानिध्य में
जाने की प्रार्थना की.....

काफी प्रयत्नों के बाद भगवती जगदंबा प्रसन्न हुई और
उन्होंने पर्वतराज हिमालय के घर में देवी पार्वती के रूप
में जन्म लिया

देवी पार्वती धीरे-धीरे बड़ी होने लगी और उनके लिए
वर के विषय में भी चर्चा चलने लगी ।

देवर्षि नारद एक अद्भुत व्यक्तित्व है ।

वे ब्रह्माजी के मानस पुत्र है ।

वे एक प्रकार से ब्रह्मांडीय व्यक्तित्व है ।

जीव मात्र में उत्पादन की क्षमता समाप्त होने लगी थी !
यहां तक की पेड़ पौधों में भी धीरे धीरे उत्पादकता का
अभाव होने लगा था

यह स्थिति संसार को समाप्त करने के लिए अग्रसर थी !
जो कि उपयुक्त नहीं माना जाता !
सभी ऋषि-मुनियों देवताओं ने मिलकर इस समस्या के
समाधान के लिए भगवती जगदंबा की आराधना की !
उन्हें पुनः प्रकट होने और भगवान शिव के सानिध्य में
जाने की प्रार्थना की.....

काफी प्रयत्नों के बाद भगवती जगदंबा प्रसन्न हुई और
उन्होंने पर्वतराज हिमालय के घर में देवी पार्वती के रूप
में जन्म लिया

देवी पार्वती धीरे-धीरे बड़ी होने लगी और उनके लिए
वर के विषय में भी चर्चा चलने लगी ।

देवर्षि नारद एक अद्भुत व्यक्तित्व है ।

वे ब्रह्माजी के मानस पुत्र है ।

वे एक प्रकार से ब्रह्मांडीय व्यक्तित्व है ।

वह भगवान विष्णु के परम भक्त हैं ,उनको सभी लोकों में स्वतंत्र भाव से विचरण करने की क्षमता प्राप्त है ।
जब भी देवी देवताओं में किसी भी प्रकार की समस्या आती है तो उसके समाधान के लिए देवर्षि नारद को खोजा जाता है इस मामले में भी उन्हें खोजा गया

विचार विमर्श के बाद देवताओं की ओर से नारद मुनि को इस कार्य के लिए भेजा गया ताकि पार्वती के मन में शिव को पति रूप में प्राप्त करने का भाव पैदा हो ।

नारद मुनि ने जाकर उनके समक्ष भगवान शिव का और उनकी महिमा का वर्णन किया ।

जिसके बाद उन्होंने कहा - देवी पार्वती ! तुम इस संसार की सर्वश्रेष्ठ स्त्री रत्न हो । इस पूरे संसार में देवधिदेव महादेव ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो तुम्हारा वर बनने के योग्य है !

उनसे श्रेष्ठ इस ब्रह्मांड में कोई नहीं है ।

देवी पार्वती का जन्म तो उसी उद्देश्य से हुआ था !

तो उन्होंने इस बात को स्वीकार कर लिया और देवर्षि नारद से भगवान शिव को प्राप्त करने के लिए किए जाने वाले उपाय के विषय में पूछा ।

देवर्षि नारद ने देवी पार्वती को भगवान शिव की साधना करने का सुझाव दिया । जिसे मानते हुए वे अखंड साधना में लीन हो गई ।

देवी पार्वती की कई वर्षों की तपस्या के बाद भी भगवान शिव के ऊपर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ा और वे तटस्थ भाव से ध्यानस्थ बैठे रहे ।

यह सब देख कर देवताओं ने कामदेव को प्रेरित किया कि वह भगवान शिव के अंदर काम भावना की उत्पत्ति करें, ताकि उनका आकर्षण पार्वती के तरफ हो और दोनों विवाह बंधन में बंध जाए और सृष्टि वापस पुराने क्रम में आ जाए ।

कामदेव भगवान शिव के क्रोध को जानते थे !

इसलिए उन्होंने इस कार्यक्रम से बचने का भरपूर प्रयास किया !!

लेकिन.....

सारे देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों ने मिलकर उनको समझाया कि उनके इस कार्य से ही संसार का चक्र वापस चल सकता है !

अन्यथा संसार समाप्त हो जाएगा !

सभी के अस्तित्व का कोई महत्व नहीं रह जाएगा!!

अंततः

कामदेव इस कार्य को करने के लिए राजी हो गए ।

उन्होंने उचित समय देखकर भगवान शिव के ऊपर अपने पुष्प बाण का संधान कर दिया

उनके हृदय में काम भाव की उत्पत्ति हो जाए, ऐसी व्यवस्था उत्पन्न कर दी

जैसे ही उन्होंने अपना प्रयोग संपन्न किया !

भगवान शिव के अंदर विचलन पैदा हुआ !!

ध्यानस्थ भगवान शिव को घोर आश्चर्य हुआ - ध्यान की अवस्था में बैठने के बावजूद

इतने वर्षों के बाद.....

मेरे मन में यह विचलन कैसे उत्पन्न हुआ ?

क्षण मात्र में उनको कामदेव के द्वारा किए गए कार्य का आभास हो गया !

उनके अंदर क्रोध की ज्वाला भड़क उठी !!

उनका तीसरा नेत्र खुल गया !!!

जैसे ही उनका तीसरा नेत्र खुला

उसमें से निकलती हुई ज्वाला ने कामदेव के शरीर को भस्म कर दिया ।

वह राख के ढेर में परिवर्तित हो गए ।

यह देखकर कामदेव की पत्नी रति विलाप कर उठी

भगवान शिव ठहरे भोलेनाथ

क्रोध में उन्होंने कामदेव को भस्म तो कर दिया लेकिन रति के विलाप और देवताओं की याचना के बाद उनके हृदय में करुणा उत्पन्न हो गई....

उन्होंने देवताओं की इच्छा अनुसार देवी पार्वती को स्वीकार करने का मन बना लिया ।

देवी रति के द्वारा बार-बार क्षमा याचना और अपने पति को पुनर्जन्म प्रदान करने की इच्छा को भी उन्होंने स्वीकार कर लिया । उन्हें यह वरदान दिया कि भगवान

कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के रूप में कामदेव पुनः सशरीर उन्हें प्राप्त हो जाएंगे ।

कालांतर में ऐसा ही हुआ

भगवान शिव के द्वारा पार्वती का वरण करने की सहमति मिलते ही विवाह की तैयारियां प्रारंभ हो गई ।

भगवान शिव शमशान के अधिपति माने जाते हैं ।

इसलिए उनके गण में से अधिकांश भूत प्रेत पिशाच आदि है । जिनका आकार प्रकार अपने आप में विचित्र और भयानक होता है ।

आप लोगों ने बरात देखी होगी । बारात में जान पहचान वाले दोस्त और रिश्तेदार ही जाते हैं ।

अब भगवान शिव ठहरे अजन्मा !

इसलिए उनके परिवार में कोई तो था नहीं !!

तो यही सारे गण यानि भूत पिशाच उनकी बारात में शामिल हो गए

बरात में सभी लोग सज धज के, बन ठन के जाते हैं ।

सभी का यह प्रयास होता है कि वह ज्यादा से ज्यादा सुंदर दिखे ।

दूल्हे को भी यथासंभव सजा संवार कर सेहरा लगाकर
सुंदर वस्त्रों से सजाकर ले जाया जाता है.....

यहां यह भी बात है कि

सब का सजने का तरीका अलग अलग होता है ।

अफ्रीका में एक जनजाति है जिसका नाम है मुर्सी ।
अगर गूगल सर्च करके आप देखेंगे तो पाएंगे कि वे
निचले होठ के अंदर लकड़ी से बने हुए गोलाकार प्लेट
को लगाकर लड़कियों के होठों को लंबा कर देते हैं
। वहां महिलाओं के लंबे होठ सौंदर्य का प्रतीक माने
जाते हैं । लेकिन वही चीज भारत या अन्य स्थानों पर
कुरूपता मानी जाएगी ।

भगवान शिव के मामले में बात ही दूसरी थी ।

वे स्वयं श्मशान में निवास करने वाले !

और उनके बाराती भी वैसे ही !!

तो उनका सौंदर्य और सजने का पैमाना भी बिल्कुल
अलग ही था !!!

और वे अपने ही स्टाइल में सज धज कर पहुंचे थे !!!

दूल्हे अर्थात भगवान शिव का वेश तो आप जानते ही हैं
।

भस्म से पूरी तरह से उनको लपेट दिया गया था ।
सर से लेकर पांव तक वह मसान की भस्म से रंगे हुए
थे

जटा जूट बिखरे हुए थे ।

सर पर !

गर्दन में !!

सर्प बैठे हुए थे !!!

उसी भयानक स्वरूप में वह दूल्हा बनकर बरात में आगे
आगे चल रहे थे ।

उनका यह स्वरूप ही किसी को भी भयभीत और
विचलित कर देने के लिए काफी था।

उनकी बारात उससे भी भयानक थी !

विचित्र विचित्र प्रकार के आकार वाले भूत प्रेत और
योगिनीयों डाकिनियों का समूह अपने अधिपति के
साथ बरात में शामिल था !!

जिनके आकार प्रकार और वेशभूषा के बारे में कुछ भी
कहना मुश्किल होगा !!!

इस जानकारी को सुनकर माता मैना धम्म से जमीन पर बैठ गई !

जब उन्हें थोड़ा होश आया तो वे उठ कर बारात को और संभावित दामाद को देखने के लिए अपने महल के कंगूरे पर जा पहुंची

भगवान शिव अपने विशिष्ट स्वरूप में सामने मौजूद थे

और उनके साथ थी उनकी अतलंगी बरात !

भगवान शिव का स्वरूप ही किसी को भी बेहोश कर देने के लिए पर्याप्त था ।

उसके ऊपर से इन सारे बारातियों का स्वरूप देखकर माता मैना बेहोश हो गई ।

काफी प्रयास करने के बाद उनको होश में लाया गया ।

उनके मन में विचार आया कि मेरी फूल जैसी कन्या, इस विचित्र भयानक आदमी के साथ कैसे रहेगी ।

उन्होंने कन्यादान से इंकार कर दिया ।

उन्होंने साफ कह दिया - मैं ऐसे विचित्र आदमी को अपनी कन्या बिल्कुल नहीं दूंगी ।

अब धर्म संकट की स्थिति सामने आ गई थी ।

इस जानकारी को सुनकर माता मैना धम्म से जमीन पर बैठ गई !

जब उन्हें थोड़ा होश आया तो वे उठ कर बारात को और संभावित दामाद को देखने के लिए अपने महल के कंगूरे पर जा पहुंची

भगवान शिव अपने विशिष्ट स्वरूप में सामने मौजूद थे

और उनके साथ थी उनकी अतलंगी बरात !

भगवान शिव का स्वरूप ही किसी को भी बेहोश कर देने के लिए पर्याप्त था ।

उसके ऊपर से इन सारे बारातियों का स्वरूप देखकर माता मैना बेहोश हो गई ।

काफी प्रयास करने के बाद उनको होश में लाया गया ।

उनके मन में विचार आया कि मेरी फूल जैसी कन्या, इस विचित्र भयानक आदमी के साथ कैसे रहेगी ।

उन्होंने कन्यादान से इंकार कर दिया ।

उन्होंने साफ कह दिया - मैं ऐसे विचित्र आदमी को अपनी कन्या बिल्कुल नहीं दूंगी ।

अब धर्म संकट की स्थिति सामने आ गई थी ।

इस जानकारी को सुनकर माता मैना धम्म से जमीन पर बैठ गई !

जब उन्हें थोड़ा होश आया तो वे उठ कर बारात को और संभावित दामाद को देखने के लिए अपने महल के कंगूरे पर जा पहुंची

भगवान शिव अपने विशिष्ट स्वरूप में सामने मौजूद थे

और उनके साथ थी उनकी अतलंगी बरात !

भगवान शिव का स्वरूप ही किसी को भी बेहोश कर देने के लिए पर्याप्त था ।

उसके ऊपर से इन सारे बारातियों का स्वरूप देखकर माता मैना बेहोश हो गई ।

काफी प्रयास करने के बाद उनको होश में लाया गया ।

उनके मन में विचार आया कि मेरी फूल जैसी कन्या, इस विचित्र भयानक आदमी के साथ कैसे रहेगी ।

उन्होंने कन्यादान से इंकार कर दिया ।

उन्होंने साफ कह दिया - मैं ऐसे विचित्र आदमी को अपनी कन्या बिल्कुल नहीं दूंगी ।

अब धर्म संकट की स्थिति सामने आ गई थी ।

इस जानकारी को सुनकर माता मैना धम्म से जमीन पर बैठ गई !

जब उन्हें थोड़ा होश आया तो वे उठ कर बारात को और संभावित दामाद को देखने के लिए अपने महल के कंगूरे पर जा पहुंची

भगवान शिव अपने विशिष्ट स्वरूप में सामने मौजूद थे

और उनके साथ थी उनकी अतलंगी बरात !

भगवान शिव का स्वरूप ही किसी को भी बेहोश कर देने के लिए पर्याप्त था ।

उसके ऊपर से इन सारे बारातियों का स्वरूप देखकर माता मैना बेहोश हो गई ।

काफी प्रयास करने के बाद उनको होश में लाया गया ।

उनके मन में विचार आया कि मेरी फूल जैसी कन्या, इस विचित्र भयानक आदमी के साथ कैसे रहेगी ।

उन्होंने कन्यादान से इंकार कर दिया ।

उन्होंने साफ कह दिया - मैं ऐसे विचित्र आदमी को अपनी कन्या बिल्कुल नहीं दूंगी ।

अब धर्म संकट की स्थिति सामने आ गई थी ।

इस जानकारी को सुनकर माता मैना धम्म से जमीन पर बैठ गई !

जब उन्हें थोड़ा होश आया तो वे उठ कर बारात को और संभावित दामाद को देखने के लिए अपने महल के कंगूरे पर जा पहुंची

भगवान शिव अपने विशिष्ट स्वरूप में सामने मौजूद थे

और उनके साथ थी उनकी अतलंगी बरात !

भगवान शिव का स्वरूप ही किसी को भी बेहोश कर देने के लिए पर्याप्त था ।

उसके ऊपर से इन सारे बारातियों का स्वरूप देखकर माता मैना बेहोश हो गई ।

काफी प्रयास करने के बाद उनको होश में लाया गया ।

उनके मन में विचार आया कि मेरी फूल जैसी कन्या, इस विचित्र भयानक आदमी के साथ कैसे रहेगी ।

उन्होंने कन्यादान से इंकार कर दिया ।

उन्होंने साफ कह दिया - मैं ऐसे विचित्र आदमी को अपनी कन्या बिल्कुल नहीं दूंगी ।

अब धर्म संकट की स्थिति सामने आ गई थी ।

इस जानकारी को सुनकर माता मैना धम्म से जमीन पर बैठ गई !

जब उन्हें थोड़ा होश आया तो वे उठ कर बारात को और संभावित दामाद को देखने के लिए अपने महल के कंगूरे पर जा पहुंची

भगवान शिव अपने विशिष्ट स्वरूप में सामने मौजूद थे

और उनके साथ थी उनकी अतलंगी बरात !

भगवान शिव का स्वरूप ही किसी को भी बेहोश कर देने के लिए पर्याप्त था ।

उसके ऊपर से इन सारे बारातियों का स्वरूप देखकर माता मैना बेहोश हो गई ।

काफी प्रयास करने के बाद उनको होश में लाया गया ।

उनके मन में विचार आया कि मेरी फूल जैसी कन्या, इस विचित्र भयानक आदमी के साथ कैसे रहेगी ।

उन्होंने कन्यादान से इंकार कर दिया ।

उन्होंने साफ कह दिया - मैं ऐसे विचित्र आदमी को अपनी कन्या बिल्कुल नहीं दूंगी ।

अब धर्म संकट की स्थिति सामने आ गई थी ।

इस जानकारी को सुनकर माता मैना धम्म से जमीन पर बैठ गई !

जब उन्हें थोड़ा होश आया तो वे उठ कर बारात को और संभावित दामाद को देखने के लिए अपने महल के कंगूरे पर जा पहुंची

भगवान शिव अपने विशिष्ट स्वरूप में सामने मौजूद थे

और उनके साथ थी उनकी अतलंगी बरात !

भगवान शिव का स्वरूप ही किसी को भी बेहोश कर देने के लिए पर्याप्त था ।

उसके ऊपर से इन सारे बारातियों का स्वरूप देखकर माता मैना बेहोश हो गई ।

काफी प्रयास करने के बाद उनको होश में लाया गया ।

उनके मन में विचार आया कि मेरी फूल जैसी कन्या, इस विचित्र भयानक आदमी के साथ कैसे रहेगी ।

उन्होंने कन्यादान से इंकार कर दिया ।

उन्होंने साफ कह दिया - मैं ऐसे विचित्र आदमी को अपनी कन्या बिल्कुल नहीं दूंगी ।

अब धर्म संकट की स्थिति सामने आ गई थी ।

इस जानकारी को सुनकर माता मैना धम्म से जमीन पर बैठ गई !

जब उन्हें थोड़ा होश आया तो वे उठ कर बारात को और संभावित दामाद को देखने के लिए अपने महल के कंगूरे पर जा पहुंची

भगवान शिव अपने विशिष्ट स्वरूप में सामने मौजूद थे

और उनके साथ थी उनकी अतलंगी बरात !

भगवान शिव का स्वरूप ही किसी को भी बेहोश कर देने के लिए पर्याप्त था ।

उसके ऊपर से इन सारे बारातियों का स्वरूप देखकर माता मैना बेहोश हो गई ।

काफी प्रयास करने के बाद उनको होश में लाया गया ।

उनके मन में विचार आया कि मेरी फूल जैसी कन्या, इस विचित्र भयानक आदमी के साथ कैसे रहेगी ।

उन्होंने कन्यादान से इंकार कर दिया ।

उन्होंने साफ कह दिया - मैं ऐसे विचित्र आदमी को अपनी कन्या बिल्कुल नहीं दूंगी ।

अब धर्म संकट की स्थिति सामने आ गई थी ।

इस जानकारी को सुनकर माता मैना धम्म से जमीन पर बैठ गई !

जब उन्हें थोड़ा होश आया तो वे उठ कर बारात को और संभावित दामाद को देखने के लिए अपने महल के कंगूरे पर जा पहुंची

भगवान शिव अपने विशिष्ट स्वरूप में सामने मौजूद थे

और उनके साथ थी उनकी अतलंगी बरात !

भगवान शिव का स्वरूप ही किसी को भी बेहोश कर देने के लिए पर्याप्त था ।

उसके ऊपर से इन सारे बारातियों का स्वरूप देखकर माता मैना बेहोश हो गई ।

काफी प्रयास करने के बाद उनको होश में लाया गया ।

उनके मन में विचार आया कि मेरी फूल जैसी कन्या, इस विचित्र भयानक आदमी के साथ कैसे रहेगी ।

उन्होंने कन्यादान से इंकार कर दिया ।

उन्होंने साफ कह दिया - मैं ऐसे विचित्र आदमी को अपनी कन्या बिल्कुल नहीं दूंगी ।

अब धर्म संकट की स्थिति सामने आ गई थी ।

इस जानकारी को सुनकर माता मैना धम्म से जमीन पर बैठ गई !

जब उन्हें थोड़ा होश आया तो वे उठ कर बारात को और संभावित दामाद को देखने के लिए अपने महल के कंगूरे पर जा पहुंची

भगवान शिव अपने विशिष्ट स्वरूप में सामने मौजूद थे

और उनके साथ थी उनकी अतलंगी बरात !

भगवान शिव का स्वरूप ही किसी को भी बेहोश कर देने के लिए पर्याप्त था ।

उसके ऊपर से इन सारे बारातियों का स्वरूप देखकर माता मैना बेहोश हो गई ।

काफी प्रयास करने के बाद उनको होश में लाया गया ।

उनके मन में विचार आया कि मेरी फूल जैसी कन्या, इस विचित्र भयानक आदमी के साथ कैसे रहेगी ।

उन्होंने कन्यादान से इंकार कर दिया ।

उन्होंने साफ कह दिया - मैं ऐसे विचित्र आदमी को अपनी कन्या बिल्कुल नहीं दूंगी ।

अब धर्म संकट की स्थिति सामने आ गई थी ।

सारे देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों ने मिलकर उनको समझाया कि उनके इस कार्य से ही संसार का चक्र वापस चल सकता है !

अन्यथा संसार समाप्त हो जाएगा !

सभी के अस्तित्व का कोई महत्व नहीं रह जाएगा!!

अंततः

कामदेव इस कार्य को करने के लिए राजी हो गए ।

उन्होंने उचित समय देखकर भगवान शिव के ऊपर अपने पुष्प बाण का संधान कर दिया

उनके हृदय में काम भाव की उत्पत्ति हो जाए, ऐसी व्यवस्था उत्पन्न कर दी

जैसे ही उन्होंने अपना प्रयोग संपन्न किया !

भगवान शिव के अंदर विचलन पैदा हुआ !!

ध्यानस्थ भगवान शिव को घोर आश्चर्य हुआ - ध्यान की अवस्था में बैठने के बावजूद

इतने वर्षों के बाद.....

मेरे मन में यह विचलन कैसे उत्पन्न हुआ ?

क्षण मात्र में उनको कामदेव के द्वारा किए गए कार्य का आभास हो गया !

सारे देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों ने मिलकर उनको समझाया कि उनके इस कार्य से ही संसार का चक्र वापस चल सकता है !

अन्यथा संसार समाप्त हो जाएगा !

सभी के अस्तित्व का कोई महत्व नहीं रह जाएगा!!

अंततः

कामदेव इस कार्य को करने के लिए राजी हो गए ।

उन्होंने उचित समय देखकर भगवान शिव के ऊपर अपने पुष्प बाण का संधान कर दिया

उनके हृदय में काम भाव की उत्पत्ति हो जाए, ऐसी व्यवस्था उत्पन्न कर दी

जैसे ही उन्होंने अपना प्रयोग संपन्न किया !

भगवान शिव के अंदर विचलन पैदा हुआ !!

ध्यानस्थ भगवान शिव को घोर आश्चर्य हुआ - ध्यान की अवस्था में बैठने के बावजूद

इतने वर्षों के बाद.....

मेरे मन में यह विचलन कैसे उत्पन्न हुआ ?

क्षण मात्र में उनको कामदेव के द्वारा किए गए कार्य का आभास हो गया !

उनके अंदर क्रोध की ज्वाला भड़क उठी !!

उनका तीसरा नेत्र खुल गया !!!

जैसे ही उनका तीसरा नेत्र खुला

उसमें से निकलती हुई ज्वाला ने कामदेव के शरीर को भस्म कर दिया ।

वह राख के ढेर में परिवर्तित हो गए ।

यह देखकर कामदेव की पत्नी रति विलाप कर उठी

भगवान शिव ठहरे भोलेनाथ

क्रोध में उन्होंने कामदेव को भस्म तो कर दिया लेकिन रति के विलाप और देवताओं की याचना के बाद उनके हृदय में करुणा उत्पन्न हो गई....

उन्होंने देवताओं की इच्छा अनुसार देवी पार्वती को स्वीकार करने का मन बना लिया ।

देवी रति के द्वारा बार-बार क्षमा याचना और अपने पति को पुनर्जन्म प्रदान करने की इच्छा को भी उन्होंने स्वीकार कर लिया । उन्हें यह वरदान दिया कि भगवान

कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के रूप में कामदेव पुनः सशरीर उन्हें प्राप्त हो जाएंगे ।

कालांतर में ऐसा ही हुआ

भगवान शिव के द्वारा पार्वती का वरण करने की सहमति मिलते ही विवाह की तैयारियां प्रारंभ हो गई ।

भगवान शिव शमशान के अधिपति माने जाते हैं ।
इसलिए उनके गण में से अधिकांश भूत प्रेत पिशाच
आदि है । जिनका आकार प्रकार अपने आप में विचित्र
और भयानक होता है ।

आप लोगों ने बरात देखी होगी । बारात में जान
पहचान वाले दोस्त और रिश्तेदार ही जाते हैं ।

अब भगवान शिव ठहरे अजन्मा !

इसलिए उनके परिवार में कोई तो था नहीं !!

तो यही सारे गण यानि भूत पिशाच उनकी बारात में
शामिल हो गए

बरात में सभी लोग सज धज के, बन ठन के जाते हैं ।
सभी का यह प्रयास होता है कि वह ज्यादा से ज्यादा
सुंदर दिखे ।

दूल्हे को भी यथासंभव सजा संवार कर सेहरा लगाकर
सुंदर वस्त्रों से सजाकर ले जाया जाता है.....

यहां यह भी बात है कि

सब का सजने का तरीका अलग अलग होता है ।

अफ्रीका में एक जनजाति है जिसका नाम है मुर्सी ।

अगर गूगल सर्च करके आप देखेंगे तो पाएंगे कि वे
निचले होठ के अंदर लकड़ी से बने हुए गोलाकार प्लेट
को लगाकर लड़कियों के होठों को लंबा कर देते हैं
। वहां महिलाओं के लंबे होठ सौंदर्य का प्रतीक माने
जाते हैं । लेकिन वही चीज भारत या अन्य स्थानों पर
कुरूपता मानी जाएगी ।

भगवान शिव के मामले में बात ही दूसरी थी ।

वे स्वयं श्मशान में निवास करने वाले !

और उनके बाराती भी वैसे ही !!

तो उनका सौंदर्य और सजने का पैमाना भी बिल्कुल
अलग ही था !!!

और वे अपने ही स्टाइल में सज धज कर पहुंचे थे !!!

दूल्हे अर्थात भगवान शिव का वेश तो आप जानते ही हैं
।

भस्म से पूरी तरह से उनको लपेट दिया गया था ।
सर से लेकर पांव तक वह मसान की भस्म से रंगे हुए
थे

जटा जूट बिखरे हुए थे ।

सर पर !

गर्दन में !!

सर्प बैठे हुए थे !!!

उसी भयानक स्वरूप में वह दूल्हा बनकर बरात में आगे
आगे चल रहे थे ।

उनका यह स्वरूप ही किसी को भी भयभीत और
विचलित कर देने के लिए काफी था।

उनकी बारात उससे भी भयानक थी !

विचित्र विचित्र प्रकार के आकार वाले भूत प्रेत और
योगिनीयों डाकिनियों का समूह अपने अधिपति के
साथ बरात में शामिल था !!

जिनके आकार प्रकार और वेशभूषा के बारे में कुछ भी
कहना मुश्किल होगा !!!

लंबाई में एक इंच से लेकर 100 फीट तक के भूत प्रेत
पिशाच थे !

दुबले-पतले से लेकर हाथी के जैसे मोटे तगड़े गण
शामिल थे !!

और सब अपनी मस्ती में नृत्य करते चल रहे थे !

जिनको देखने मात्र से शरीर में सिहरन दौड़ जाए !

ऐसे ऐसे लोगों की बारात लेकर भगवान शिव पर्वतराज
हिमालय के पास पहुंच गए.....

देवी पार्वती के पिता थे हिमालय और उनकी माता का
नाम था मैना

बारात जब आती है, तो नातेदार रिश्तेदार पहले से दूर से
उनको देखकर उनकी विशेषताओं के बारे में घरवालों
को बताते हैं । मैना के रिश्तेदारों ने जब भगवान शिव के
इस विचित्र स्वरूप और उनकी भयानक बारात को देखा
तो वह भी बेहोश होते-होते बचे !

जब थोड़ा होश संभला !

तो वे दौड़कर मैना के पास पहुंचे ।

उन्होंने दूल्हे के विचित्र स्वरूप और उसके साथ आने
वाले बरातियों के विषय में मैना को जानकारी दी

इस जानकारी को सुनकर माता मैना धम्म से जमीन पर बैठ गई !

जब उन्हें थोड़ा होश आया तो वे उठ कर बारात को और संभावित दामाद को देखने के लिए अपने महल के कंगूरे पर जा पहुंची

भगवान शिव अपने विशिष्ट स्वरूप में सामने मौजूद थे

और उनके साथ थी उनकी अतलंगी बरात !

भगवान शिव का स्वरूप ही किसी को भी बेहोश कर देने के लिए पर्याप्त था ।

उसके ऊपर से इन सारे बारातियों का स्वरूप देखकर माता मैना बेहोश हो गई ।

काफी प्रयास करने के बाद उनको होश में लाया गया ।

उनके मन में विचार आया कि मेरी फूल जैसी कन्या, इस विचित्र भयानक आदमी के साथ कैसे रहेगी ।

उन्होंने कन्यादान से इंकार कर दिया ।

उन्होंने साफ कह दिया - मैं ऐसे विचित्र आदमी को अपनी कन्या बिल्कुल नहीं दूंगी ।

अब धर्म संकट की स्थिति सामने आ गई थी ।

सभी देवी देवताओं ऋषि मुनियों ने मिलकर मैना को समझाने का प्रयास किया ।

उन्हें बताया कि यह देवों के देव महादेव है ।

उनकी शक्तियां अतुलनीय है ।

वे इस समस्त चराचर जगत के स्वामी है

आदि आदि

लेकिन दुल्हन की मां मैना को इन सब बातों में कोई दिल चस्पी नहीं थी ।

उन्होंने कहा - ऐसे विचित्र व्यक्ति के हाथ में मैं अपनी फूल सी बच्ची को नहीं दूंगी ।

जब सभी देवताओं को लग गया कि इधर से बात नहीं बन सकती तो उन्होंने अपोजिट साइड में जाकर मामले को सुलझाने की कोशिश की

अब वे सारे भगवान शिव की शरण में पहुंच गए ।

उनके सामने सारी बात रख दी और उनसे स्वरूप बदलने का आग्रह किया

भगवान शिव ऐसे भी इस विवाह से भाग रहे थे.....

तो उनको लगा कि यह बढ़िया मौका है “निकल चलते हैं “ ।

उन्होंने कहा - मैं तो ऐसा ही हूँ ! माताजी को अगर विवाह स्वीकार नहीं है तो मैं वापस चला जाता हूँ ।

सभी देवी देवता भी जानते थे कि बड़ी मुश्किल से तो इनको पटाकर यहां लेकर आए हैं , अगर यहां से निकल लिए तो फिर कई हजार वर्षों के लिए इस मामले को ही भूलना पड़ जाएगा ।

उन्होंने भगवान शिव को मनाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा दिया

उन्होंने उनको सुंदर स्वरूप में आने के लिए कई प्रकार से प्रार्थना की ।

अब बाबा ठहरे भोले भण्डारी !

उनकी प्रार्थना से अंततः भोलेनाथ प्रसन्न हो गए

उसके बाद देवी देवताओं ने बारातियों का मेकओवर प्रारंभ किया !

सारे लोगों को सुंदर वस्त्र आभूषण से सुसज्जित करके सुंदर-सुंदर रूप में आने का निर्देश दे दिया गया ।

अब भगवान शिव और सारे शिवगण ठहरे मायावी ...
कुछ ही क्षणों में भगवान शिव ने अपनी माया का
विस्तार कर दिया और जितने भूत प्रेत पिशाच थे सारे के
सारे अत्यंत सुंदर और वैभवशाली स्वरूप में सुंदर सुंदर
वस्त्र आभूषण से सुसज्जित होकर प्रकट हो गए ।
स्वयं भगवान शिव रेशमी वस्त्रों से सुसज्जित !
स्वर्ण आभूषणों से अलंकृत !
सोने के मुकुट को धारण किए हुए !
अत्यंत तेजस्वी !
अत्यंत सौंदर्यवान !
प्रचंड यौवनवान स्वरूप में सामने आ गए !!
उनका स्वरूप ऐसा था जो हजारों कामदेव को मात देने
में सक्षम था
देवी मैना रुठ कर बैठी हुई थी

इधर उनके रिश्तेदारों ने पुनः ढोल नगाड़ों की आवाज
सुनी तो बारात को देखने के लिए फिर से बाहर निकले
।

अब तो मामला पूरा का पूरा बदल गया था !!!

भगवान शिव के इस स्वरूप को देखकर उन सबकी
आंखें फटी की फटी रह गई !

ऐसा अद्भुत सौंदर्य !

ऐसा अप्रतिम सौंदर्य !

ऐसा सम्मोहक स्वरूप !

ऐसा यौवन !

उन्होंने अपने जीवन में कभी भी नहीं देखा था !

सारी की सारी मंत्रमुग्ध सी उनको निहारती रह
गई

जब काफी समय के बाद उनको होश आया तो वे दौड़ी
और मैना को पकड़कर बाहर ले आई ।

जब माता मैना ने भगवान शिव के उस तेजस्वी सौंदर्य
वान स्वरूप को देखा तो वह भी सम्मोहित हो गई !

उन्होंने पार्वती को सौंपने के लिए अपनी सहमति व्यक्त
कर दी ।

जिसके बाद देवी पार्वती का भगवान शिव के साथ
विवाह संपन्न हुआ

पुनः सृष्टि मे काम संचार हुआ और सृष्टि मे उत्पादकता
आई !!!

वह भगवान शिव का राजराजेश्वर कामेश्वर स्वरूप है !

जिसमें वे स्वयं साक्षात् कामदेव के भी अधिपति बने हुए हैं !

सौंदर्य में कामदेव को भी लज्जित कर देने वाला सौंदर्य धारण किए हुए हैं !!

पौरुष ऐसा !

जिसे देखने मात्र से !

कोई भी स्त्री स्वयं उनकी ओर आकर्षित हो जाए !

द्रवित हो जाए !!!

ऐसा अपराजेय पौरुष ।

उनके उसी दिव्य सम्मोहक और सौंदर्यवान स्वरूप की साधना करने का निर्देश हमें बाबा जी की तरफ से मिला था और हम उस साधना को करने के लिए उद्यत हो गए थे ।

बाबा ने बताया - यह भगवान शिव का कामेश्वर स्वरूप है । इसलिए यह साधना युगल स्वरूप में ही की जाती है । इस साधना से साधक के अंदर प्रचंड काम भाव जागृत होता है और उसे प्रतिबंधित करने की आवश्यकता भी नहीं है

इस मंत्र के जाप का निर्देश भी रात्रिकालीन ही था ।

इसके बाद बाबा चंड भैरव ने साधना का मंत्र बताया:-

॥ ॐ क्लीं कामेश्वराये नमः ॥

इस मंत्र का तीन लाख जाप करना था ।

सामान्यतः माला में 108 मनके होते हैं । एक माला से 108 मंत्र का जाप होता है । लेकिन इसमें से केवल 100 की संख्या को गिना जाता है और बाकी आठ की संख्या को विभिन्न प्रकार के दोषों के निवारण के लिए छोड़ दिया जाता है ।

इसकी वजह यह है कि कई बार जाप करते समय हम मंत्र में कोई अक्षर बोलना भूल जाते हैं या जल्दबाजी में कोई अक्षर दो बार बोल जाते हैं । इस प्रकार की जो त्रुटियां होती हैं उसके समाधान के लिए 108 में से 8 को छोड़ दिया जाता है और एक माला में 100 की गणना की जाती है ।

इस प्रकार से तीन लाख मंत्र जाप के लिए हमें 3000 मालाओं का जाप करना था अर्थात् उस 15 दिन के काल में प्रतिदिन 200 माला मंत्र जाप करना था ।

दिन में केवल एक समय भोजन करना था ।

वह भी दूध से बने हुए किसी पदार्थ का ।

कई साधनाओं में इस प्रकार के प्रतिबंध होते हैं ।

जिसमें किसी विशेष प्रकार के भोजन को ग्रहण करके साधना करनी होती है ।

उदाहरण के लिए धूमावती की साधना में एक विधि ऐसी भी है जिसमें बेसन से बनी हुई सामग्री जैसे पकोड़े का सेवन करके मंत्र जाप करना होता है ।

संभवतः यह भी वैसी ही कोई विधि रही होगी ।

हम दोपहर को चावल से बनी हुई खीर खा लेते थे ।

उसके बाद कुछ भी ग्रहण नहीं करते थे ।

इस प्रकार से हमारी साधना प्रारंभ हो गई ।

लगभग दस दिन व्यतीत हो गए ।

दसवें दिन मुझे बहुत तेज बुखार आ गया !

ऐसा लग रहा था जैसे 102 या 103 डिग्री का बुखार हो !

साधना काल में इस प्रकार की स्थिति आती रहती है

इसलिए उस रात भी मैं साधना में बैठा

मंत्र जाप से शरीर में ऊर्जा का उत्पादन होता है ।

जिससे कई बार शरीर गर्म होने लगता है और बुखार भी आता है । इस प्रकार की स्थिति से साधक को घबराना नहीं चाहिए और गुरु चरणों का ध्यान करते हुए पुनः मंत्र

जाप जारी रखना चाहिए इससे आगे अनुकूलता प्राप्त होती रहती है ।

यह बात मुझे पता थी !

इसलिए मैं उस रात मंत्र जाप में बैठ गया ।

रात के लगभग बारह बजे के आसपास मेरा शरीर कंपकम्पाने लगा

बड़े जोरों की ठंड लग रही थी ।

ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी बर्फीले इलाके में आ गए हो ।

दिगंबर अवस्था में ठंड वैसे भी ज्यादा लगती है और उस समय ठंड के मारे मेरी हालत खराब हो रही थी ।

किसी प्रकार से उस रात्रि का मंत्र जाप पूर्ण हुआ ।

सुबह भी मेरी स्थिति बहुत खराब थी !

बुखार से शरीर तप रहा था ।

लगता था जैसे शरीर के अंदर कोई आग सी जल रही हो

ग्यारहवें दिन से साधना का तीसरा चरण प्रारंभ होने वाला था जो युगल साधना का क्रम था ।

इसमें दोनों को एक दूसरे की ओर देखते हुए मंत्र जाप करना था ।

पहले 3 दिन किसी प्रकार का विकार नहीं आना चाहिए था और अंतिम 2 दिन युगल रूप में साधना होनी थी । ग्यारहवें दिन प्रातः काल से ही शरीर में परिवर्तन दिखाई देने लगा था ।

कामेश्वर का मतलब होता है कि वह जो काम का भी अधिपति हो । ऐसे कामेश्वर की साधना में शरीर में साक्षात कामदेव की उपस्थिति होने लगती है और तदनुसार काम अंगों में भी उसका प्रभाव दिखाई देने लगता है । ग्यारहवें दिन सुबह स्नान के बाद से मेरे साथ ऐसा ही हो रहा था । पूरे समय शरीर में तनाव बना रहता था

इस दौरान एक विचित्र सी घटना घटी ।

बाबा चंड भैरव जी ने बताया था कि यथासंभव इस साधना के दौरान एकांतवास करना चाहिए क्योंकि शरीर के अंदर इतनी ज्यादा मात्रा में आकर्षण उत्पन्न हो जाता है कि देखने वाला स्वतः आकर्षित होने लगता है ।

इसलिए अधिकांश समय मैं कक्ष के अंदर ही रहता था केवल स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होने के लिए सुबह बाहर निकलता था । जब अंधकार होता था और किसी की दृष्टि पड़ने की संभावना कम रहती थी

उन दिनों मंदिर के बगल में बंजारों का एक कबीला हुआ करता था, जिसमें कुछ पुरुष और कुछ महिलाएं थी ।

अगर हम स्वयं को देखें तो हम अक्सर जब दिन भर सफर कर ले तो बेहद थक जाते हैं, लेकिन बंजारा समाज एक ऐसा समुदाय है जिसका पूरा जीवन सफर करते बीतता है।

स्थाई रूप से बंजारों का न कोई ठौर-ठिकाना होता है, ना ही घर-द्वार। किसी स्थान विशेष पर यह ठहरते नहीं। सदियों से ये समाज देश के दूर-दराज इलाकों में यात्राएं करता रहा है। बंजारे कलाकार होते हैं , वे कुछ खास चीजों के लिए बेहद प्रसिद्ध हैं, जैसे नृत्य, संगीत, रंगोली, कशीदाकारी, गोदना और चित्रकारी । बंजारा समाज पशुओं से भी बेहद लगाव रखते हैं। अधिकतर

बंजारों के कारवां में बैल होते हैं, जिनमें वो अस्थायी घर बनाकर रहते हैं।

इसमें दैनिक उपयोग का सारा सामान रखा हुआ होता है ।

दिनभर चलना और सूर्यास्त पर कहीं डेरा डालकर वहीं रात गुजारते हैं और वहीं पर ये खाना बनाते हैं।

शहर में आम तौर पर सड़क किनारे टेंट में या फिर खुले में अस्थायी तौर पर बंजारे लोग रहते हुए आपको दिख जाएंगे। ये लोग दो चार दिन तो कई बार हफ्तों ऐसे ही समय गुजार देते हैं। सड़क किनारे दिख रहे इन घुमंतू बंजारा लोगों के साथ बैलगाड़ी या फिर कोई और जानवर भी दिख ही जाएगा।

अब परिस्थितियां बदल गई है और कई बार यह लोग वैन में भी दिखाई देते हैं । उनके इस प्रकार के अस्थाई ठिकानों में बंजारा महिलाएं तो पूरा दिन रहती हैं, जबकि पुरुष मेहनत-मजदूरी कर कुछ पैसे इकट्ठा कर फिर अगले पड़ाव की ओर बढ़ जाते हैं। आम तौर पर बंजारा पुरुष सिर पर पगड़ी बांधते हैं। कमीज या झब्बा पहनते और धोती बांधते हैं। हाथ में नारमुखी कड़ा, कानों में मुरकिया व झेले पहनते हैं। अधिकतर ये हाथों

ऐसा भी कहते हैं कि जहां बंजारे अपना डेरा डालते थे, उनमें से कुछ स्थानों पर वे अपने धन को सुरक्षित रखने के लिए जमीन में गाड़ देते थे। सामान्यतः ये लोग हिन्दुओं के सभी देवताओं की आराधना करते हैं।

मंदिर के बगल वाली जमीन पर बंजारों का जो कबीला उस समय रुका हुआ था, उसमें लगभग 15, 16 पुरुष और तकरीबन 20 महिलाएं थीं । इसके अलावा अलग-अलग आयु वर्ग के कम से कम 20 - 25 बच्चे भी थे ।

ग्यारहवें दिन दोपहर के समय मुझे बड़े जोर से बाहर जाने की इच्छा हुई ।

ऐसी प्रबल इच्छा कि मेरे बहुत प्रयास करने के बाद भी नियंत्रण नहीं हो पा रहा था ।

अंततः मजबूर होकर अपने हाथ में लोटा लेकर सर पर गमछा डाल कर मैं जंगल की ओर निकल गया ।

जब मैं जा रहा था तो एक बंजारन महिला भी जंगल से वापस आ रही थी।

मुझे देखकर वह ठिठककर खड़ी हो गई और मैं उसकी बगल से निकल कर आगे बढ़ गया।

ऐसा भी कहते हैं कि जहां बंजारे अपना डेरा डालते थे, उनमें से कुछ स्थानों पर वे अपने धन को सुरक्षित रखने के लिए जमीन में गाड़ देते थे। सामान्यतः ये लोग हिन्दुओं के सभी देवताओं की आराधना करते हैं।

मंदिर के बगल वाली जमीन पर बंजारों का जो कबीला उस समय रुका हुआ था, उसमें लगभग 15, 16 पुरुष और तकरीबन 20 महिलाएं थीं। इसके अलावा अलग-अलग आयु वर्ग के कम से कम 20 - 25 बच्चे भी थे।

ग्यारहवें दिन दोपहर के समय मुझे बड़े जोर से बाहर जाने की इच्छा हुई।

ऐसी प्रबल इच्छा कि मेरे बहुत प्रयास करने के बाद भी नियंत्रण नहीं हो पा रहा था।

अंततः मजबूर होकर अपने हाथ में लोटा लेकर सर पर गमछा डाल कर मैं जंगल की ओर निकल गया।

जब मैं जा रहा था तो एक बंजारन महिला भी जंगल से वापस आ रही थी।

मुझे देखकर वह ठिठककर खड़ी हो गई और मैं उसकी बगल से निकल कर आगे बढ़ गया।

यह सामान्य सी बात थी क्योंकि जब महिलाएं हैं इस प्रकार रास्ते में मिलती है तो वे घुंघट काढ कर बगल हो जाती है और पुरुष के निकल जाने के बाद आगे बढ़ती हैं ।

जब मैं शौच से निपट कर वापस आ रहा था तो मैंने देखा कि वह महिला उसी प्रकार रास्ते में खड़ी हुई है

मुझे बेहद अजीब लगा !

क्योंकि लगभग 5-10 मिनट का समय व्यतीत हो चुका था.....

मेरे विचार से उसे तब तक अपने कबीले वालों के पास तक पहुंच जाना चाहिए था ।

मैंने सोचा संभवतः उसे दोबारा जरूरत महसूस हो गई होगी ।

इसलिए वापस आकर खड़ी हो गई होगी और मेरे निकलने की प्रतीक्षा कर रही होगी ।

जब पेट में प्रेशर रहता है तो किस प्रकार की जल्दबाजी मची रहती है उसका अनुभव मुझे था इसलिए मुझे उसकी स्थिति समझ में आ रही थी और मैं तेजी से उसके बगल से निकलने लगा ,

ताकि वह जल्द से अपने गंतव्य तक पहुंच सके

मैं जैसे ही उसके बगल में पहुंचा.....

वह मेरा रास्ता रोककर खड़ी हो गई ।

यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी

क्योंकि आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ था ।

पहले भी कभी कभार हम इस प्रकार से टकरा जाते थे,

लेकिन उसके बाद मैं अपने रास्ते चला जाता था और

महिलाएं अपने रास्ते चली जाती थी ।

उसका इस प्रकार रास्ते में मुझे रोकना बेहद अजीब

लगा ।

जो परिस्थिति बनी हुई थी वह बेहद विचित्र थी ।

मैं समझ नहीं पा रहा था कि मुझे क्या करना चाहिए ?

वह लगभग 30 वर्ष के आसपास की युवा महिला थी ।

वह बेहद आकर्षक देहयष्टि की स्वामिनी थी ।

उसकी आंखों से आमंत्रण साफ साफ झलक रहा था ।

मैंने उसकी तरफ एक बार नजर उठा कर देखा और

अपनी नजरें हटा ली

मैं समझ गया कि मेरे कामेश्वर साधना का प्रभाव इसके

ऊपर पड़ गया है.....

और यह मेरी तरफ मोहित हो गई है.....

मेरे अंदर भी काम का विकार उत्पन्न होने लगा.....

वह बेहद सुंदर महिला थी ।

उसकी आंखें तीखी और बेहद सम्मोहन से भरी हुई भूरे रंग की थी ।

सारे शरीर से यौवन छलक रहा था ।

उन्नत स्तन और स्थूल नितंब आमंत्रण देते हुए से प्रतीत हो रहे थे ।

तभी....

अचानक फिर अंदर की उस रक्षा प्रणाली से संकेत प्राप्त हुए और मैं उसके बगल से निकलने का प्रयास करने लगा

लेकिन यह उतना आसान नहीं था.....

आम तौर पर यह माना जाता है कि पुरुष अगर किसी स्त्री को पकड़ ले या उसे अपने इच्छा पूर्ति का माध्यम बनाने की ठान ले.... तो उस स्त्री का बचना थोड़ा कठिन होता है, वह भी जब एकांत स्थल हो ।

सुनसान और एकांत स्थानों पर ही ऐसी घटनाएं ज्यादा होती है । जहां पुरुष स्त्री पर हावी होकर उसे अपने नियंत्रण में कर मनमानी कर लेता है

ऐसा नहीं है कि केवल पुरुष ही ऐसा करने में सक्षम है, कभी-कभी इसका उल्टा भी हो जाता है । अगर किसी एकांत स्थल में किसी महिला ने किसी पुरुष को प्राप्त करने का विचार बना लिया हो, तो उसे रोक पाना भी लगभग असंभव होता है ।

वहां पर परिस्थितियां वैसी ही बन गई थी ।

जब मैंने बगल से निकलने का प्रयास किया तो उसने मेरी कलाई थाम ली.....

जैसे ही उसने मेरी कलाई थामी मुझे अपने शरीर में बिजली का झटका जैसा लगा !

ऐसा लगा जैसे जो अंग पहले से ही तैयार था वह और उत्तेजित हो गया हो

वह आकर किसी पेड़ की लता की तरह मुझसे लिपट गई ।

उसके देह का मादक स्पर्श मेरे मन को विचलित करने लगा.....

मुझे ऐसा लगने लगा जैसे मेरा शरीर उसके स्पर्श से पिघल रहा हो !

तभी.....

मुझे लगा जैसे बाबा के द्वारा कहे गए शब्द मेरे कानों में गूंजने लगे - “तीसरे चरण के पहले दो दिन आत्म नियंत्रण के हैं और इसमें परीक्षाओं की भरमार रहेगी.....”

मैं उससे छिटक कर अलग हो गया..... लेकिन मेरी कलाई अब भी उसके हाथ में थी ।

न चाहते हुए भी मुझे उस परिस्थिति से बाहर निकलना था

और उसका एक ही उपाय था !

वहां से भाग खड़ा होना.....

मैंने अपनी कलाई छुड़ाने की कोशिश की !

बंजारा महिलाएं बेहद कर्मठ और मेहनती होती हैं और इस वजह से काफी ताकतवर भी होती हैं, यह मुझे उस समय पता चला क्योंकि काफी खींचतान के बाद भी मैं अपनी कलाई नहीं छुड़ा पा रहा था !

मैं अपना पूरा जोर लगा रहा था कि उसके हाथ से अपनी कलाई छुड़ा सकूं !

दूसरी ओर वह जैसे कसम खा कर बैठी हुई थी कि किसी हालत में इसकी कलाई को छोड़ना नहीं है । न

जाने उसकी नाजुक उंगलियों में इतनी ताकत कहां से आ गई थी ।

इस खींचतान के चक्कर में वह बार-बार मुझसे आकर टकरा जाती थी और हर बार जब वह मुझ से टकराती तो मेरे पूरे शरीर में एक बिजली की लहर जैसी दौड़ जाती थी

इस संबंध में कहा गया है कि :-

अर्थातुराणां न सुखं न निद्रा,
कामातुराणां न भयं न लज्जा ।
विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा,
क्षुधातुराणां न रुचि न बेला ॥

अर्थात् :-

अर्थ या धन के लोभी मनुष्य को सुख और निद्रा नसीब नहीं होते;

कामातुर को-अर्थात् अत्यधिक कामेच्छा से ग्रस्त व्यक्ति को समाज का भय और लज्जा नहीं होते । विद्यातुर - ब्रह्मज्ञान या 'विवेकज्ञ-ज्ञान' प्राप्त करने के घोर आग्रही व्यक्ति को सुख व निद्रा के विषय में नहीं सोचना

चाहिए और भूख से पीड़ित व्यक्ति को स्वाद, रुचि या समय का भान नहीं रहता ।

कामातुर व्यक्ति के अंदर विवेक का अभाव हो जाता है और उसे समाज या किसी भी चीज का भय नहीं रहता । उस क्षण विशेष में उसके अंदर केवल अपनी कामना पूर्ति की भावना ही एकमात्र उद्देश्य हो जाती है । जिसके चलते अनेक प्रकार की घटनाएं घटती हैं और इसमें बलात्कार भी शामिल है । कई बार ऐसा हम देखते हैं कि पढ़े लिखे और सरल स्वभाव वाले व्यक्ति भी इस प्रकार के कृत्य को अंजाम दे जाते हैं । इसके पीछे एक मात्र कारण उस कामदेव की अनंत शक्ति है जो उस क्षण विशेष में संपूर्ण विवेक को समाप्त कर देती है और समाज तथा अन्य किसी भी प्रकार के दंड के भय को भी भुला डालती है ।

वरना क्या यह संभव है कि सात साल से लेकर मृत्युदंड की सजा का प्रावधान होने के बावजूद कोई व्यक्ति बलात्कार जैसे कृत्य को अंजाम दे दे ।

काम की यह स्थिति तब है जब भगवान शिव ने उसे भस्म कर दिया और वह शरीर विहीन है ...

अनंग है !

मान लीजिए वह सशरीर होता तो काम भाव का कैसा तांडव होता ?

कल्पना मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।

खैर

उस महिला का स्पर्श भी मेरे अंदर इसी प्रकार की विवेक हीनता की स्थिति को पैदा कर रहा था ।

जिसके बाद मुझे अपने आप को संभालना मुश्किल हो रहा था !

ऐसा लगभग चार-पांच मिनट चला होगा । वह आकर मुझसे लिपट गयी थी

फिर मैंने सोचा - अगर ऐसा चलता रहा तो निश्चय ही मेरी साधना खंडित हो जाएगी

और वह मैं होने नहीं देना चाहता था ।

अंतिम प्रयास के रूप में गुरुदेव को याद करके मैंने अपनी संपूर्ण शक्ति लगाकर उसे परे धकेल अपनी कलाई को झटका दिया ।

इस बार मेरी ताकत काम आ गई ...

वह संभवतः इतने जोरदार झटके की उम्मीद नहीं कर रही थी इसलिए पलट कर पीछे की तरफ गिर गई ।

मैं वहां से सरपट भाग लिया !

और सीधे आश्रम में जाकर रुका ।

जल्दी से स्नानादि कर, शुद्ध हो कर, मैं अपने कक्ष में जितना तेजी से हो सकता था उतना तेजी से घुस गया ।

कक्ष के अंदर आकर मैंने अपनी साँसों पर नियंत्रण किया जो धौंकनी की तरह चल रही थी !

मुझे ऐसा लगा की समस्या समाप्त हो गई है.....

लेकिन यह तो समस्या की शुरुआत थी ।

कुछ देर के बाद वह महिला मुझे खोजती हुई आश्रम में आ गई ।

वहां के सेवकों से उन्होंने मेरे बारे में पूछा और जब मेरे कक्ष के बारे में पता चला तो वह मेरे कक्ष के पास आकर खड़ी हो गई ।

वह बाहर से दरवाजे को खटखटाने लगी और आवाज लगाने लगी !

अंदर मेरे प्राण हलक को आ रहे थे ।

मन मे तो प्रबल इच्छा हो रही थी कि दरवाजा खोल उसे
अंदर खींच लूँ

लेकिन अंदर का साधक रोक रहा था !!!

कशमकश जारी थी

दस बारह बार जब वह खटखटा चुकी तो संभवतः किसी
ने उसे मना किया होगा ।

जिसके बाद वह वहाँ से चली गई ।

गुरुजी उस दिन किसी काम से बाहर गए हुए थे और
माधुरी भी उन्ही के साथ गई हुई थी

इसलिए मुझे बचाने वाला कोई नहीं था !

वह महिला इसी प्रकार कम से कम 5 बार आकर
दरवाजा खटखटा चुकी थी

शाम के लगभग सात बजे होंगे जब बाबा वापस लौटे ।
उस समय वह महिला मेरे कमरे के दरवाजे पर खड़ी हुई
थी ।

उसे इस प्रकार से खड़ा देखकर बाबा सारा माजरा
समझ गए और उसे अपने पास बुलाया ।

जब वह पास आई तो बाबा ने कुछ मंत्रों का उच्चारण
करके उसकी तरफ फूँक मारी ।

उसका सम्मोहन टूट गया ।

वह जैसे किसी गहरी नींद से जागी हो

उसे कुछ समझ नहीं आया कि वह इस समय वहाँ क्या कर रही है ?

वह हड़बड़ा कर इधर-उधर देखने लगी । जब कुछ समझ नहीं आया तो सामने बाबा को देखकर उसने प्रणाम किया । उसके बाद बहुत तेजी से बाहर निकल गई ।

उसके चले जाने के बाद बाबा ने मेरे दरवाजे को खड़काया ।

मैं अपने आप को संभालता हुआ दृढ़ निश्चय होकर बैठ गया कि किसी हालत में दरवाजा नहीं खोलना है..... क्योंकि मुझे अब भी लग रहा था कि वही स्त्री दोबारा वापस आ गई होगी ।

दो-चार बार खटखटाने पर जब मैंने दरवाजा नहीं खोला , तब बाबा ने आवाज लगाई - अघोरानंद ! वह चली गई ! दरवाजा खोल ।

उनकी आवाज सुनते ही मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे स्वर्ग मिल गया हो ।

मैंने दौड़ कर दरवाजा खोला और बाबा के चरणों में गिर गया ।

बाबा ने मुझे उठाया और मेरे सिर पर हाथ फेरा और बोले - बड़ा कठिन परीक्षण पार किया है तूने ।

कामेश्वर महादेव की कृपा है ! वरना इस परीक्षण में तो अच्छे-अच्छे बिखर जाते हैं । तुमने उनकी योगिनी शक्ति का परीक्षण पार कर लिया है ।

तू वास्तव में एक अच्छा साधक है ।

तेरा कल्याण हो

यह सुनकर मेरा उत्साह और बढ़ गया

तीन दिन तक मेरी शरीर की वह स्थिति वैसी ही रही और रात्रिकालीन साधना भी चलती रही । माधुरी के साथ में पहले भी युगल साधना कर चुका था इसलिए आत्म नियंत्रण करना थोड़ा आसान था क्योंकि वह स्वयं भी बेहद नियंत्रित और सिद्ध साधिका थी ।

इसके बावजूद वे 3 दिन काफी विचलित कर देने वाले थे और सप्रयास आत्म नियंत्रण करना पड़ा , गुरुदेव की कृपा से वे 3 दिन भी निकल गए ।

बाबा ने चौदहवें दिन बताया - वैसे तो यह साधना पूरे नब्बे दिनों की है । जिसमे तीस तीस दिन के पहले दो

चरण मे आत्म नियंत्रण के साथ एक एक लाख मंत्र जाप करना होता है और उसके बाद का एक लाख मंत्र जाप युगल रूप मे संपन्न किया जाता है

तुम दोनों विभिन्न प्रकार की उच्च कोटी की साधनाएं , जिसमें युगल साधनाएं भी शामिल है संपन्न कर चुके हो, इसलिए तुम्हें 15 दिन का क्रम बताया गया है । सामान्य साधकों के लिए यह 3 वर्ष का और मध्यम श्रेणी के साधकों के लिए 90 दिन का साधना क्रम होता है ।

अगले दो दिन का साधना क्रम तुम्हें युगल रूप मे करना है और यथासंभव स्वलित होने से बचना है

चौदहवीं रात्रि से युगल साधना प्रारंभ हुई । इस दौरान माधुरी विपरीत रति मुद्रा में मेरे ऊपर आरूढ थी और मंत्र जाप चलता रहा । जैसा कि मैंने आपको बताया था कि ग्यारहवें दिन से शरीर में स्तंभन की स्थिति बनी हुई थी । उस रात पूरी तरह से स्तंभन मौजूद रहा और उसी स्थिति में मंत्र जाप भी चलता रहा । सुबह लगभग 6:30 बजे हमारी साधना पूर्ण हुई ।

पंद्रहवीं रात्रि अंतिम रात्रि थी

आज की स्थिति अलग थी मैं सुखासन में था और और
माधुरी ऊपर थी

रात लगभग नौ बजे से साधना प्रारंभ हुई

मंत्र जाप चलता रहा

धीरे-धीरे ऐसा प्रतीत होने लगा कि शरीर के प्रत्येक रोम
कूप से मंत्र की ध्वनि निकल रही हो ।

साधना के अंतिम चरणों में ऐसा होता है जब पूरा शरीर
उसी मंत्र से गुंजरित होने लगता है

उस समय ऐसा ही हो रहा था ।

रात्री ग्यारह बजे के आसपास का समय रहा होगा जब
मुझे अपनी रीढ़ की हड्डी में तीव्र स्पंदन महसूस होने लगा
।

ऐसा लग रहा था

जैसे कोई लहर सी उठ रही है.....

जो रीढ़ की हड्डी के निचले भाग से ऊपर की ओर बढ़ती
जा रही है ।

संभवतः माधुरी के साथ भी ऐसा ही हो रहा था

मंत्र जाप चल रहा था और उसके साथ रीढ़ की हड्डी में
होने वाली वह लहर जैसी अनुभूति भी जारी थी !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कोई शक्ति मूलाधार से उठकर ऊपर की ओर जाने को बेचैन हो रही हो और अपना रास्ता तलाश रही हो

धीरे-धीरे वह स्पंदन तीव्र होने लगा ।

कुछ समय के बाद शरीर में बिजली के हल्के झटके जैसे लगने लगे ।

अब ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे रीढ़ की हड्डी में से होकर हल्के वोल्टेज की बिजली जा रही हो ।

यह स्थिति तकरीबन एक डेढ़ घंटे तक रही होगी

अर्ध रात्रि का समय पार हो चुका था ।

तभी....

मूलाधार में बेहद असहनीय पीड़ा होने लगी ।

ऐसा लग रहा था जैसे वहां पर कोई शक्ति संकुचन पैदा कर रही हो !

खींच रही हो !

बेहद ताकत के साथ !

ऐसा महसूस हो रहा था.....

जैसे संडासी से उस भाग को दबाकर खींचा जा रहा हो

बेहद असहनीय पीड़ा महसूस हो रही थी

ऐसा लग रहा था जैसे वहां से कोई चीज बाहर निकलना चाहती हो

लिंग और गुदा द्वार के बीच की जगह पर कुछ हिलता हुआ सा महसूस हो रहा था !

लग रहा था जैसे वह हिस्सा फूल कर बाहर निकल जाना चाहता हो ।

वह असहनीय पीड़ा कुछ 15-20 मिनट तक रही होगी ।
उसके बाद अचानक ऐसा लगा जैसे वहां से एक शक्ति झटके के साथ ऊपर चढ़ गई हो !

उसके साथ ही मैं अपने आसन से ऊपर उठने लगा
लगभग डेढ़ फुट की ऊंचाई पर जाकर मेरा आसन स्थिर हो गया.....

अब वह शक्ति

जो मेरे मूलाधार से उछली थी

वह लिंग के पास केंद्रित हो गई

ऐसा प्रतीत हो रहा था ।

मेरा अंग पूरी तरह से प्रचंड होने लगा था । लगभग 10 मिनट तक प्रचंड आघात का क्रम चलता रहा । उसके बाद फिर एक जोर का झटका लगा और वह ऊर्जा उछलकर मणिपुर में जा खड़ी हुई ।

नाभि प्रदेश में

ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे नाभि के चारों तरफ आग सी लग गई हो।

उसके बाद हम दोनों का शरीर वायवीय होने लगा ।

ऐसा लग रहा था जैसे धुएं से बना हुआ शरीर हो गया हो.....

उसमें सिर्फ रीढ़ की हड्डी दिखाई दे रही थी !

जो हमारी मुद्रा के हिसाब से एक वर्तुल बना रही थी ।

मेरी रीढ़ की हड्डी का निचला हिस्सा और माधुरी की रीढ़ की हड्डी का निचला हिस्सा एक दूसरे से जुड़ा हुआ था ।

उसी प्रकार से हमारी रीढ़ की हड्डी का ऊपर का हिस्सा भी आपस में जुड़ा हुआ था ।

इस प्रकार से एक पूरा गोल घेरा सा बन रहा था ,

जिसके अंदर से नीले रंग की किरणें लहराती हुई चल रही थी ।

ईसीजी की मशीन पर जिस प्रकार की ग्राफ की रेखाएं चलती है

उसी प्रकार की रेखाएं जो नीले रंग की किरणों जैसी लग रही थी.....

वह उस वायवीय शरीर के अंदर दिख रहे रीढ़ की हड्डी से बने हुए वर्तुल में लपेटे की तरह घूमती हुई आगे बढ़ रही थी

गोल गोल चक्कर काट रही थी ।

चक्कर की गति धीरे-धीरे बढ़ने लगी ।

जो तेज और तेज होती जा रही थी ।

एक स्थिति ऐसी आई जब रीढ़ की हड्डी दिखाई देनी बंद हो गई

सिर्फ नीले रंग का एक प्रकाशीय गोला जो गोल गोल चक्कर काट रहा है वही दिखाई दे रहा था ।

सबसे अजीब बात यह थी कि मैं अपने आप को उस वक्त उनके बाहर महसूस कर रहा था । यानी मैं स्वयं के शरीर को उस वायवीय अवस्था में देख सकता था ।

उसमें से बह रही शक्ति के प्रवाह को भी देख सकता
था जबकि वह सब कुछ मेरे अपने शरीर के साथ हो रहा
था !

लेकिन !

मैं एक दृष्टा की तरह उसको देख रहा था ।

फिर अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उस गोल घूमते
हुए चक्कर में प्रवेश कर गया हूं !

उसके बाद कुछ क्षणों तक शून्य की स्थिति बनी रही !
लगा.....

जैसे मैं किसी ऐसे स्थान पर हूं जहां पर मेरा अस्तित्व
समाप्त हो गया है ।

कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है ?
लेकिन.....

कुछ तो हो रहा था !

जो अजीब था !

अस्वाभाविक था !!

और अद्भुत भी !!!

फिर

एक विशाल नीले रंग का सागर दिखाई देने लगा.....

जिसके बीच में एक अद्भुत और विचित्र सा महल बना हुआ था

उस महल में हर तरफ रत्न जड़े हुए थे !

जिस स्थान पर वह बना हुआ था वह एक द्वीप जैसा था ।

वह भी रंग-बिरंगे पत्थरों से बना हुआ द्वीप था ।

उस द्वीप में भी हर तरफ से रोशनी बिखर रही थी ।

ऐसा लग रहा था

जैसे.....

विभिन्न प्रकार के रत्नों या मणियों से बना हुआ द्वीप हो !

मणिद्वीप !!

मंत्रमुग्ध सा मैं उस दिव्य महल को देख रहा था !

वैसा महल सिर्फ स्वप्न में ही देखा जा सकता है !

क्योंकि उसकी रचना ही अद्भुत थी !

उस मणिद्वीप के ऊपर वह लगभग 10 फुट की ऊंचाई पर हवा में बना हुआ था ।

ऐसा लग रहा था जैसे उसे किसी न दिखने वाले

पारदर्शी कांच की सतह पर खड़ा कर दिया गया हो ।

हम दोनों का शरीर उस समय वायवीय था

तभी !

आकाश मार्ग से गुरुदेव का वायवीय शरीर धीरे-धीरे नीचे की ओर आता हुआ दिखाई दिया ।

वे हमारे सामने आकर स्थिर हो गए !

कुछ संकेत किए !

मुद्राएं दिखाई !

और धीरे-धीरे मणिद्वीप की ओर आगे बढ़ने लगे ।

हम दोनों भी उनके पीछे पीछे बढ़ने लगे ।

जैसे ही हम मणिद्वीप के पास पहुंचे

उस दिव्य मणिद्वीप के चारों तरफ अचानक से अनेक प्रकार की शक्तियां दिखाई देने लगी ।

जो चित्र विचित्र आकार की थी ।

बेहद भयानकस्वरूप में थी !

जिस प्रकार का वर्णन शमशान की डाकिनियों का होता है ।

ठीक वैसा ही स्वरूप उनका था !

उनकी लंबाई लगभग 15 से 20 फुट की दिखाई दे रही थी और आकार प्रकार में पहलवानों की तरह उनकी देहयष्टि थी

गुरुदेव को देखते ही उन्होंने पीछे हटकर रास्ता दे दिया । गुरुदेव आगे बढ़ने लगे और उनके पीछे पीछे हम भी आगे की ओर बढ़ते गए

वह महल बाहर से दिखने में जितना बड़ा दिखाई दे रहा था उससे कई हजार गुना अंदर से बड़ा था । ऐसा लग रहा था कि उसका कोई ओर छोर नहीं है ।

प्रवेश द्वार से हम लोग जब अंदर गए तो वहां पर अनेक प्रकार की स्फटिक की शिलाएं बिखरी हुई थी और उसके ऊपर अनेक तेजस्वी ऋषि बैठकर साधनाएं कर रहे थे ।

उनकी उम्र का आभास नहीं हो रहा था लेकिन सफेद रंग की दाढ़ी और बाल देखने से ऐसा प्रतीत होता था जैसे कम से कम 70 साल से ज्यादा उम्र के तो रहे ही होंगे

उससे ज्यादा भी हो सकते थे लेकिन जो दिखाई दे रहा था वह कुछ-कुछ वैसा प्रतीत हो रहा था

लगभग काफी लंबी दूरी तक उसी प्रकार की स्फटिक शिलाएं और उन पर विराजमान ऋषियों की श्रृंखला मौजूद थी ।

उनको पार करके जब हम आगे बढ़े तो वहां पर और एक द्वार मौजूद था ।

उस द्वार के पास भी अनेक शक्तियां रक्षा के लिए विद्यमान थी, लेकिन वह सब गुरुदेव को जानती थी इसलिए उनको देखते ही उन्होंने हटकर रास्ता दे दिया । जिससे हम भी उस द्वार से होते हुए अंदर प्रवेश कर गए

उस द्वार से अंदर जाते ही दिव्य दृष्टि वाले देव पुरुष तथा देव स्त्रियां दिखाई देने लगे । वे सारे के सारे विभिन्न प्रकार के स्वर्ण आभूषणों से लदे हुए थे और उस सारे क्षेत्र में सुंदर सुंदर स्वर्ण जड़ित शिलाएं और भवन बने हुए थे

इसी प्रकार हम आगे बढ़ते रहे !

उसके बाद अप्सराओं का द्वार आया उसके पश्चात योगिनीयों का द्वार और उनके बाद शक्तियों का द्वार आया ।

सबसे आखरी में 10 महाविद्याओं का द्वार था

अंदर प्रवेश करते ही वह स्थान जागृत शमशान के जैसा दिखाई दे रहा था

हर तरफ जलती हुई चिताएं थीं

जिनकी लपटें अनंत आकाश को छूती हुई महसूस हो रही थी

ऐसा लग रहा था जैसे सम्पूर्ण सृष्टि की चिताएँ वहीं पर आकर समाहित हो गई है ।

उसके मध्य में एक मार्ग बना हुआ था जो नर मुंडो से बना हुआ था !

अनंत नरमुंड !

गिनते गिनते जिंदगी खत्म हो जाए

लेकिन वह नरमुंड न खत्म हो

इतने नरमुंड !!!

उस मार्ग से होते हुए हम लोग महाविद्या खंड के निर्गम द्वार की ओर बढ़े जो संभवत अंतिम द्वार था !

उस निर्गम द्वार पर खड़ी थी

साक्षात महाकाली

दिगंबर.....

श्यामवर्णा

भयंकरा.....

मुंडमाला धारिणी

लोल जिह्वा.....

हाथों में खड्ग

और सद्यः छिन्न नरमुंड अपने खप्पर में लिए

अट्टहास करती हुई

गुरुदेव ने भगवती को साष्टांग दंडवत किया ।

उन्होंने सुमधुर कंठ से ध्यान का उच्चारण प्रारंभ कर दिया

चतुर्भुजां कृष्णवर्णां मुण्डमाला विभूषिताम् ।

मुण्डञ्च खर्परञ्चैव क्रमाद् वामेन विभ्रतीम् ।

द्यो लिखन्ती जटामेकां विभ्रती शिरसा स्वयं ॥

मुण्डमाला धरा शीर्षे ग्रीवायामपि सर्वदा ।

वक्षसा नागाहारं तु विभ्रतीं रक्तलोचनाम् ॥

कृष्ण वस्त्र धरां कट्यां व्याघ्राजिन समन्विताम् ।

वामपादं शवहृदि संस्थाप्य दक्षिणं पदम् ॥

विन्यस्य सिंह पृष्ठे च लेलिहानां शवं स्वयं ।

साट्टहासां महाघोररावयुक्ता सुभीषणाम् ॥

हम दोनों भी दंडवत प्रणाम की मुद्रा में आ चुके थे और

हमारे मुख से भी वही ध्यान गुंजरित हो रहा था ।

मां काली का महा भयंकर अट्टहास गूँजा ।

उसके साथ ही उनके क्रोधमय मुखमंडल पर स्मित
मुस्कान आई और उन्होंने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ
उठा दिया !

उनकी अनुमति मिल चुकी थी.....

जिसके बाद हम उस अंतिम द्वार को भी पार कर चुके
थे

बाद मे गुरुदेव ने बताया कि उस द्वार के पार वही जा
सकता है, जिसने कम से कम 2 महाविद्या सिद्ध कर ली
हो ! गुरुकृपा से हम दोनों इस योग्यता को प्राप्त कर
चुके थे, अन्यथा वहीं से वापस लौटना होता

अन्य द्वारों पर भी योग्यता का परीक्षण करने के बाद ही
हमें अंदर प्रवेश दिया गया था ।

सबसे मध्य मे था वह भाग जहां पर अब हम लोग पहुंच
चुके थे ।

वहां हर तरफ वहां हर तरफ सुंदरता बिखरी पड़ी थी ।
अजीब अजीब तरह के रत्न जिनसे स्वयं रोशनी फूट रही
थी वह जमीन पर कंकड़ पत्थर की तरह बिखरे हुए थे ।
बड़े-बड़े शिलाखंड जो माणिक्य स्फटिक जैसे दिव्य
रत्नों से बने हुए थे , वह इधर उधर पड़े हुए थे , जिनका

आकार कम से कम 10-10 फुट का होगा । उन सभी में से आत्म प्रकाश निकलता हुआ प्रतीत हो रहा था । ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी दिव्य शक्ति से स्वयं प्रकाशित हो रहे हो और उनकी रोशनी में वह पूरा क्षेत्र जगमगा रहा था

अद्भुत और दिव्य सौंदर्य से युक्त स्त्रियां जो सुंदर सुंदर वस्त्र धारण किए हुए थी, वहां इधर-उधर जाती हुई दिखाई दे रही थी । मोतियों से बना हुआ एक मार्ग था , जिसमें से होते हुए हम लोग आगे बढ़ रहे थे ।

कुछ आगे जाने पर एक विशाल भव्य महल दिखाई दिया ।

जो नीलम जैसे किसी रत्न का बना हुआ था और उसमें से नीले रंग की रश्मिया छिटक छिटक कर बाहर निकल रही थी ।

जैसे ही हम लोग महल के अंदर प्रवेश करने लगे हमारे शरीर में किसी अद्भुत शक्ति का संचार होने लगा

एक अद्भूत ऊर्जा सी भर गई ।

जब हम अंदर पहुंचे तो हमने वहां पर एक अद्भुत
अविश्वसनीय दृश्य देखा !

जो बिल्कुल वैसा ही था जैसा भगवती त्रिपुर सुंदरी के
स्वरूप चित्र में दिखाया जाता है !!

एक विशाल सिंहासन था जो स्वर्ण से बना हुआ था
और उस पर अनेक प्रकार के प्रकाशित रत्न जड़े हुए थे !
आसन की विशेषता यह थी कि उसके पांवों के स्थान
पर ब्रह्मा विष्णु रुद्र और यमराज स्थापित थे जो अपने
ऊपर उस सिंहासन को धारण किए हुए थे ।

सिंहासन के ऊपर विष्णु मुद्रा में भगवान सदाशिव लेटे
हुए थे और उनकी नाभि से निकले हुए विशालकाय
गुलाबी रंग के कमल के पुष्प के ऊपर विराजमान
थी

तीनों लोगों को प्रकाशित कर देने वाला....

सम्मोहित कर देने वाला....

स्तंभित कर देने वाला.....

मंत्रमुग्ध कर देने वाला....

अद्वितीय.....

विलक्षण.....

स्वरूप लिए

अलौकिक सौंदर्य से युक्त.....

महामाया षोडशी त्रिपुर सुंदरी !!!

जो इस संपूर्ण ब्रह्मांड को अपने भ्रू संकेत पर नचाती है !

जिसकी माया से कोई भी नहीं बच सकता !

जिसका अंश इस संपूर्ण सृष्टि में सौंदर्य के रूप में

बिखरा हुआ है

जिसके होने से इस प्रकृति में सौंदर्य है.....

जिसके होने से प्रकृति में गतिशीलता है

वही माया !

वही महामाया !!

साक्षात् !

हमारे सामने !

उस अद्भुत कमल आसन पर विराजमान थी ।

उनके मुख मंडल से सैकड़ों सूर्यों के समान तेज बिखर
रहा था !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे अनेक प्रकार की रश्मियां

उस अद्भुत मुखारविंद से बिखर रही हों !

उनका संपूर्ण शरीर दिव्य आभा से जगमगा रहा था !

हम मंत्रमुग्ध से खड़े !

उस दृश्य को देखते !!

सम्मोहित खड़े रहे !!!

कुछ क्षणों का यह दर्शन जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य
था !

उसके बाद अचानक जैसे किसी सुंदर फिल्म का
पटाक्षेप हो गया हो....

हम एक झटके से वापस आश्रम के उसी कक्ष में आ
गए !

गुरुदेव हमारे साथ थे !

उन्होंने हम दोनों के सिर पर हाथ फेरा और आशीर्वाद
देकर लुप्त हो गए

अगले दिन सुबह गुरुदेव चंड भैरव ने हमें अपने पास
बुलाया और कहा - तुम्हारा यहां आने का जो उद्देश्य था
वह संपूर्ण हो चुका है । भगवती त्रिपुर सुंदरी की कृपा
तुम प्राप्त कर चुके हो । अब आगे का मार्ग वही तुमको
दिखाएगी । मैं तुम्हें वापस तुम्हारे स्थान पर पहुंचा रहा
है ।

इतना कह कर उन्होंने कमर में टंगी थैली में हाथ डाला और उसमे से निकाल कर हम दोनों को एक-एक गौरीशंकर रुद्राक्ष की माला प्रदान की और आंख बंद करके बैठने के लिए कहा ।

हम दोनों ने उन को साष्टांग दंडवत प्रणाम किया और उनके सामने आंख बंद करके बैठ गए ।

उनका एक एक हाथ हम दोनों के सिर पर था । जैसे ही उन्होंने हमारे भ्रूमध्य को स्पर्श किया, एक स्पंदन जैसा महसूस हुआ और फिर हम शून्य में उठते चले गए । लगभग एक दो मिनट तक वैसी स्थिति रही होगी । उसके बाद ऐसा लगा जैसे हम कहीं जाकर उतर गए हैं । कुछ क्षणों मे जब आंखें खुली तो हम गुरु माता के झोपड़ी के पास मौजूद थे । जिस शिलाखंड पर उतरे उसी में सामने बैठी हुई थी

गुरु माता !

मंद मंद मुस्कुराती हुई !

उन्होंने हम दोनों को गले लगा लिया और आशीर्वाद दिया

वहां से विदा लेने का भी समय हो चुका था !

अगले दिन मैं और माधुरी उसकी बुलेट पर फिर से निकल पड़े अगली यात्रा के लिए ।

उसकी बुलेट चालू होते ही फिर हवा में उड़ने लगी और लगभग साढ़े तीन सौ किलोमीटर का सफर तय करके 4 घंटे में माधुरी ने मुझे अपने घर पर छोड़ दिया
उसके अनजान सफर पर वह आगे बढ़ गई

..... समाप्त

प्रिय पाठकों और पाठिकाओं,
ध्यानलिंगम का प्रकरण यहां पर विराम दे रहा हूं ।
भगवती का बिंब चित्रण जब भी आता है.....
तो शब्द साथ नहीं देते हैं
क्योंकि.....
वे तो वर्णन से परे है.....
व्याख्या से परे हैं.....
उनका चित्रण करना मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति के लिए
संभव ही नहीं है ।
फिर भी
जैसा बन पड़ा वैसा चित्रण करने का प्रयास किया है ।
कोई न्यूनता रह गई हो यह अवश्यंभावी है.....
महामाया से प्रार्थना है कि वह इसके लिए बालक
समझकर मुझे क्षमा करेंगी ।

सस्नेह आपका

अनिल शेखर

anilshekhar.amas@gmail.com